www.newsparivahan.com

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

परिवहन विशेष

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

वर्ष 03, अंक 225, नई दिल्ली, गुरुवार 23 अक्टूबर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

03 "अंबेडकर या बी.एन. राव? संविधान की सच्ची कथा"

06 सिंधु घाटी से आधुनिक समय तक पंजाब की यात्रा

08 बिहार का चुनाव असमंजस का दौर

एक विनम्र निवेदन

संजय बाटला

दीपावली पर लगभग हर घर में श्री गणेश और लक्ष्मी जी की नई मूर्तियों की पूजा होगी.. लेकिन, पुरानी मूर्ति का क्या होगा..?

कुछ लोग शायद इसे प्रवाहित कर देंगे और कुछ लोग.. पेड़ के नीचे रख देंगे..??

जिन लोगों ने इन मूर्तियो की साल भर पूजा की..अपने लिए बहुत कुछ माँगा भी होगा अब उन्हें ऐसे ही किसी पेड़ के नीचे रख देंगे .(यह उसी तरह होगा जैसे माँ-बाप जब बुड्ढे हो जाते हैं तब उन्हें आश्रम भेज दिया जाए) ऐसा न करें।

ऐसा कदापि न करें ।बल्कि एक बाल्टी या टब में पानी लेकर थोड़ा गंगाजल डाल कर मूर्ति को उसमें रख दें।

एक-दो दिन में मूर्ति स्वतः उस में घुल जायेगी। मूर्ति घुले जल को किसी गमले या पेड़ की जड़ में डाल सकते हैं।

आपका यह प्रयास मूर्ति का सम्मानजनक विसर्जन तो होगा ही..नदियों को स्वच्छ रखने को उठाया गया सार्थक पहला कदम भी होगा..!

लोग हमारे धर्म का मजाक भी नही बनायेगे आपने देखा होगा अन्य धर्म के लोग हम हिंदुओ के देवी देवताओं की यहाँ वहाँ मूर्तियों पड़ी होने पर फब्तियां कसते है।

उम्मीद है आप लोग इस तरह का कार्य न खुद करेंगे और दुसरो को भी ऐसा करने से रोकेंगे।

सहयोग की अपेक्षा के साथ

त्योहारों में सड़क पर भीड़ से कैसे बचें! हमारा योगदान क्या हो सकता है?

चंद्र मोहन

त्योहारों के दौरान सड़कों पर भीड़ से बचने के लिए, ज़रूरी होने पर ही घर से बाहर निकलें, ऑफ-पीक आवर्स में यात्रा करें, और सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करें.भीड़ भरे इलाकों में, शांत रहें, निकासी के रास्ते ढूंढें, और अपनी और अपने परिवार की सुरक्षा का ध्यान रखें.

यात्रा की योजना बनाना और समय का चुनाव

ऑफ-पीक घंटों में यात्रा करें: सुबह जल्दी या देर रात में यात्रा करने की कोशिश करें जब भीड़ कम हो.

सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करें: यदि संभव हो तो अपनी कार के बजाय टैक्सी, बस या मेट्रो जैसे सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करें.अगर आपको फिर भी जाना है, तो सुनिश्चित करें कि आपके पास अपनी कार की पार्किंग पहले से हो.

घर से पहले ही बाहर निकलें: यदि आप किसी कार्यक्रम के लिए जा रहे हैं, तो सामान्य समय से पहले घर से निकलें ताकि आप अंतिम क्षणों की भीड़ से बच सकें.

भीड़-भाड़ वाले इलाकों में सुरक्षा

शांत रहें और घबराएं नहीं: घबराहट से भीड़ का दबाव बढ़ सकता है. शांत रहने की कोशिश करें और अपनी सुरक्षा के बारे में सोचें.

भीड़ के साथ चलें: भीड़ के विपरीत दिशा में जाने से बचें, बल्कि प्रवाह के साथ चलें.

एक सुरक्षित दूरी बनाए रखें: जितना हो सके अपने आस-पास थोड़ी जगह बनाकर रखें, और अपने शरीर के सामने एक सुरक्षात्मक स्थिति बनाएं.

निकासी के रास्ते खोजें: प्रवेश और निकास द्वारों पर नज़र रखें. यदि आप किसी भवन में हैं, तो निकास के सभी रास्तों पर ध्यान दें.

अपने बच्चों को सुरक्षित रखें: बच्चों को अपने करीब रखें और यदि संभव हो तो उन्हें अपने बाएं हाथ की ओर रखें.

किसी भी प्रकार के लावारिस सामान को न छुएं: यदि आपको कोई संदिग्ध वस्तु दिखे, तो तुरंत पुलिस या सुरक्षाकर्मी को सूचित करें.

अन्य महत्वपूर्ण सुझाव

कम से कम सामान ले जाएं: त्योहारों के दौरान भीड़भाड़ वाली जगहों पर जितना हो सके कम सामान लेकर जाएं.

एक मुलाकात का स्थान तय करें: यदि आप समूह में हैं, तो पहले से एक जगह तय कर लें जहाँ

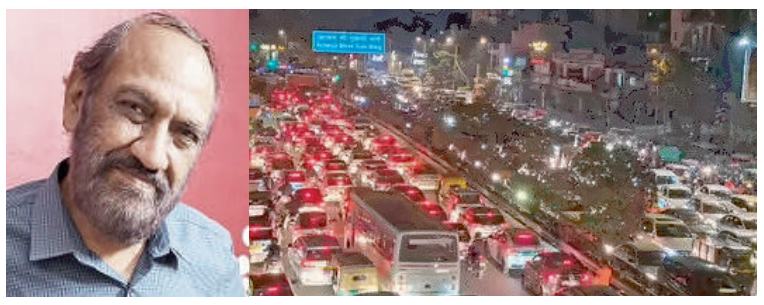

आप बाद में मिल सकते हैं. यदि आप अलग हो जाते हैं, तो उस स्थान पर जाएं.

अपने फ़ोन को चार्ज रखें: सुनिश्चित करें कि आपका मोबाइल पूरी तरह से चार्ज है, क्योंकि त्योहारों के दौरान नेटवर्क जाम हो सकता है.

खुद को हाइड्रेटेड रखें: भीड़ में रहने पर शरीर में पानी की कमी हो सकती है, इसलिए अपने साथ पानी की बोतल रखें.

त्योहारों पर भीड़ और जाम इसलिए होता है क्योंकि लोग खरीदारी और मेलजोल के लिए एक साथ बड़ी संख्या में बाहर निकलते हैं, खासकर तंग बाजारों में.इससे निपटने के लिए, सरकार और नागरिक मिलकर काम कर सकते हैं, जैसे कि बाजारों में वाहनों की आवाजाही को नियंत्रित करना, स्ट्रीट वेंडरों के लिए वैकल्पिक स्थानों की व्यवस्था करना और भीड़ वाले इलाकों में लोगों की आवाजाही के लिए विशेष मार्ग बनाना.

त्योहारों पर भीड़ के कारण

खरीदारी - त्योहारों पर लोग नए कपड़े, उपहार और अन्य सामान खरीदने के लिए बाजारों में भारी संख्या में जाते हैं.

मेलजोल: लोग अपने परिवार और दोस्तों के साथ मिलकर खुशी मनाते हैं, जिससे सामाजिक मेलजोल और सार्वजनिक स्थानों पर भीड़ बढ़ जाती है.

सड़क पर वाहनों की संख्या- त्योहारी सीजन के दौरान, लोगों की आवाजाही बढ़ने से सड़कों पर वाहनों की संख्या बढ़ जाती है, जो जाम का मुख्य कारण बनती है.

जाम से छुटकारा पाने के तरीके

वाहनों पर प्रतिबंध: तंग बाजारों में, त्योहारों के दौरान बड़े और चारपहिया वाहनों के प्रवेश पर रोक लगा सकते हैं.

सार्वजनिक परिवहन का उपयोग- त्योहारों पर लोग सार्वजनिक परिवहन का उपयोग कर सकते हैं ताकि सड़कों पर वाहनों की संख्या कम हो सके.

विकल्प प्रदान करना - स्ट्रीट वेंडरों के लिए वैकल्पिक स्थानों की व्यवस्था करने से भी भीड़ कम की जा सकती है.

भीड़ प्रबंधन - भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों में पुलिस या स्वयंसेवकों की मदद से भीड़ को नियंत्रित किया जा सकता है और लोगों को सुरक्षित तरीके से निकलने के लिए रास्तों की व्यवस्था की जा सकती है.

व्यापारियों के साथ सहयोग - दुकानदार अपने स्टॉल और बाजार के घंटों का प्रबंधन कर सकते हैं ताकि भीड़ को संभाला जा सके.

त्यौहार और भीड़ पर्यायवाची नहीं हैं; त्यौहार एक उत्सव या कार्यक्रम है, जबकि भीड़ बहुत सारे लोगों का एक समूह है. त्यौहारों के कारण भीड़ हो सकती है, लेकिन हर भीड़ त्यौहार नहीं होती और हर त्यौहार में भीड़ हो, यह ज़रूरी नहीं है.

त्यौहार

यह एक सामाजिक, धार्मिक या सांस्कृतिक कार्यक्रम है जो उत्साह और उल्लास के साथ मनाया जाता है.

यह एक विशेष आयोजन या दिन होता है, जैसे दीवाली, होली या ईद.

इसका उद्देश्य खुशी और समुदाय की भावना को व्यक्त करना है.

भीड़

यह बहुत से लोगों के एक साथ इकट्ठा होने को कहते हैं.

भीड़ किसी भी कारण से हो सकती है, जैसे कि किसी घटना को देखना या कहीं जाना.

यह अक्सर एक सामान्य शब्द है जिसका उपयोग बहुत से लोगों को संदर्भित करने के लिए किया जाता है.

भीड़ से बचने में हमारा योगदान संयम बनाए रखना और अपने आस-पास के माहौल के प्रति सचेत रहना है, जैसे कि घबराहट से बचें, शांत रहें, और अगर आप फंस जाते हैं तो बॉक्सर की तरह अपनी बाहों को सीने के पास रखकर सांस लेने के लिए जगह बनाएं. अगर आप गिर जाते हैं, तो करवट लें, सिर को हाथों से ढकें, और सुरक्षित होने पर धीरे-धीरे किनारे की ओर बढ़ें। इसके अतिरिक्त, भीड़भाड़ वाले आयोजनों में बुजुर्गों और बच्चों को ले जाने से बचें, क्योंकि वे सबसे ज़्यादा असुरक्षित होते हैं.

व्यक्तिगत योगदान -

शांत और संयम रहें: घबराहट स्थिति को और खराब कर सकती है, इसलिए शांत रहना सबसे महत्वपूर्ण है.

अकेले न भागें: जब भीड़ आगे बढ़ रही हो, तो उसके साथ चलें और विपरीत दिशा में भागने की कोशिश न करें.

सुरक्षित स्थान खोजें: किसी दीवार या खंभे के पास खड़े होने की कोशिश करें ताकि आप भीड़ के मुख्य प्रवाह से थोड़ा हटकर रहें.

सांस लेने के लिए जगह बनाएं - अगर भीड़ बढ़ जाती है, तो अपनी बाहों को बॉक्सर की तरह सीने के सामने मोड़कर रखें. इससे पसलियों और फेफड़ों को फैलने के लिए जगह मिलेगी.

गिरने पर: अगर आप गिर जाते हैं, तो करवट लेकर लेट जाएं, अपने सिर और गले को हाथों से ढक लें, और घुटनों को मोड़कर सिकुड़ जाएं। इससे आपके शरीर के संवेदनशील हिस्से सुरक्षित रहेंगे.

बच्चों और बुजुर्गों का ध्यान रखें - यदि आप उनके साथ हैं, तो उनका हाथ पकड़ें और सुरक्षा का ध्यान रखें.

संयम से आगे बढ़ें: भीड़ में आगे या पीछे धक्का देने से बचें। धीरे-धीरे और सावधानी से आगे बढ़ें.

सामूहिक योगदान-

अपने आस-पास का ध्यान रखें- भीड़ के घनत्व को समझें. यदि आप अपने हाथों को आसानी से नहीं हिला पा रहे हैं, तो खतरा गंभीर हो गया है और तुरंत सुरक्षित स्थान की ओर बढ़ें.

एक सुरक्षित स्थान पर पहुंचें - हो सके तो किसी दीवार, खंभे या बाड़ के पास खड़े हों ताकि आप भीड़ की सीधी चपेट में न आएं.

घबराएं नहीं: दूसरों के घबराने पर आप भी घबरा सकते हैं.अपनी स्थिति पर नियंत्रण रखें और शांत रहने की कोशिश करें।

भाई दूज का पर्व आज

भाई दूज का पर्व हिंदू धर्म में भाई-बहन के पवित्र संबंध का प्रतीक माना जाता है। यह पर्व हर साल कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि को मनाया जाता है। यानी दीपावली के तीसरे दिन बहनें अपने भाइयों का तिलक करती हैं और उन्हें भोजन कराती हैं। ऐसा करने से भाई की आयु बढ़ती है और उनके जीवन में समृद्धि आती है। मान्यता है कि इस दिन अगर भाई और बहन यमुना नदी में एक साथ स्नान करें तो उनके जीवन से अकाल मृत्यु का भय समाप्त हो जाता है।

भाई दूज कब है?

==========

हिंदू पंचांग के अनुसार, इस साल द्वितीया तिथि की शुरुआत 22 अक्टूबर 2025, को रात 08 बजकर 16 मिनट पर होगी। इसके साथ ही इसका समापन 23 अक्टूबर 2025, को रात 10 बजकर 46 मिनट पर होगा। ऐसे में 23 अक्टूबर को भाई दूज का पर्व मनाया जाएगा। वहीं, इस दिन तिलक करने का शुभ मुहूर्त दोपहर 01 बजकर 13 मिनट से 03 बजकर 28 मिनट तक रहेगा। इस दौरान बहनें अपने भाई का तिलक कर सकती हैं।

भाई दूज का शुभ मुहूर्त

==========

शास्त्रो में बताया गया है कि भाई दूज पर शुभ चौघड़िया में दोपहर में मानाना शुभ होता है। ऐसे में दोपहर 12 बजकर 5 मिनट से 2 बजकर 54 मिनट तक का समय भाई दूज मनाने के लिए सर्वोत्तम रहेगा। इस समय 12 बजकर 05 से 1 बजकर 30 मिनट तक शुभ चौघड़िया रहेगा। जबकि 1 बजकर 30 मिनट से 2 बजकर 54 मिनट तक अमृत चौघड़िया होगा। ऐसे में अमृत चौघड़िया में भाईदूज मनाना और बहन के हाथो से अन्न जल लेना भाई बहन के रिश्तो को और बेहतर करेगा साथ ही मान्यताओं के अनुसार अकाल मृत्यु के भय को टालने वाला भी होगा।

भाई दूज की पौराणिक कथा

==========

ऐसी मान्यता है कि इस दिन यमराज अपनी बहन यमुना के घर गए थे। देवी यमुना ने उनका खूब अच्छे से आदर-सत्कार किया, उन्हें स्वादिष्ट भोजन कराया और उनके माथे पर तिलक लगाया। इससे प्रसन्न होकर यमराज ने उन्हें यह वरदान दिया कि जो भाई आज के दिन अपनी बहन के घर जाकर तिलक करवाएगा, उसे अकाल मृत्यु का भय नहीं रहेगा और वह दीर्घायु प्राप्त करेगा। इसी वजह से इस पर्व को यम द्वितीया भी कहा जाता है।

इस दिन बहनें अपने भाई की लंबी उम्र, सुख-समृद्धि के लिए व्रत रखती हैं और तिलक लगाती हैं। वहीं, भाई भी बहन को उपहार देते हैं और उनकी सदैव रक्षा का वचन देते हैं।

तिलक करने की सरल विधि

==========

शुभ मुहूर्त में चावल के आटे से एक चौक बनाएं।

भाई को इस चौकी पर पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके बिठाएं।

भाई के माथे पर रोली या चंदन का तिलक करें और अक्षत लगाएं।

भाई के हाथ में कलावा बांधें और उन्हें मिठाई खिलाएं।

इसके बाद घी का दीपक जलाकर भाई की आरती करें और उनकी लंबी उम्र की कामना करें।

अंत में भाई, बहन के पैर छूकर आशीर्वाद लें और उन्हें उपहार दें।

भाई दूज का महत्व

==========

भाई दूज का त्योहार भाई-बहन के गहरे स्नेह का प्रतीक है। इस दिन बहनें सुबह स्नान कर, पूजा करती हैं, कथा सुनती हैं और अपने भाई को तिलक लगाकर उनकी दीर्घायु और सुख-समृद्धि की कामना करती हैं। बदले में भाई अपनी बहनों को उपहार देते हैं और उनकी सुरक्षा का वचन लेते हैं।

भाई को टीका करते समय करें इस मंत्र का उच्चारण

==========

'गंगा पूजा यमुना को, यमी पूजे यमराज को। सुभद्रा पूजे कृष्ण को गंगा यमुना नीर बहे मेरे भाई आप बढ़ें फूले फलें।'

बदलते समय में भाई दूज: प्रेम और अपनापन कैसे बना रहे

> "त्योहार अब सिर्फ़ रस्म नहीं, रिश्तों की परीक्षा बनते जा रहे हैं — सवाल यह है कि क्या हमारे दिलों में अब भी वही स्नेह बचा है?"

भाई दूज सिर्फ़ तिलक और मिठाई का त्योहार नहीं, बल्कि रिश्तों की वह डोर है जो समय की रफ़्तार में भी स्नेह का रंग बनाए रखती है। पर बदलते दौर में जहाँ मुलाकातें वीडियो कॉल पर सिमट गई हैं और तिलक डिजिटल इमोजी बन गया है, वहाँ यह सवाल उठता है — क्या रिश्तों की गर्माहट अब भी वैसी ही है? भाई दूज हमें याद दिलाता है कि प्रेम केवल परंपरा नहीं, आत्मीयता का अभ्यास है। यह त्योहार हमें अपने व्यस्त जीवन में अपनापन लौटाने का अवसर देता है।

डॉ. प्रियंका सौरभ

दीवाली के बाद का शांत उजाला जब धीरे-धीरे घरों में उतरता है, तब आती है भाई दूज की सुबह — मिठास और ममता से भरी। बहनें अपने भाइयों के माथे पर तिलक लगाती हैं, आरती करती हैं और मन ही मन यह कामना करती हैं कि उनका भाई सदा सुखी रहे। बदले में भाई बहन को उपहार देता है और यह वादा कि जीवनभर उसका साथ निभाएगा। यह दृश्य जितना सरल लगता है, उतना ही गहरा भी है। क्योंकि यह सिर्फ एक तिलक नहीं, रिश्तों में भरोसे, सुरक्षा और प्रेम की लकीर खींचने का संस्कार है।

लेकिन आज जब समय बदल रहा है, रिश्तों की परिभाषाएँ बदल रही हैं, तब यह सवाल उठता है कि क्या भाई दूज का वही अपनापन और स्नेह अब भी पहले जैसा है? क्या भाई-बहन का रिश्ता अब भी उतना ही सहज, निर्भीक और भावनाओं से भरा है, जैसा कभी गाँव की मिट्टी और आँगन की धूप में होता था?

कभी भाई दूज सिर्फ एक त्योहार नहीं, बल्कि जीवन का उत्सव हुआ करता था। बहनें सवेरे से तैयार होकर भाई की प्रतीक्षा करती थीं, घरों में पकवानों की खुशबू फैल जाती थी। भाई दूर-दूर से बहन के घर पहुँचते थे, क्योंकि यह दिन मिलन का होता था। न कोई दिखावा, न औपचारिकता—बस भावनाओं का सच्चा प्रवाह। उस समय रिश्तों में दूरी नहीं, दिलों की गर्माहट थी।

आज भी भाई दूज मनाया जाता है, पर उसकी आत्मा कहीं धुंधली पड़ने लगी है। अब भाई दूज का तिलक कई बार व्हाट्सएप पर भेजे गए इमोजी से लग जाता है, राखी और तिलक दोनों ऑनलाइन ग्रीटिंग्स में सिमट गए हैं। "भाई दूज मुबारक" का संदेश सोशल मीडिया पर चमकता है, पर उसके पीछे की नज़रों में अब वो अपनापन नहीं दिखता जो किसी बहन की आँखों में तब झलकता था जब वह अपने भाई का चेहरा देखती थी।

यह बदलाव केवल तकनीक का नहीं, संवेदना का भी है। समय ने हमें जोड़ा जरूर है, पर जोड़े हुए रिश्ते अब दिलों से ज़्यादा डिवाइसों में रहने लगे हैं। भाई दूज जैसे पर्व जो निकटता, स्नेह और संवाद के प्रतीक थे, अब "स्टेटस अपडेट" बनते जा रहे हैं। इस बदलाव की जड़ें आधुनिक जीवन की भागदौड़, व्यावसायिकता और आत्मकेंद्रित सोच में हैं, जिसने हमें अपनों से दूर कर दिया है।

भाई दूज का पर्व केवल बहन की पूजा नहीं, बल्कि उस भावनात्मक संतुलन का प्रतीक भी है, जिसमें भाई सुरक्षा देता है और बहन संवेदना। दोनों एक-दूसरे की जरूरत बनकर रिश्तों के समाज का ढांचा खड़ा करते हैं। लेकिन आज की पीढ़ी में यह रिश्ता धीरे-धीरे औपचारिक होता जा रहा है। शहरों में बढ़ती व्यस्तता, प्रवास, और आत्मनिर्भर जीवनशैली ने भाई-बहन के रिश्तों को एक 'मौके की मुलाकात' बना दिया है।

जहाँ पहले भाई अपनी बहन के घर जाकर दिन भर का समय उसके परिवार के साथ बिताता था, अब वह मुलाकात कुछ मिनटों या वीडियो कॉल तक सीमित रह जाती है। बहनें भी अब आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हैं, भावनात्मक रूप से मज़बूत हैं, और जीवन के हर फैसले खुद लेती हैं। यह बदलाव सकारात्मक भी है, क्योंकि अब बहनें "सुरक्षा की मोहताज" नहीं, बल्कि बराबरी के आत्मसम्मान की प्रतीक हैं। मगर इस बराबरी के दौर में भी रिश्तों की गर्माहट बनी रहना जरूरी है।

त्योहारों का उद्देश्य ही यही होता है—रिश्तों को दोबारा गढ़ना, दूरी मिटाना। भाई दूज हमें हर साल यह याद दिलाती है कि रिश्तों का पोषण केवल खून से नहीं, व्यवहार से होता है। लेकिन आधुनिकता की रफ्तार ने हमें इतना व्यस्त कर दिया है कि हम भावनाओं को भी समय-सारिणी में बाँधने लगे हैं। कभी-कभी लगता है कि रिश्ते अब कैलेंडर पर टिके कुछ त्योहारी दिनों के मेहमान बन गए हैं।

आज की बहनें केवल उपहार नहीं, भावनात्मक साझेदारी चाहती हैं। उन्हें यह नहीं चाहिए कि भाई बस त्यौहार पर पैसे या गिफ्ट दे दे; वे चाहती हैं कि भाई उन्हें समझे, उनका सम्मान करे, उनके निर्णयों में साथ खड़ा रहे। और भाई भी चाहते हैं कि बहन सिर्फ स्नेह की मूर्ति नहीं, बल्कि सहयोग और संवेदना की साझेदार बने। यही रिश्ते का नया रूप है—बराबरी और आत्मीयता का संतुलन।

भाई दूज अब केवल बहन की सुरक्षा का प्रतीक नहीं, बल्कि आपसी सम्मान और संवाद का भी प्रतीक बनना चाहिए। यह पर्व हमें याद दिलाता है कि भाई-बहन का रिश्ता सिर्फ बचपन का नहीं होता, वह उम्रभर का साथ है। भले जीवन के रास्ते अलग हों, पर दिलों के रास्ते जुड़े रहने चाहिए।

आज का समाज रिश्तों को "प्रोडक्टिविटी" और "प्रोफेशनलिज़्म" की कसौटी पर तौलने लगा है। हम दोस्ती में भी फायदे ढूँढ़ते हैं, तो पारिवारिक रिश्ते भी कभी-कभी बोझ लगने लगते हैं। भाई दूज ऐसे ही समय में हमें झकझोरती है—कि प्रेम का कोई विकल्प नहीं होता। तकनीक रिश्ते बना सकती है, पर आत्मीयता केवल स्पर्श, मुस्कान और अपनापन से आती है।

यह सही है कि समय बदल रहा है और रिश्तों की शैली भी बदलनी चाहिए। लेकिन हर बदलाव में भावनाओं का बीज बचा रहना जरूरी है। भाई दूज के पर्व को नया अर्थ देना होगा—जहाँ भाई और बहन दोनों एक-दूसरे की भावनाओं, संघर्षों और स्वतंत्रता का सम्मान करें। त्योहार तभी जीवित रहते हैं जब वे समय के साथ अपनी आत्मा को बचाए रखते हैं।

आज की बहनें अपने भाइयों से केवल सुरक्षा नहीं, बल्कि समानता चाहती हैं; और भाई भी यह समझने लगे हैं कि बहन की स्वतंत्रता उसकी शक्ति है, विद्रोह नहीं। यह समझदारी इस रिश्ते को और गहरा बना सकती है। भाई दूज अब उस सामाजिक ढांचे का प्रतीक बन सकता है जहाँ पुरुष और स्त्री के बीच सहयोग और संवेदना का रिश्ता हो, न कि संरक्षण और निर्भरता का।

कभी-कभी लगता है कि त्योहारों की भी अपनी भाषा होती है, जो हमें वह सब याद दिलाती है जिसे हम रोज़मर्रा की ज़िंदगी में भूल जाते हैं। भाई दूज की भाषा है—स्मृति और स्नेह की। यह पर्व हमें उस समय में ले जाता है जब हम बिना कारण किसी की परवाह करते थे, जब रिश्ते लेन-देन नहीं, जीवन का आधार थे। इस पर्व के बहाने हमें अपने भीतर झाँकना चाहिए—क्या हम अब भी उतने ही आत्मीय हैं जितने बचपन में थे?

भाई दूज: प्यार, सुरक्षा और विश्वास की धारा

दीपावली की चकाचौंध अभी मन में ताज़ा है, मिठाइयों की मिठास होठों पर बसी है, और घरों में खुशियों की गूँज अब भी गुनगुना रही है। इसी रंग-बिरंगे माहौल में आता है भाई-बहन के अटूट प्रेम का पर्व — भाई दूज। यह महज़ एक त्योहार नहीं, बल्कि वह पवित्र बंधन है, जो बचपन की शरारतों, छोटी-मोटी नोकझोंक और प्यार भरी तकरार को एक गहरे विश्वास और स्नेह के रिश्ते में पिरो देता है। यह वह पल है जब बहन अपने भाई के माथे पर तिलक लगाती है, उसकी लंबी उम्र और समृद्धि की कामना करती है, और भाई अपनी बहन की रक्षा का वचन देता है। यह क्षण केवल रस्म नहीं, बल्कि दिलों को जोड़ने वाली एक अनमोल यात्रा है, जो रिश्तों की नींव को और भी अटल बनाती है।

हिंदू पंचांग के अनुसार, कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि को मनाया जाने वाला यह पर्व दीपावली के दो दिन बाद आता है। यह वह समय है जब परिवार फिर से एक छत के नीचे इकट्ठा होता है, और भाई-बहन का रिश्ता प्रेम, विश्वास और समर्पण के धागों से और मज़बूत होता है। पौराणिक कथाएँ इस दिन को और भी रंगीन बनाती हैं। एक कथा के अनुसार, यमराज अपनी बहन यमुनाजी के बुलावे पर उनके घर गए। यमुनाजी ने उनका तिलक कर, स्वादिष्ट भोजन से स्वागत किया। प्रसन्न होकर यमराज ने वरदान दिया कि जो भाई इस दिन अपनी बहन से तिलक करवाएगा, उसे दीर्घायु और सुख-समृद्धि प्राप्त होगी। एक अन्य कथा में भगवान श्रीकृष्ण और उनकी बहन सुभद्रा का ज़िक्र है, जहाँ नरकासुर वध के बाद श्रीकृष्ण ने सुभद्रा से तिलक करवाया। ये कथाएँ बताती हैं कि भाई-बहन का रिश्ता केवल रक्त का नहीं, बल्कि स्नेह, सम्मान और ज़िम्मेदारी का एक अनमोल गठबंधन है।

भाई दूज की खूबसूरती उसकी सादगी और भावनात्मक गहराई में छिपी है। सुबह-सुबह बहनें स्नान कर, पूजा की थाली सजाती हैं, जिसमें रोली, चंदन, अक्षत, फूल और मिठाइयाँ होती हैं। इस थाली के साथ वे भगवान गणेश और अन्य देवताओं की पूजा करती हैं, फिर भाई के माथे पर तिलक लगाकर उसकी लंबी उम्र और खुशहाली की प्रार्थना करती हैं। बदले में, भाई अपनी बहन को उपहार देता है — कभी मिठाई, कभी कपड़े, तो कभी उसकी पसंद की कोई खास चीज़। यह आदान-प्रदान केवल भौतिक वस्तुओं का नहीं, बल्कि भावनाओं का एक हृदयस्पर्शी लेन-देन है। कई घरों में बहनें अपने भाई के लिए विशेष व्यंजन बनाती हैं, जैसे पूरन पोली, खीर या हलवा, जो प्यार का स्वाद लिए होते हैं। कुछ समुदायों में बहनें उपवास भी रखती हैं, जो उनके समर्पण को और गहरा करता है। यह सब केवल रस्में नहीं, बल्कि उस अनमोल प्रेम का प्रतीक हैं, जो भाई-बहन के बीच जीवन भर साथ चलता है।

भाई दूज का पर्व, नाम और रीति-रिवाजों में भले ही क्षेत्रों के साथ बदल जाए, मगर इसका हृदयस्पर्शी भाव हर जगह एक-सा है। उत्तर भारत में इसे 'भैया दूज', महाराष्ट्र और गोवा में 'भाऊ बीज', तो बंगाल में 'भाई फोटा' कहते हैं। हर नाम के पीछे वही अनमोल प्रेम छिपा है, जो भाई-बहन के रिश्ते को अनूठा बनाता है। यह रिश्ता बचपन की शरारतों, एक-दूसरे की टांग खींचने की मस्ती और ज़रूरत पड़ने पर ढाल बनकर खड़े होने का अनमोल मिश्रण है। यह बंधन समय और दूरी की हर दीवार को पार कर, प्रेम और विश्वास के रंगों से चमकता है।

भाई दूज का महत्व केवल धार्मिक या परंपरागत नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक भी है। यह पर्व हमें परिवार की नींव और रिश्तों की गर्माहट का एहसास कराता है। आज की भागदौड़ भरी ज़िंदगी में, जहाँ रिश्तों के लिए समय निकालना चुनौती बन गया है, भाई दूज हमें ठहरकर अपनों के साथ बिताए पलों की कीमत समझाता है। यह बच्चों को परिवार के मूल्यों और ज़िम्मेदारियों का पाठ पढ़ाता है, और बड़ों को रिश्तों की मज़बूती को संजोने की प्रेरणा देता है। यह पर्व बताता है कि भाई-बहन का रिश्ता महज़ तिलक या उपहारों का आदान-प्रदान नहीं, बल्कि एक-दूसरे के प्रति अटूट समर्थन और विश्वास का प्रतीक है।

आधुनिक युग में भाई दूज ने समय के साथ कदम मिलाए हैं, मगर इसकी आत्मा वही है। अब बहनें भाइयों को डिजिटल गिफ्ट कार्ड्स, गैजेट्स या ट्रेंडी उपहार देती हैं, और भाई भी अपनी बहन की पसंद को ध्यान में रखकर कुछ खास चुनते हैं। सोशल मीडिया और वीडियो कॉल ने उन भाई-बहनों को भी जोड़ा है, जो दूरी के कारण इस दिन साथ नहीं हो पाते। यह बदलाव दर्शाता है कि भाई दूज आधुनिकता के रंग में ढलकर भी अपने मूल भाव को थामे हुए है। चाहे उपहार पारंपरिक हों या आधुनिक, इस पर्व का संदेश वही है — भाई-बहन का प्रेम अटूट और अनमोल है।

भाई दूज केवल घर की चारदीवारी तक सीमित नहीं, बल्कि यह समाज में प्रेम और एकता का पैगाम भी फैलाता है। कई जगहों पर इस दिन सामुदायिक आयोजन और मेले लगते हैं, जो मनोरंजन के साथ-साथ समाज में सौहार्द और भाईचारे की भावना को बल देते हैं। यह पर्व बच्चों को उनकी ज़िम्मेदारियों का बोध कराता है और बड़ों को परिवार के मूल्यों को जीने की प्रेरणा देता है। यह हमें सिखाता है कि जीवन की असली ताकत हमारे रिश्तों में बसती है, और परिवार वह आश्रय है, जो हर तूफान में हमें संबल देता है।

भाई दूज का हर पल प्रेम और विश्वास का गहरा सबक देता है। यह वह दिन है जब बहन अपने भाई के लिए दुआएँ माँगती है, और भाई अपनी बहन की खुशी और सुरक्षा का वचन देता है। इस दिन बचपन की यादें, साझा किए हुए लम्हे, और एक-दूसरे के लिए किए गए छोटे-बड़े त्याग फिर से जीवंत हो उठते हैं। यह पर्व हमें याद दिलाता है कि जीवन की असली खूबसूरती रिश्तों की मिठास और अपनों के साथ में है।

इस भाई दूज, हर बहन अपने भाई के माथे पर तिलक लगाकर उसकी लंबी उम्र और सुख की कामना करे, और हर भाई अपनी बहन के लिए अटल सहारा बने। यह दिन हमें रिश्तों को संजोने, प्यार को ज़ाहिर करने और परिवार की गर्माहट को गले लगाने का मौका देता है। भाई दूज को सिर्फ़ एक त्योहार नहीं, बल्कि एक ऐसे अवसर के रूप में मनाएँ, जो हमें हमारे रिश्तों की गहराई और परिवार की ताकत का एहसास कराता है। यह स्नेह, यह विश्वास, यह बंधन हमेशा हमारे दिलों में जिंदा रहे, और हमारे जीवन को प्रेम और एकता के रंगों से सराबोर कर दे।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी

हार,विश्वास व अभिमान

हार से हार ना मानने वालों से, हार भी एक दिन हार मान लेती है। सौभाग्य से जो प्राप्त होता हैं उसे सात पीढ़ी भोगती हैं।और जो छीन कर प्राप्त किया जाता हैं उसे सात पीढ़ी भुगतती हैं। शतरंज की चालों का भय उन्हें होता है जो राजनीति करते हैं। हम तो कर्म के खिलाड़ी हैं। न हार की चिंता न जीत का अभिमान।

एक दिन में ही बिगड़ने वाले दूध, से ही कभी नहीं बिगड़ने वाला घी मिलता है इसलिए बाधाओं से विचलित ना हों और स्वयं पर विश्वास रखें। स्वयं को स्वयं के परिश्रम से बनायें, ताकि स्वतंत्रता बनी रहे, वरना दूसरों की सहायता से बना शेर, शेर नहीं, बस एक दिखावा बनकर रह जाता है। सभी को सुख देने की क्षमता भले ही अपने हाथ में न हो लेकिन किसी को हमारे कारण से दु:ख न पहुँचे, यह तो अपने ही हाथ में हैं।

चलने वाले पैरों में कितना अन्तर है एक आगे तो एक पीछे, पर ना तो आगे वाले को अभिमान है और ना पीछे वाले को अपमान, क्योंकि उन्हें पता होता है कि पलभर में ये बदलने वाला होता है और इसी को जीवन कहते है

!!!...People Who Hide Their Feelings, Usually Care Others The Most...!!!

आत्मरक्षा में धर्मयुद्ध करना मनुष्य का परम धर्म है

सर्दी-जुकाम से लेकर पाइल्स तक शीतल चीनी है कई समस्याओं का नेचुरल इलाज, जानिए इसके जबरदस्त फायदे

शीतल चीनी एक पारंपरिक आयुर्वेदिक औषधि जो काफी लोकप्रिय हो रही है. यह न केवल मौसमी बीमारियों से राहत देती है, बल्कि शरीर को अंदर से संतुलित और मजबूत भी बनाती है. आइए जानते हैं इसके कमाल के फायदों के बारे में.

आजकल की बदलती लाइफस्टाइल और मौसम के उतार-चढ़ाव के कारण शरीर कई तरह की छोटी-बड़ी समस्याओं से जूझता है. जैसे सर्दी-जुकाम, बुखार, पाचन की गड़बड़ी, सूजन, पाइल्स और कमजोरी. इन सभी के लिए हम अक्सर दवाइयों का सहारा लेते हैं. लेकिन, आयुर्वेद में ऐसे कई प्राकृतिक उपाय हैं जो बिना किसी साइड इफेक्ट के शरीर को ठीक कर सकते हैं.

इन्हीं में से एक है शीतल चीनी एक पारंपरिक आयुर्वेदिक औषधि जो अब फिर से लोकप्रिय हो रही है. यह न केवल मौसमी बीमारियों से राहत देती है, बल्कि शरीर को अंदर से संतुलित और मजबूत भी बनाती है.

शीतल चीनी एक प्रकार की आयुर्वेदिक औषधि है जो नेचुरल मिनरल्स और शीतल तत्वों से बनी होती है. इसका स्वाद हल्का मीठा होता है और यह शरीर को ठंडक पहुंचाती है. इसे आमतौर पर पाउडर या छोटे क्रिस्टल के रूप में लिया जाता है.

शीतल चीनी के शानदार फायदे

1. सर्दी-जुकाम में राहतः- शीतल चीनी कफ दोष को संतुलित करती है, जिससे नाक बंद होना, गले में खराश और छींकें कम होती हैं. गर्म पानी या तुलसी के काढ़े में मिलाकर लेने से जल्दी आराम मिलता है

2. पाइल्स (बवासीर) में उपयोगीः- यह सूजन को कम करती है और आंतों की गर्मी को शांत करती है. पाइल्स के मरीजों को शीतल चीनी का सेवन करने से जलन और दर्द में राहत मिलती है.

3. पाचन शक्ति को बढ़ाती हैः- शीतल चीनी अग्नि तत्त्व को संतुलित करती है, जिससे खाना अच्छे से पचता है. यह गैस, एसिडिटी और कब्ज जैसी समस्याओं को दूर करती है.

4. बुखार और शरीर की सूजन में असरदारः- बदलते मौसम में होने वाले वायरल बुखार और शरीर में सूजन को कम करने में मदद करती है. यह शरीर को ठंडक देती है और इम्यून सिस्टम को मजबूत करती है.

5. त्वचा और मूत्र संबंधी समस्याओं में लाभकारीः- शीतल चीनी त्वचा की जलन, मुंहासे और मूत्र संक्रमण में राहत देती है. यह शरीर से विषैले तत्वों को बाहर निकालने में मदद करती है.

कैसे और कब लें?

1. सुबह खाली पेट गुनगुने पानी के साथ 1 चम्मच शीतल चीनी लें.

2. पाइल्स या सूजन की समस्या हो तो दोपहर के भोजन के बाद लें.

3. बच्चों को देने से पहले आयुर्वेदिक डॉक्टर से सलाह लें.

इन बातों का रखें ध्यानः

1. शीतल चीनी को अत्यधिक मात्रा में न लें, वरना शरीर में ठंडक ज्यादा हो सकती है.

2. डायबिटीज के मरीज इसे लेने से पहले डॉक्टर से सलाह लें.

शीतल चीनी एक ऐसा देसी उपाय है जो सर्दी-जुकाम से लेकर पाइल्स तक कई समस्याओं में राहत देता है. यह शरीर को संतुलित करता है, पाचन सुधारता है और रोगों से लड़ने की ताकत देता है. अगर आप दवाइयों से बचकर प्राकृतिक तरीके से स्वस्थ रहना चाहते हैं, तो शीतल चीनी को अपने रूटीन में शामिल करें.

अश्वगंधा एक चमत्कारिक दवा

अश्वगंधा चूर्ण आयुर्वेदिक औषधि है, जो आपकी सेहत के लिए बहुआयामी फायदों का खजाना है।

इसे सही तरीके से सेवन करने से न केवल आपका शारीरिक बल बढ़ेगा, बल्कि मानसिक शांति भी प्राप्त होगी। आइए विस्तार से जानें कि अश्वगंधा चूर्ण का सेवन कैसे और किन तरीकों से किया जा सकता है।

1 पानी के साथ (Water Method)

कैसे करें सेवन.....

1 चम्मच (लगभग 5 ग्राम) अश्वगंधा चूर्ण लें।

इसे गुनगुने पानी के साथ मिलाकर प्रतिदिन सुबह और रात को सेवन करें।

लाभ:.....

तनाव और चिंता से राहत मिलती है।

इम्यून सिस्टम को मजबूत करता है।

नींद की गुणवत्ता में सुधार करता है।

2 दूध के साथ (Milk Method)

कैसे करें सेवन?

एक गिलास गर्म दूध लें।

उसमें 1 चम्मच अश्वगंधा चूर्ण मिलाएं।

स्वाद के लिए थोड़ा सा शहद या गुड़ डाल सकते हैं।

लाभ:.....

यह आपकी हड्डियों को मजबूत करता है।

शरीर को ऊर्जा प्रदान करता है।

मांसपेशियों की मजबूती बढ़ती है।

विशेष टिप

सोने से पहले सेवन करें, इससे गहरी और शांत नींद आती है।

3 घी के साथ (Ghee Method)

कैसे करें सेवन.....

1/2 चम्मच अश्वगंधा चूर्ण लें।

इसे 1 चम्मच देसी घी के साथ मिलाएं और गुनगुने पानी से सेवन करें।

लाभ:.....

वजन बढ़ाने में सहायक।

पाचन तंत्र को सुधारता है।

शरीर को अंदर से पोषण देता है।

4 शहद के साथ (Honey Method)

कैसे करें सेवन.....

1/2 चम्मच अश्वगंधा चूर्ण को 1 चम्मच शहद के साथ मिलाकर सेवन करें।

लाभ:.....

गले की खराश और सर्दी-जुकाम में लाभकारी।

शरीर में स्फूर्ति और ताजगी लाता है।

रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है।

5 अश्वगंधा चाय (Ashwagandha Tea)

कैसे बनाएं?

एक कप पानी उबालें।

उसमें 1/2 चम्मच अश्वगंधा चूर्ण डालें।

थोड़ा सा अदरक और तुलसी डालकर 5 मिनट तक पकाएं।

छानकर पियें।

फायदे:.....

सर्दी-जुकाम में राहत।

तनावमुक्त दिमाग के लिए उत्तम।

ऊर्जा बढ़ाने के लिए दिन की शुरुआत में लें।

6 व्यंजन या स्मूदी में मिलाकर (Food Method)

कैसे करें सेवन?

इसे अपने नाश्ते में स्मूदी, दलिया, या अनाज में मिला सकते हैं।

लाभ:.....

बिना किसी कड़वाहट के फायदों का आनंद लें।

बच्चों के लिए इसे अधिक स्वादिष्ट बनाएं।

अश्वगंधा सेवन के दौरान ध्यान देने योग्य बातें

सही मात्रा

प्रतिदिन 1-2 चम्मच से अधिक सेवन न करें।

समय

खाली पेट या रात को सोने से पहले सेवन करना अधिक लाभकारी है।

गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाएं: डॉक्टर की सलाह लें।

नियमितता:.....

इसके सेवन का असर धीरे-धीरे होता है, नियमितता जरूरी है।

अश्वगंधा के जादुई फायदे

तनाव और चिंता को कम करता है।

थायरॉयड और हार्मोनल संतुलन बनाए रखता है।

सेक्सुअल हेल्थ को सुधारता है।

मांसपेशियों और ताकत को बढ़ाता है।

उम्र बढ़ने की प्रक्रिया को धीमा करता है।

अंतिम सलाह:.....

अश्वगंधा चूर्ण आयुर्वेदिक औषधि है, जो आपके शरीर और मन के लिए अद्भुत फायदेमंद है। इसे सही तरीके और मात्रा में लें, और नियमित दिनचर्या का हिस्सा बनाएं।

याद रखें, आयुर्वेद का जादू तभी असर करता है, जब आप इसे धैर्य और नियमितता के साथ अपनाते हैं।

163 किलोमीटर घट जाएगी इंदौर-हैदराबाद की दूरी, खंडवा सफर भी होगा आसान

परिवहन विशेष न्यूज

नेशनल हाईवे का दावा- अब निर्माणाधीन प्रोजेक्टों के काम में आएगी गति, लगातार बारिश के कारण थीं समस्याएं, नए बायपास के लिए भू-अधिग्रहण की प्रक्रिया भी है जारी

नेशनल हाईवे का दावा है कि अब उसके निर्माणाधीन प्रोजेक्टों में काम की गति बढ़ेगी, क्योंकि अभी लगातार बारिश के कारण निर्माण अवरुद्ध हो रहे थे।

इंदौर से हैदराबाद का जो एक्सप्रेस-वे बन रहे हैं, उससे भी लगभग 163 किलोमीटर दूरी कम होगी और 7 से 8 घंटे का समय भी बचेगा। 713 किलोमीटर लम्बे इस एक्सप्रेस-वे का निर्माण चल रहा है और अगले साल मार्च तक इसे पूर्ण किया जाएगा। 15 हजार करोड़ रुपए की राशि इस पर खर्च की जा रही है। वहीं इंदौर-खंडवा का सफर भी आसान होगा। तीनों टनल, नर्मदा ब्रिज और वाया डक्ट तैयार हो गए हैं और साल की शुरुआत यानी जनवरी में 2 लेन ट्रैफिक शुरू कर दिया जाएगा।

इंदौर बायपास पर जहां चार फ्लाई ओवरों का निर्माण नेशनल हाईवे द्वारा किया जा रहा है, उसके साथ ही पूर्वी और पश्चिमी यानी बायपास के लिए भी भू-अर्जन के साथ अन्य प्रक्रिया जारी है। दूसरी तरफ इंदौर-खंडवा का काम भी अगले पांच माह में नेशनल हाईवे द्वारा पूरा कर लिया जाएगा। धनगांव से

बोरगांव बुजुर्ग तक का हिस्सा तो पहले ही बन गया था। अब पुल और टनल का काम पूरा होते ही यह फोरलेन तैयार हो जाएगा। सिमरोल टनल के बाद 450 किलोमीटर लम्बा जो वाया डक्ट निर्मित हो रहा है, उसमें 160 गर्डरों की लॉन्चिंग भी हो चुकी है और बची हुई गर्डरें भी विशाल क्रेनों की मदद से 30 मीटर ऊंचेपियर्स पर रखी जा रही है।

इसी के साथ मोरटक्का में नर्मदा ब्रिज का काम भी तेजी से जारी है। नेशनल हाईवे का कहना है कि जनवरी के अंत तक 2 लेन ट्रैफिक शुरू कर दिया जाएगा और फिर अगले दो महीनों में शेष 2 लेन भी पूरी हो जाएगी। इस तरह मार्च अंत तक इंदौर-खंडवा फोरलेन का काम पूरा कर लिया जाएगा। इसी के साथ 713 किलोमीटर लम्बे इंदौर-हैदराबाद एक्सप्रेस-वे कॉरिडोर का काम भी चल रहा है। फिलहाल 876 किलोमीटर की दूरी तय करने में 18 से 20 घंटे लगते हैं और एक्सप्रेस-वे बनने के बाद जहां दूरी 163 किलोमीटर घटेगी, वहीं सफर भी 10 से 12 घंटे में पूरा हो जाएगा। तेजाजी नगर, सिमरौल, बलवाड़ा, बड़वाह, बुरहानपुर होते हुए इच्छापुर और उसके आगे फिर महाराष्ट्र के जलगांव, अकोला, हिंगोली, नांदेड़ और उससे तेलंगाना में संगारेड्डी होते हुए हैदराबाद पहुंचा जा सकेगा। फिलहाल इस एक्सप्रेस-वे का काम 70 फीसदी पूरा हो चुका है और लॉजिस्टिक हब के रूप में भी यह एक्सप्रेस-वे सौगात के रूप में रहेगा। 15 हजार करोड़ रुपए की राशि इस कॉरिडोर पर खर्च की जा रही है।

ज़ैनापोरा के वीडब्ल्यूसी सदस्यों को सीर हमदान में मॉडल स्प्रिंग शेड के एक्सपोज़र विजिट के लिए रवाना किया गया

परिवहन विशेष न्यूज

प्रचार की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम जलवायु लचीलापन और सतत विकास पर केंद्रित, उप-विभागीय मजिस्ट्रेट (एसडीएम) जैनापोरा, बिलाल अहमद ने नाबार्ड समर्थित स्प्रिंग शेड विकास परियोजना पहल के तहत सीर हमदान, अनंतनाग में जैनापोरा क्षेत्र के 29 ग्राम वाटरशेड समितियों (वीडब्ल्यूसी) के सदस्यों की एक प्रदर्शनी यात्रा को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

इस यात्रा का उद्देश्य वीडब्ल्यूसी सदस्यों के बीच जलग्रहण प्रबंधन प्रथाओं, सतत आजीविका मॉडल और प्राकृतिक संसाधन संरक्षण की समझ को बढ़ाना है, साथ ही जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न चुनौतियों के अनुकूल होने पर ध्यान केंद्रित करना है।

विभिन्न ग्राम जलग्रहण समितियों का दौरा करने वाला दल, अनंतनाग के एक आदर्श स्प्रिंग शेड क्षेत्र, सीर हमदान का दौरा करेगा और वहाँ लागू किए गए सफल हस्तक्षेपों का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करेगा, जिसमें जल संचयन, मृदा संरक्षण और कृषि वानिकी के अभिनव उपाय शामिल हैं। इन पहलों ने न केवल स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र में सुधार किया है, बल्कि जलवायु संबंधी तनावों के प्रति समुदाय की सहनशीलता को भी बढ़ाया है।

इस अवसर पर बोलते हुए, एसडीएम जैनपुरा ने स्थानीय क्षमता निर्माण और समुदाय-आधारित सतत विकास को बढ़ावा देने में, विशेष रूप से जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में, ऐसी पहलों के महत्व पर ज़ोर दिया और ग्रामीण विकास में निरंतर सहयोग के लिए नाबार्ड की सराहना की। उन्होंने प्रतिभागियों को अपने-अपने क्षेत्रों में सर्वोत्तम प्रथाओं को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया, ताकि उन्हें अपने स्थानीय परिवेश की विशिष्ट आवश्यकताओं और चुनौतियों के अनुरूप ढाला जा सके।

ध्वजारोहण समारोह में कृषि, बागवानी, राजस्व, एसडीएम कार्यालय के अधिकारी, नाबार्ड के प्रतिनिधि और विभिन्न वीडब्ल्यूसी के सदस्य शामिल हुए, जो सभी क्षेत्र में जलवायु-अनुकूल विकास को बढ़ावा देने के लिए मिलकर काम करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

शिक्षा के उजियारे से ही बदलेंगे देश के हालात

राजेश जैन

किसी देश का भविष्य उसके नागरिकों की सोच पर निर्भर करता है और सोच बनती है शिक्षा से। शिक्षा किसी समाज को सिर्फ पढ़ा-लिखा नहीं बनाती बल्कि सोचने, समझने और चुनने की क्षमता देती है। यही क्षमता व्यक्ति को अंधविश्वास से बाहर लाती है, लोकतंत्र को मजबूत करती है और अर्थव्यवस्था को गतिशील बनाती है।

अगर हम इतिहास पर नज़र डालें, तो हर विकसित देश की जड़ में शिक्षा ही रही है। जापान, दक्षिण कोरिया, फिनलैंड, जर्मनी और सिंगापुर जैसे देशों ने युद्धों और संकटों के बाद खुद को शिक्षा के बल पर ही खड़ा किया। भारत में भी जब स्वतंत्रता आंदोलन चला, तब गांधी, टैगोर, अम्बेडकर और नेहरू जैसे नेताओं ने स्पष्ट कहा — "शिक्षा स्वतंत्र भारत की रीढ़ होगी।" उनका मानना था कि जब कोई सरकार या परिवार शिक्षा पर पैसा खर्च करता है, तो वह किताबें नहीं, बल्कि बेहतर भविष्य खरीद रहा होता है। एक शिक्षित व्यक्ति न सिर्फ अपने परिवार की आय बढ़ाता है, बल्कि समाज के लिए उत्पादकता, नवाचार और नैतिक चेतना लाता है। इसलिए एक शिक्षक को अच्छी तनख्वाह देना, गांव में स्कूल बनाना या डिजिटल लैब खोलना — यह सब व्यय नहीं, बल्कि निवेश है जो आने वाले वर्षों में देश को फल देता है।

कुछ काम हुआ पर काफी बाकी है

यह सही है कि हमारी शिक्षा व्यवस्था पर सवाल बहुत हैं लेकिन यह भी उतना ही सच है कि पिछले दशकों में हमने इस क्षेत्र में कई अहम उपलब्धियां हासिल की हैं। आज भारत के लगभग हर गांव में प्राथमिक विद्यालय हैं। सर्व शिक्षा अभियान, मिड-डे मील योजना और राइट टू एजुकेशन जैसे कार्यक्रमों ने लाखों बच्चों को स्कूल तक पहुंचाया है। 1951 में जहां साक्षरता दर केवल 18% थी, वहीं आज यह 77% से ऊपर है। देश में आईआईटी, आईआईएम, एनआईटी और आईआईएसईआर जैसे संस्थानों ने भारत की शिक्षा को वैश्विक पहचान दी है। भारत आज विश्व का तीसरा सबसे बड़ा उच्च-शिक्षा नेटवर्क रखता है।

नई शिक्षा नीति ने अब 10+2 की जगह 5+3+3+4 की संरचना दी है

, जो बच्चों की शुरुआती शिक्षा, मातृभाषा और व्यावहारिक ज्ञान पर केंद्रित है।

डिजिटल शिक्षा के क्षेत्र में दीक्षा, स्वयम और ई-पाठशाला जैसे सरकारी प्लेटफॉर्म नई दिशा दे रहे हैं।

वे कमियां जो हमें पीछे खींचती हैं

सफलता की यह कहानी अधूरी है क्योंकि कागज़ी वादों और ज़मीनी हकीकत के बीच अब भी बड़ा अंतर है।

वित्तीय कमी और राजनीतिक चालाकी:

सरकारें बड़े वादे करती हैं पर निवेश छोटा रखती हैं। 1968 की शिक्षा नीति में कहा गया था कि केंद्रीय बजट का 6% शिक्षा पर खर्च होना चाहिए, जबकि 2020 की नीति में कहा गया कि देश की जीडीपी का 6% शिक्षा पर निवेश किया जाए। सुनने में दोनों एक जैसे लगते हैं, लेकिन अंतर बड़ा है। केंद्रीय बजट का 6% मतलब सरकार के वार्षिक खर्च का 6% तो दूसरी ओर जीडीपी का 6% मतलब पूरे देश की आर्थिक उत्पादन क्षमता का 6%। यह बहुत बड़ा आंकड़ा है। आज भारत मुश्किल से जीडीपी का 3% ही शिक्षा पर खर्च कर पा रहा है, यानी सरकार अपने ही लक्ष्य का आधा भी नहीं पहुंची।

सीखने की गुणवत्ता में गिरावट:

बच्चे स्कूल तो जा रहे हैं लेकिन क्या वे सीख रहे हैं? एएसइआर रिपोर्ट बताती है कि ग्रामीण भारत के 50% बच्चे पांचवीं में होकर भी तीसरी की किताब नहीं पढ़ पाते। इसका मतलब यह हुआ कि हमारा ध्यान बच्चे स्कूल में हैं या नहीं पर है, वे क्या सीख रहे हैं पर नहीं।

शिक्षकों की कमी और प्रशिक्षण का अभाव:

देश में लगभग 10 लाख शिक्षकों की कमी है। जो मौजूद हैं, उन्हें आधुनिक शिक्षण विधियों का प्रशिक्षण नहीं मिल पा रहा। शिक्षक को सबसे बड़ी ताकत बनना चाहिए था, पर हमने उसे सबसे कमजोर कड़ी बना दिया है।

असमानता और डिजिटल विभाजन:

शहरों के बच्चे ऑनलाइन क्लास में हैं, लेकिन गांव के बच्चे मोबाइल सिग्नल ढूंढते फिरते हैं। डिजिटल शिक्षा का फायदा उन्हीं को मिला जिनके पास उपकरण और इंटरनेट था, जिससे शिक्षा में असमानता और बढ़ गई।

रटंत प्रणाली और परीक्षा का दबाव:

एआई और तकनीक के युग में भी हम अंकों को ही बुद्धिमत्ता का पैमाना मानते हैं। हमारे बच्चे सोचते नहीं, बस रटते हैं।

परीक्षा की चिंता ने शिक्षा को जीवन से काट दिया है।

दूसरे देशों से सीखने लायक बातें

फिनलैंड: वहां बच्चों को 7 साल की उम्र तक औपचारिक पढ़ाई में नहीं डाला जाता। कोई बोर्ड परीक्षा नहीं, कोई रैंकिंग नहीं, है तो बस सीखने की खुशी। शिक्षक वहां समाज के सबसे सम्मानित वर्ग हैं।

सिंगापुर: उसने तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा को समान दर्जा दिया। वहां शिक्षा रोजगार की सीढ़ी नहीं, कौशल की यात्रा है। भारत भी अगर स्किल डेवलपमेंट को शिक्षा से जोड़े, तो बेरोजगारी घट सकती है।

दक्षिण कोरिया: 1950 के दशक में लगभग अनपढ़ देश, आज तकनीकी महाशक्ति है। उसने जीडीपी का बड़ा हिस्सा शिक्षा और अनुसंधान पर लगाया। भारत को भी रक्षा या सब्सिडी जितना खर्च शिक्षा पर करना होगा।

कनाडा और ऑस्ट्रेलिया: उन्होंने शिक्षा को बहुभाषी और लचीला बनाया। छात्रों को अपनी रुचि के अनुसार विषय चुनने की स्वतंत्रता दी। भारत में भी अब समय आ गया है कि आर्ट्स, साइंस और कॉमर्स की दीवारें तोड़ी जाएं।

अगर सचमुच चाहते हैं कि शिक्षा का उजास देश के हर कोने तक पहुंचे, तो सरकार को अब घोषणाएं नहीं, ठोस कदम उठाने होंगे। इसके तहत शिक्षा पर खर्च बढ़ाया जाए। इसे जीडीपी के 6% तक पहुंचना ही नहीं, बल्कि गुणवत्ता पर केंद्रित निवेश भी बनाना होगा। मॉनिटरिंग और पारदर्शिता बरतते हुए शिक्षा फंड के उपयोग का वार्षिक सार्वजनिक लेखा तैयार हो। शिक्षक भर्ती और प्रशिक्षण सुधारा जाए। हर स्कूल में योग्य, प्रशिक्षित और स्वप्रेरित शिक्षक हों। ग्रामीण स्कूलों का कायाकल्प कर लैब, पुस्तकालय, इंटरनेट और खेल मैदान बनाएं। डिजिटल समानता के लिए हर गांव तक उच्च-गति इंटरनेट पहुंचाया जाए। दसवीं से ही व्यावसायिक शिक्षा को मुख्यधारा में लाया जाए। शिक्षा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन लिए राज्यों के बीच प्रतिस्पर्धा पैदा की जाए, अच्छे प्रदर्शन के लिए राज्यों को पुरस्कृत किया जाए।

गोविंद नगर में भी अपराधियों के खिलाफ सफल इंस्पेक्टर रिकेश की कर्तव्य निष्ठा : कई गिरफ्तार

सुनील बाजपेई

कानपुर। अपराध एवं अपराधियों के विरूद्ध अभियान गोविंद नगर क्षेत्र में भी कठोर परिश्रम के साथ लगातार जारी है, जिसके तहत छोटी बड़ी सभी घटनाओं का सटीक खुलासा करते हुए अपराधियों को जेल भेजने में भी सफलता लगातार मिल रही है। अवगत कराते चलें कि आजकल चुनौती पूर्ण गोविंद नगर की कमान जुझारू तेवरों वाले तेज तर्रार और व्यवहार कुशल इंस्पेक्टर रिकेश कुमार सिंह के हाथ में है। जहां तक प्रभारी निरीक्षक गोविंद नगर के रूप में परोपकारी स्वभाव के बताए जाने वाले इंस्पेक्टर रिकेश सिंह की चुनौतीपूर्ण नियुक्ति का सवाल है, उसे उनकी कानून और शांति व्यवस्था के पक्ष में अपराधियों के खिलाफ और पीड़ितों के हित में अपने कर्तव्य का पालन सदैव निष्ठा और ईमानदारी के साथ करना ही माना जा रहा है।

विभागीय सूत्रों की नजर में यही नहीं यूपी की पुलिस सेवा में आने के बाद निष्पक्ष और पारदर्शी कार्यशैली के जुझारू तेवरों वाले कठोर परिश्रमी इंस्पेक्टर रिकेश सिंह के अब तक के कार्यकाल के विवेचन से यह भी साबित होता है कि हालात चाहे जैसे रहे हों लेकिन निर्दोष फंसे नहीं और अपराधी बचे नहीं जैसी लोकहित की प्रबल विचारधारा के अनुरूप अपनी धुन के भी पक्के इंस्पेक्टर रिकेश कुमार सिंह ने अपनी कर्तव्य के प्रति निष्ठा के साथ समझौता आज तक नहीं किया।

इसी के साथ उनकी कार्यशैली भी संभ्रांत असहाय लोगों की हितरक्षक और बहुत मैत्रीपूर्ण भी मानी जाती है, जिसके अनुरूप ही भगवान और भाग्य यानी कर्म भरोसे रहने वाले इंस्पेक्टर रिकेश सिंह जहां उचित पात्र लोगों की हर संभव सहायता करते हैं। वहीं कानून और शांति व्यवस्था के पक्ष में अपराधियों के खिलाफ शठे शाठ्यम समाचरेत वाली कहावत चरितार्थ करने से भी नहीं चूकते। यही वजह है कि कर्तव्य के प्रति उनकी यही प्रगाढ़ निष्ठा उनकी जुझारू नौकरी के अबतक के कार्यकाल में सभी संगीन घटनाओं का सटीक खुलासा करते हुए दर्जनों शातिरों को सबक सिखाने में भी सफल हो चुकी है। हर छोटी बढ़ी घटना के सटीक अनावरण के साथ ही पीड़ितों की हरसम्भव तत्काल सहायता में भी अग्रणी हसमुख और मिलनसार स्वभाव के कठोर परिश्रमी इंस्पेक्टर रिकेश कुमार सिंह इसके पहले राजधानी लखनऊ समेत तीन अन्य जनपदों भी कर्तव्य के प्रति अपनी प्रगाढ़ निष्ठा का सराहनीय प्रदर्शन कर चुके हैं। और अब कानपुर में चल रही नियुक्ति के दौरान भी कानून और शांति व्यवस्था के पक्ष में अपराधियों के खिलाफ पीड़ितों के हित में उनके कर्तव्य पथ का स्वागत पूर्ण सफलता लगातार करती नजर आ रही है।

(इतिहास के साए में छिपा एक सत्य)

"अंबेडकर या बी.एन. राव? संविधान की सच्ची कथा"

भारत का संविधान विश्व का सबसे बड़ा और सर्वाधिक विस्तृत लोकतांत्रिक दस्तावेज है। इसे केवल किसी एक व्यक्ति की देन मान लेना इतिहास के साथ अन्याय होगा। संविधान निर्माण की यात्रा 1919 से प्रारंभ होकर 1949 तक फैली रही, जिसमें अनेक मस्तिष्क, दृष्टिकोण और वैचारिक मतभेद शामिल थे। बी.एन. राव, जिन्होंने संवैधानिक सलाहकार के रूप में प्रारूप तैयार किया, और डॉ. भीमराव अंबेडकर, जिन्होंने ड्राफ्टिंग कमिटी के अध्यक्ष के रूप में उसे संविधान सभा के सामने रखा—दोनों की भूमिकाएँ भारतीय लोकतंत्र के दो स्तंभ हैं। इस लेख में उन्हीं के योगदान का वस्तुपरक मूल्यांकन प्रस्तुत है।

--- डॉ. सत्यवान सौरभ

भारत के इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक 26 नवम्बर 1949 का दिन है, जब संविधान सभा ने भारत के संविधान को अंगीकृत किया। यह दस्तावेज़ केवल एक कानूनी ढांचा नहीं, बल्कि एक जीवंत दर्शन है—स्वतंत्रता, समानता और न्याय का प्रतीक। परंतु समय के साथ यह प्रश्न उठता रहा है कि आखिर इस संविधान का वास्तविक निर्माता कौन था? क्या यह केवल डॉ. भीमराव अंबेडकर की रचना थी, या इसके पीछे बी.एन. राव जैसे मौन परंतु निर्णायक व्यक्तित्व की भूमिका अधिक थी?

संविधान निर्माण की कहानी केवल 1947 से नहीं शुरू होती। इसकी जड़ें बहुत गहरी हैं—1919 के मॉन्टेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधारों से लेकर 1935 के भारत सरकार अधिनियम तक। इन्हीं सुधारों ने पहली बार भारत में संघीय शासन की अवधारणा को जन्म दिया। उसी काल में एक नाम उभरता है—सर बिनोद बिहारी नारायण राव, जिन्हें बाद में बी.एन. राव के नाम से जाना गया। ब्रिटिश प्रशासन में उच्च न्यायिक और संवैधानिक पदों पर कार्य करते हुए उन्होंने भारतीय प्रशासनिक ढांचे की बारीक समझ विकसित की।

1930 के दशक में जब द्वितीय गोलमेज सम्मेलन आयोजित हुए, तब भारत में स्वशासन की दिशा स्पष्ट हो चुकी थी। 1932 के बाद, बी.एन. राव को औपचारिक रूप से संविधान निर्माण की प्रारंभिक तैयारियों में शामिल किया गया। दिल्ली में उनके नेतृत्व में 'संविधान निर्माण कार्यालय' स्थापित किया गया। 1944 में उन्हें "संविधान सलाहकार" (Constitutional Adviser) और 1946 में "मुख्य संवैधानिक सलाहकार" (Principal Constitutional Adviser) नियुक्त किया गया। उनका कार्य था—अब तक बने सभी संवैधानिक मसौदों, ब्रिटिश कानूनों, प्रांतीय विधानमंडलों की रिपोर्टों और भारतीय नेताओं के सुझावों को संकलित कर एक आधारभूत प्रारूप तैयार करना।

14 जुलाई 1946 को जब संविधान सभा के गठन की औपचारिक घोषणा हुई, तब तक राव ने अपने कार्यालय में संविधान के कई मसौदे और कानूनी सुझाव एकत्र कर लिए थे। इसी का परिणाम था कि उन्होंने 30 अक्टूबर 1947 को संविधान का "प्रारंभिक मसौदा" (First Draft) तैयार कर संविधान सभा को सौंपा। यह मसौदा आगे चलकर भारतीय संविधान का आधार बना।

इसी बीच, राजनीतिक घटनाक्रम तेजी से बदल रहे थे। 1946 में संविधान सभा के चुनाव हुए। डॉ. भीमराव अंबेडकर, जो उस समय तक एक प्रसिद्ध विधिवेत्ता और दलित अधिकारों के समर्थक के रूप में जाने जाते थे, महाराष्ट्र से चुनाव हार गए। किंतु लार्ड वावेल और बाद में माउंटबेटन के आग्रह पर, नेहरू और कांग्रेस नेतृत्व ने यह माना कि अंबेडकर जैसे विद्वान व्यक्ति का संविधान सभा में होना आवश्यक है। फलस्वरूप, बंगाल की मुस्लिम लीग ने अपने कोटा से उन्हें एक सीट दी, जिससे वे जुलाई 1947 में संविधान सभा में प्रवेश कर सके।

संविधान सभा ने 29 अगस्त 1947 को एक "ड्राफ्टिंग कमिटी" का गठन किया, जिसमें अंबेडकर को अध्यक्ष नियुक्त किया गया। इस समिति का कार्य बी.एन. राव द्वारा तैयार किए गए प्रारूप का पुनरीक्षण कर उसे अंतिम रूप देना था। राव उस समय समिति के आधिकारिक सलाहकार के रूप में जुड़े रहे। यही वह बिंदु है जहाँ से अंबेडकर की भूमिका निर्णायक रूप में सामने आती है।

डॉ. अंबेडकर का सबसे बड़ा योगदान यह था कि उन्होंने राव के मसौदे को केवल कानूनी दस्तावेज़ नहीं रहने दिया—उसे सामाजिक न्याय और मानवाधिकारों की भावना से भर दिया। संविधान के अनुच्छेद 12 से 35 तक के मौलिक अधिकारों का स्वरूप उसी दृष्टि का परिणाम है। समानता, स्वतंत्रता, शोषण के विरुद्ध अधिकार, धार्मिक स्वतंत्रता और संवैधानिक उपचार जैसे प्रावधान अंबेडकर के समाजदर्शी दृष्टिकोण से जुड़े हुए हैं।

यद्यपि कई मौलिक विचार और संस्थागत ढांचे जैसे सुप्रीम कोर्ट, हाई कोर्ट, संघीय ढांचा, नीति निर्देशक तत्व आदि पहले से ही संविधान सभा में चर्चा के लिए रखे जा चुके थे, किंतु अंबेडकर ने उन्हें व्यवहारिक और भारतीय सामाजिक संरचना के अनुरूप ढाला। यही कारण है कि संविधान को एक "जीवित दस्तावेज़" कहा जाता है।

बी.एन. राव और अंबेडकर की भूमिकाएँ परस्पर पूरक थीं। राव का दृष्टिकोण विधिक और संरचनात्मक था, जबकि अंबेडकर का दृष्टिकोण सामाजिक और सुधारवादी। राव ने संविधान की नींव रखी, अंबेडकर ने उसे आत्मा दी। यही संतुलन भारतीय संविधान को अद्वितीय बनाता है।

यह भी सच है कि संविधान का उद्देश्य प्रस्ताव (जो बाद में प्रस्तावना या 'प्रीऐम्बल' कहलाया) जनवरी 1947 में ही संविधान सभा द्वारा पारित किया जा चुका था। उसमें भारत को "संपूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न, लोकतंत्रात्मक गणराज्य" घोषित करने की भावना पहले से ही दर्ज थी। इसी प्रकार, मौलिक अधिकारों पर भी चर्चा जून 1947 से शुरू हो चुकी थी। परंतु इन सिद्धांतों को व्यावहारिक रूप देने का श्रेय ड्राफ्टिंग कमिटी को जाता है, जिसका नेतृत्व अंबेडकर कर रहे थे।

आजादी के बाद जब संविधान लागू हुआ, तो दुनिया ने देखा कि कैसे एक विविध, बहुभाषी, बहुधर्मी देश एक संवैधानिक ढांचे के भीतर एकजुट रह सकता है। यह उपलब्धि केवल किसी एक व्यक्ति की नहीं थी—यह उन सभी 299 सदस्यों की थी जिन्होंने संविधान सभा में बैठकर 2 वर्ष 11 माह 18 दिन तक विचार-विमर्श किया। परंतु यह भी तथ्य है कि बी.एन. राव के बिना वह बुनियादी ढांचा अस्तित्व में नहीं आ पाता, और अंबेडकर के बिना वह ढांचा आत्माहीन रह जाता।

इतिहास में अक्सर ऐसा होता है कि राजनीतिक प्रतीक किसी बौद्धिक योगदान को ढँक लेते हैं। अंबेडकर एक जननायक थे, इसलिए स्वाभाविक रूप से उनका नाम अधिक प्रसिद्ध हुआ। राव का योगदान मौन था, परंतु गहराई से निर्णायक था। यह स्थिति वैसी ही है जैसे किसी वास्तुकार ने भवन की योजना बनाई हो और किसी अन्य ने उसे जीवन देकर सजाया हो। दोनों में से किसी एक को भी हटाया जाए, तो वह रचना अधूरी रह जाती है।

अब समय आ गया है कि भारतीय समाज अपने संविधान के निर्माण की कहानी को केवल व्यक्ति-पूजा की दृष्टि से नहीं, बल्कि एक संस्थागत और बौद्धिक प्रक्रिया के रूप में देखे। संविधान किसी एक व्यक्ति का नहीं, बल्कि भारत की सामूहिक चेतना का परिणाम है—उस चेतना का, जिसने गुलामी के बाद लोकतंत्र का स्वप्न देखा और उसे वास्तविकता में बदला।

यदि आज हम स्वतंत्र भारत के नागरिक हैं, समानता और स्वतंत्रता के अधिकारों का उपयोग करते हैं, तो हमें उन सभी को नमन करना चाहिए जिन्होंने इस यात्रा को संभव बनाया। बी.एन. राव का गहन विधिक ज्ञान, डॉ. अंबेडकर की सामाजिक दृष्टि, जवाहरलाल नेहरू की राजनीतिक दूरदर्शिता, सरदार पटेल की संगठन क्षमता—ये सभी उस विराट वृक्ष की जड़ें हैं जिसे हम भारतीय संविधान कहते हैं।

इसलिए यह विवाद कि "वास्तविक निर्माता कौन है"—संकीर्ण दृष्टिकोण है। सही प्रश्न यह होना चाहिए कि "हमारी संविधान प्रक्रिया में किसने कौन-सा अवदान दिया।" इतिहास न्याय तब करता है जब वह संपूर्ण सत्य को देखता है, न कि केवल प्रसिद्ध चेहरों को। बी.एन. राव और डॉ. अंबेडकर दोनों ही उस इतिहास के अपरिहार्य अध्याय हैं—एक ने संविधान की रचना की, दूसरे ने उसे आत्मा दी।

शाहिद अली एडवोकेट अनऑर्गनाइज़्ड वर्कर्स एंड एम्प्लॉइज कांग्रेस (केकेसी) के नेशनल सेक्रेटरी नियुक्त

शम्स आगाज खान। नई दिल्ली: कांग्रेस पार्टी ने शाहिद अली एडवोकेट पर भरोसा जताते हुए उन्हें ऑल इंडिया सेक्रेटरी, अनऑर्गनाइज़्ड वर्कर्स एंड एम्प्लॉइज कांग्रेस (KKC) नियुक्त किया है।

शाहिद अली ने इस नियुक्ति पर आभार व्यक्त करते हुए कहा कि मैं मालिक अर्जुन खड़गे जी, राहुल गांधी जी, डॉ. उदित राज जी और के.सी. वेणुगोपाल जी का हृदय से धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने मुझ पर यह भरोसा जताया। मैं इस जिम्मेदारी को पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ निभाने का संकल्प लेता हूँ। मेरा लक्ष्य रहेगा कि पार्टी की नीतियाँ देश के हर असंगठित श्रमिक और कर्मचारी तक पहुँचें और उनके सामाजिक व आर्थिक उत्थान के लिए ठोस कदम उठाए जाएँ।

उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी सदैव असंगठित क्षेत्र के मजदूरों और कर्मचारियों की आवाज रही है, और वे इस मिशन को और मज़बूती से आगे बढ़ाएँगे। शाहिद अली की इस महत्वपूर्ण नियुक्ति पर उनके समर्थक, सहयोगी और शुभचिंतक उन्हें शुभकामनाएँ एवं बधाइयाँ दे रहे हैं, साथ ही उनके नेतृत्व में संगठन के और सशक्त होने की आशा जता रहे हैं।

मानव सेवा की मूर्तिमान स्वरूप हैं प्रख्यात समाजसेवी बहिन मनप्रीत कौर

कार्तिक मास में मां सीता रसोई के माध्यम से 500 साधु-संतों को नित्य ग्रहण कराया जा रहा है भोजन प्रसाद

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। मोतीझील क्षेत्र स्थित घीसा संत आश्रम में मां सीता रसोई के द्वारा कार्तिक मास के उपलक्ष्य में प्रति दिन सन्त, ब्रजवासी वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारा आयोजित किया जा रहा है।जिसके अंतर्गत नित्य 500 से भी अधिक साधु-संतों को भोजन प्रसाद ग्रहण कराकर उन्हें वस्त्र, दक्षिणा व दैनिक प्रयोग की वस्तुएं आदि वितरित की जा रही हैं।

मां सीता रसोई की संस्थापक व संकट मोचन सेना (पंजाब प्रान्त महिला प्रकोष्ठ) की अध्यक्ष अध्यक्ष बहिन मनप्रीत कौर (लुधियाना) ने कहा कि जप, तप, भजन, साधना करना ही भगवान की भक्ति नहीं है, बल्कि निर्धन-निराश्रित व असहायों की सेवा करना भी भगवान की एक प्रमुख भक्ति है।इसी के अंतर्गत मां सीता रसोई के द्वारा कार्तिक मास के उपलक्ष्य में प्रतिदिन 500 से भी अधिक निर्धन-निराश्रित, साधु,ब्राह्मण, ब्रजवासियों आदि को भोजन प्रसाद ग्रहण करा कर उन्हें ऊनी वस्त्र, कंबल व दक्षिणा आदि का वितरण किया जा रहा है।

प्रख्यात साहित्यकार "यूपी रत्न" डॉ गोपाल चतुर्वेदी ने कहा कि प्रख्यात समाजसेवी श्रीमती मनप्रीत कौर (लुधियाना) मानव सेवा की मूर्तिमान स्वरूप हैं।वे ठाकुर बांके बिहारी महाराज की परम-भक्त हैं। वे इन दिनों समाजसेवा के क्षेत्र में अत्यधिक योगदान दे रही हैं।ब्रज वृन्दावन के प्रति उनका समर्पण व सेवाभाव अति प्रशंसनीय व सराहनीय है।उनके सेवाकार्यों की धूम समूचे देश में है।

प्रख्यात चित्रकार द्वारिका आनंद ने कहा कि ₹मां सीता रसोई₹ के द्वारा वृन्दावन ही नहीं अपितु समूचे भारत वर्ष में असंख्य लोगों को निःशुल्क भोजन व फलाहार उपलब्ध कराया जा रहा है।साथ ही इसके द्वारा विभिन्न प्रांतों में अधिकाधिक अभावग्रस्तों की प्राथमिक आवश्यकताओं को पूर्ण करने का कार्य किया जा रहा है।

पण्डित अंशुल पाराशर ने कहा कि बहिन मनप्रीत कौर (लुधियाना) ने समूचे देश में विभिन्न सेवा प्रकल्प संचालित कर संतों, निर्धनों व निराश्रितों की सेवा करने का संकल्प लिया हुआ है। इसीलिए उनके द्वारा ₹मां सीता रसोई₹ व ₹मां राधा रसोई₹ की स्थापना की गई है।साथ ही उनके द्वारा किन्हीं निर्धन बच्चों को उनकी शिक्षा व वस्त्र आदि में, तो किन्हीं को उनकी चिकित्सा व मकान निर्माण आदि में आर्थिक सहयोग दिया जा रहा है।

संघ को नियंत्रित-प्रतिबंधित करने की कोशिश क्यों

राजेश कुमार पासी

संघ ने अपनी सौ साल की यात्रा पूरी कर ली है. एक छोटी सी संस्था से शुरू होकर आज संघ दुनिया का सबसे बड़ा सामाजिक और सांस्कृतिक संगठन बन गया है। तीन-तीन बार प्रतिबंध झेलने के बावजूद संघ की शक्ति लगातार बढ़ती जा रही है ।देखा जाए तो भाजपा और विपक्ष के बीच में बड़ा अंतर संघ ही पैदा करता है । विपक्ष के पास संघ जैसा कोई संगठन नहीं है जो समाज और धर्म की सेवा करता हो । संघ चुपचाप काम करता रहता है जिसका बड़ा फायदा भाजपा को होता है । संघ भाजपा का मातृ संगठन है, इसलिए भाजपा को समय-समय पर संघ से मार्गदर्शन मिलता रहता है । भाजपा के ज्यादातर बड़े नेता संघ से ही आए हुए हैं ।

विपक्ष अच्छी तरह से जानता है कि संघ के कारण ही भाजपा उन पर भारी पड़ती है, इसलिए वो संघ के खिलाफ बयान देता रहता है ।कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के बेटे प्रियांक खड़गे हिन्दू धर्म पर लगातार हमले करते रहते हैं। हो सकता है कि वो दलित नेता होने की वजह से ये सोच रहे हों कि उनकी आक्रामकता से दलितों का बड़ा वर्ग कांग्रेस की तरफ आ सकता है। कांग्रेस की रणनीति भी यही है कि वो मुस्लिम और दलित वोट बैंक का ऐसा कॉम्बिनेशन बना ले, जिससे वो भाजपा और अपने साथी दलों का मुकाबला कर सके ।खड़गे ने कर्नाटक की कांग्रेस सरकार के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया से सरकारी स्कूलों, कॉलेजों और सरकारी मंदिरों में आरएसएस की गतिविधियों पर रोक लगाने की मांग की थी ।उन्होंने संघ पर युवाओं का ब्रेनवाश करने और संविधान-विरोधी दर्शन को बढ़ावा देने का आरोप लगाया था । इसके बाद सिद्धारमैया सरकार ने सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों, सार्वजनिक मैदानों और राज्य सरकार की अन्य जमीनों पर आरएसएस की शाखाएं आयोजित नहीं करने के निर्देश जारी कर दिए । सिद्धारमैया की सरकार ने इस आदेश में संघ का नाम नहीं लिया लेकिन यह आदेश संघ को देखते हुए ही जारी किया गया है।

कर्नाटक सरकार में मंत्री प्रियांक खड़गे ने 16 अक्टूबर को मुख्यमंत्री सिद्धारमैया को पत्र लिखकर संघ के कार्यक्रमों में भाग लेने वाले अधिकारियों और कर्मचारियों के खिलाफ कार्रवाई करने का अनुरोध किया है । खड़गे ने कर्नाटक सिविल सेवा (आचरण) नियम, 2021 के नियम 5(1) का हवाला देते हुए यह मांग की है । यह नियम सरकारी कर्मचारियों को किसी भी राजनीतिक दल का हिस्सा बनने और राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने की अनुमति नहीं देता । इंदिरा सरकार ने 1966 में सरकारी कर्मचारियों को संघ की गतिविधियों में भाग लेने पर प्रतिबंध लगा दिया था ।इस प्रतिबंध को मोदी सरकार ने 2024 में ही खत्म किया है । तमिलनाडु सरकार ने भी यह प्रतिबंध लगाया हुआ है । आरएसएस खुद को सामाजिक और सांस्कृतिक संगठन कहता है और राजनीति से दूर रहता है लेकिन विपक्ष की सरकारें उसे राजनीतिक संगठन मानती हैं ।वो अपने पक्ष में तर्क देती हैं कि भाजपा संघ का ही हिस्सा है और संघ के लोग भाजपा में राजनीति करते हैं ।

देखा जाए तो कई मामलों में भाजपा संघ से भी बड़ी हो चुकी है और वो संघ से अलग एक पहचान बना चुकी है । संघ का सीधा नियंत्रण भाजपा पर नहीं है, बेशक संघ उसका मार्गदर्शन करता हो । संघ के लोग भाजपा में काम कर रहे हैं तो संघ को राजनीतिक संगठन नहीं कहा जा सकता । वास्तव में संघ ने राजनीति से दूर रहने के लिए ही जनसंघ का निर्माण किया था । इसकी वजह यह थी कि 1948 में गांधी जी की हत्या के बाद संघ पर कांग्रेस सरकार ने प्रतिबंध लगा दिया था । गोडसे को संघ का सदस्य बताया गया था लेकिन अदालत में सरकार इसे साबित नहीं कर पाई । तब संघ को अहसास हुआ कि उसकी राजनीतिक लड़ाई लड़ने के लिए भी कोई संगठन होना चाहिए ।1980 में जनसंघ का नाम बदलकर भारतीय जनता पार्टी कर दिया गया ।1975 में भी संघ पर इंदिरा सरकार ने प्रतिबंध लगा दिया था लेकिन जनता पार्टी की सरकार ने 1977 में यह प्रतिबंध हटा दिया । 1992 में नरसिंह राव सरकार ने बाबरी मस्जिद विध्वंस के बाद संघ पर तीसरी बार प्रतिबंध लगाया लेकिन वो भी अदालत ने हटा दिया ।देखा जाए तो कांग्रेस ने तीन बार संघ को प्रतिबंधित करने की कोशिश की है लेकिन मामला अदालत में चल नहीं पाया । कांग्रेस सरकार अपने आरोप अदालत में साबित नहीं कर पाई है ।

कांग्रेस के कई नेताओं के बयान आ चुके हैं कि जब उनकी सरकार केंद्र की सत्ता में आएगी तो संघ पर प्रतिबंध लगा दिया जाएगा ।केंद्र की सत्ता कांग्रेस को अभी दूर दिखाई दे रही है, इसलिए उसकी राज्य सरकार ने यह काम करने की कोशिश की है ।संघ पर प्रतिबंध लगाना बहुत मुश्किल है, इसलिए संघ की गतिविधियों को नियंत्रित करने की कोशिश की जा रही है ।कर्नाटक सरकार ने जो आदेश दिया है, उसमें संघ का नाम नहीं लिया गया है लेकिन इसका मुख्य निशाना संघ ही है । कर्नाटक सरकार की कोशिश होगी कि जब संघ अपने किसी कार्यक्रम के लिए अनुमति मांगने जाएगा तो उसे अनुमति नहीं दी जाएगी । इस आदेश का उद्देश्य ही यह है कि राज्य में संघ पथ-प्रचालन और शाखाओं का आयोजन न कर सके । देखा जाए तो संघ इतना बड़ा संगठन है कि वो अपने कामों के लिए कोई रास्ता निकाल लेगा ।

पिछले 78 सालों से कांग्रेस संघ से लड़ रही है, लेकिन संघ कभी भी कांग्रेस के खिलाफ नहीं गया । वो चुपचाप अपना काम करता रहता है और यही उसकी ताकत है । भाजपा संघ का राजनीतिक संगठन है जो आज कांग्रेस पर बहुत भारी पड़ रहा है । कांग्रेस की ऐसी हालत हो गई है कि वो अब कभी भी पूर्ण बहुमत से सत्ता में नहीं आ सकती । वैसे देखा जाए तो इस समय कांग्रेस अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रही है क्योंकि वो धीरे-धीरे अपने प्रभाव क्षेत्र खोती जा रही है । संघ से लड़ना कांग्रेस की व्यर्थ की कोशिश है क्योंकि उसको लड़ाई तो भाजपा से लड़नी है । अजीब बात है कि भाजपा से लड़ना कांग्रेस के लिए मुश्किल हो रहा है लेकिन वो संघ से लड़ने चल पड़ी है । कांग्रेस सोचती है कि भाजपा को संघ से ताकत मिलती है, इसलिए संघ पर हमला किया जाए । समस्या यह है कि संघ राजनीति में सीधा हिस्सा नहीं लेता है और सामाजिक कार्यों में व्यस्त रहता है । सामाजिक कार्यों पर रोक लगाना आत्मघाती कदम होता है ।

जिसको तैरना नहीं आता, उसे अगर पानी में डाल दिया जाए तो वो घबराहट में जोर-जोर से हाथ-पैर चलाने लगता है । इससे उसकी ऊर्जा जल्दी खत्म हो जाती है और वो डूब जाता है । भारत के विपक्षी नेताओं का भी यही हाल है. ज्यादातर को विरासत में राजनीति करने का मौका मिला है ।उन्हें संगठन में सीधे उच्च पद प्राप्त हो गया है और सरकार की कमान मिल गई है । देखा जाए तो राजनीतिक समझ की इन नेताओं में बहुत कमी है । अचानक इनके सामने मोदी, योगी और अमित शाह जैसे नेता खड़े हो गए हैं जिनसे लड़ना इनके बस की बात नहीं है ।भाजपा के खिलाफ कुछ कर नहीं पा रहे हैं तो इन्होंने संघ को नियंत्रित करने की कोशिश शुरू कर दी है । इस कोशिश के पीछे कांग्रेस की मंशा यह दिखाई दे रही है कि उसने तय कर लिया है कि वो सिर्फ हिन्दू विरोध की राजनीति ही करेगी । उसे लगता है कि अगर वो इस राजनीति पर चलती है तो उसके पास मुस्लिम वोट बैंक वापस आ सकता है जो दूसरे विपक्षी दलों की झोली में चला गया है ।

उसे इस बात की भी परवाह नहीं है कि उसकी इस कोशिश से हिंदुओं का बड़ा वर्ग उससे दूर जा सकता है। समस्या यह है कि मुस्लिम समाज उसी को वोट देता है, जो भाजपा को हराने की शक्ति रखता हो । कांग्रेस कुछ राज्यों तक ही सीमित रह गई है, इसलिए पूरे देश में उसे मुस्लिम समाज का वोट नहीं मिलता है ।कांग्रेस का हिन्दू विरोध उसे सभी राज्यों में नुकसान पहुंचा सकता है । संघ भारतीय समाज की चुनौतियों से निपट रहा है जिसके कारण भारतीय समाज में उसका बहुत सम्मान है ।संघ का उद्देश्य भारतीय समाज का निर्माण करते हुए राष्ट्र का निर्माण करना है । भाजपा को इससे फायदा हो रहा है इसलिए कांग्रेस संघ के खिलाफ खड़ी हो गई है ।कांग्रेस भारतीय समाज से दूर होती जा रही है, इसलिए वो समाज को समझने में नाकाम है ।संघ का विरोध कांग्रेस का राजनीतिक भटकाव है जो सिर्फ नुकसान देने वाला है ।संघ से सीखने की जरूरत है, न कि उसकी गतिविधियों को रोकने की लेकिन कांग्रेस क्या कर रही है, उसे इसका अहसास ही नहीं है ।

सिंहपौर हनुमान मंदिर में धूमधाम से सम्पन्न हुआ श्रीहनुमज्जयंती महोत्सव

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

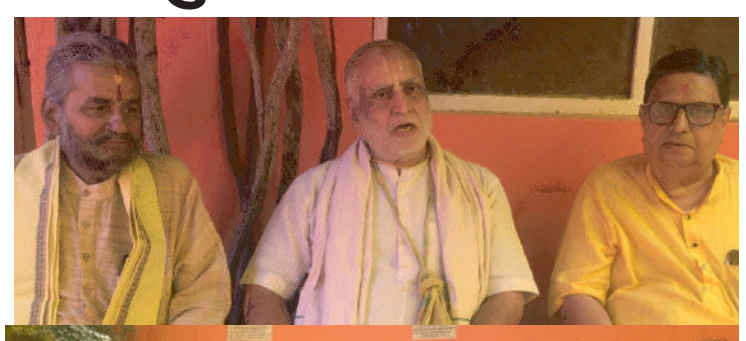

वृन्दावन। प्राचीन सिंहपौर हनुमान मंदिर में श्रीहनुमज्जयंती महोत्सव श्रीमहंत सुन्दरदास महाराज के पावन सानिध्य में अत्यंत श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ संपन्न हुआ। जिसके अंतर्गत श्रीहनुमानजी महाराज का अत्यन्त नयनाभिराम व चित्ताकर्षक श्रृंगार किया गया ।साथ ही उनकी विशेष आरती की गई। इसके अलावा अखण्ड श्रीराम चरित मानस पाठ, महंतों का सम्मान व सन्त ब्रजवासी वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारा आदि के आयोजन भी संपन्न हुए।

इस अवसर पर अखिल भारतीय श्री पंच राधा वल्लभी य निर्मोही अखाड़ा (श्रीहित रासमण्डल) के महन्त श्रीहित लाड़िली शरण महाराज,विरक्त वैष्णव परिषद के अध्यक्ष श्रीमहन्त सनत कुमार दास महाराज, ₹यूपी रत्न₹ साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी, महामंडलेश्वर स्वामी सच्चिदानंद शास्त्री महाराज, श्रीमहन्त वेणुगोपाल शरण देवाचार्य महाराज, महामंडलेश्वर स्वामी डॉ. आदित्यानन्द गिरि महाराज, महामंडलेश्वर स्वामी राधाप्रसाद देवजू महाराज, आचार्य नेत्रपाल शास्त्री, डॉ. रमेश चंद्राचार्य विधिशास्त्री महाराज, श्रीराम मन्दिर के महन्त आचार्य रामदेव चतुर्वेदी, महन्त चन्द्रदास महाराज, श्रीराधा उपासना कुंज के महन्त बाबा संतदास महाराज, महन्त मोहिनी शरण महाराज, युवा साहित्यकार डॉ. राधाकांत शर्मा आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे ।सायं को गाजे-बाजे के साथ समूचे नगर में श्रीहनुमानजी महाराज की डोला सवारी निकाली गई ।जिसका समूचे नगर वासियों ने पुष्प वर्षा करने स्वागत किया।

हर चीज़ बिकाऊ है यहाँ

हर चीज़ बिकाऊ है यहाँ,
इंसाफ से लेकर इंसान तक।
सपनों की भी कीमत लगी,
अरमान से लेकर जान तक।

सच्चाई अब नीलाम हुई,
झूठ चढ़ा है सम्मान तक।
ईमान गिरवी रख आए हम,
दौलत के उस दरबान तक।

कलम बिकी तो ख़बर बिकी,
अब बिकते हैं ऐलान तक।
न्याय की आँखों पर पट्टी नहीं,
अब नोटों का है सामान तक।

धर्म बिका, विचार बिका,
बिकने लगा ईमान तक।
रिश्तों में भी सौदा होने लगा,
माँ से लेकर मेहमान तक।

भीड़ तो है मगर इंसान कहाँ,
खो गए सब पहचान तक।
हर चेहरा नकली, हर बात झूठी,
बिक चुका यहाँ सम्मान तक।

अब तो खुदा भी बेचने लगे,
मंदिर से लेकर मसान तक।
हर चीज़ बिकाऊ है यहाँ,
इंसाफ से लेकर इंसान तक।

– डॉ० सत्यवान सौरभ,

जिसका मन पवित्र, बस वही मित्र

मित्र वही जो साथ निभाए, दुःख-सुख में मुस्काए,
हर जख्म पर मरहम रखे, आँसू भी मुस्कराए।
जो दिल से दिल तक बाँध दे, सच्चाई का चित्र,
पाखंड न जिसके मन में हो — वही सच्चा मित्र।

जो चुप रहकर समझ सके, हर पीड़ा, हर बात,
न बोले मीठे झूठ कभी, रखे सच्ची सौगात।
निर्मल जैसे गंगाजल, जिसका हो चरित्र,
जिसका मन पवित्र है, वही सच्चा मित्र।

जो राह दिखाए अंधियारे में, जब दुनिया हो वीरान,
जो थामे हाथ गिरने पर, करे दिल से सम्मान।
ना जाति, धर्म, ना स्वार्थ का कोई तंत्र,
मानवता जिसका धर्म हो — वही सच्चा मित्र।

जो ईर्ष्या-द्वेष से दूर रहे, प्रेम बने उसका मान,
जो दूसरों की खुशी में देखे अपना ही सम्मान।
ऐसे लोग ही अमर रहें, जग में छोड़ सुगंधित्र,
क्योंकि जिसका मन पवित्र — वही सच्चा मित्र।

--- डॉ प्रियंका सौरभ

भाई दूज 2025-दीपावली रूपी माला का पांचवा और अंतिम चमकता मोती,स्नेह,सौहार्द और प्रीति का अंतिम दीप

भाई दूज 2025-भारतीय संस्कृति में भाई-बहन के प्रेम और कर्तव्य का वैश्विक प्रतीक

भाई दुज़ पर्व बहन को' सद्भावना की वाहक 'और' आशीर्वाद की प्रदात्री' के रूप में देखा जाता है,जो अपने भाई के लिए प्रेम का दीप जलाती है-**एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र**

वैश्विक स्तरपर भाई दूज,यह पर्व न केवल दीपावली के पांच दिवसीय महोत्सव का समापन करता है,बल्कि पारिवारिक संबंधों में निहित स्नेह, प्रेम और सुरक्षा की भावना का दिव्य उदाहरण भी प्रस्तुत करता है। जहां धनतेरस से दीपावली की शुरुआत होती है,वहीं भाई दूज उस श्रृंखला का भावनात्मक चरम है, जब बहन अपने भाई की दीर्घायु और समृद्धि की मंगल कामना करती है। 22अक्टूबर 2025, बुधवार को मनाया जाने वाला यह पर्व केवल भारतीय समाज तक सीमित नहीं रहा, बल्कि आज यह विश्वभर में प्रवासी भारतीयों के बीच पारिवारिक एकता, आत्मीयता और सांस्कृतिक गौरव का प्रतीक बन चुका है। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं, कि भारतीय संस्कृति में भाई-बहन के संबंध को सबसे पवित्र और आत्मीय रिश्ता माना गया है। रक्षाबंधन और भाई दूज,दोनों पर्व इस रिश्ते की गरिमा को दर्शाते हैं, किंतु दोनों में एक सूक्ष्म अंतर है ।रक्षाबंधन पर बहन अपने भाई को रक्षा सूत्र बांधकर उसकी रक्षा की कामना करती है और भाई वचन देता है कि वह अपनी बहन की हर परिस्थिति में रक्षा करेगा। इस दिन भाई अपनी बहन को अपने घर बुलाता है ।वहीं भाई दूज पर परंपरा उलट जाती है,बहन अपने भाई को अपने घर आमंत्रित करती है, उसका स्वागत करती है, तिलक लगाती है,भोजन कराती है और उसकी लंबी उम्र व समृद्धि की मंगलकामना करती है। यह भूमिका का परिवर्तन इस बात का प्रतीक है कि रिश्तों की गरिमा एकतरफा नहीं, बल्कि परस्पर है। जैसे भाई बहन की रक्षा करता है, वैसे ही बहन भी अपने स्नेह और शुभकामनाओं से भाई के जीवन में सकारात्मक ऊर्जा और संतुलन भरती है।भारत के विविध प्रांतों में तथा वैश्विक स्तरपर भाई दूज को अलग-अलग नामों और रीति- रिवाजों से मनाया जाता है ।उत्तर भारत में इसे "भाई दूज" कहा जाता है, जहां बहनें अपने भाई को तिलक लगाकर भोजन कराती हैं। महाराष्ट्र और गोवा में इसे "भाऊबीज" कहा जाता है,जहां बहनें आरती कर भाई को पान, सुपारी और मिठाई देती हैं ।बंगाल में इसे "भाई फोटा" कहा जाता है,और यहां बहनें अपने भाइयों को चंदन का तिलक लगाती हैं तथा विशेष मंत्र का उच्चारण करती हैं ।नेपाल में इसे "भाई टीका" कहा जाता है, जो वहां का राष्ट्रीय त्योहार है और पाँच दिन तक चलने वाले तिहार उत्सव का हिस्सा है ।21वीं सदी में जब दुनियाँ तकनीकी रूप से जुड़ रही है लेकिन भावनात्मक रूप से दूर हो रही है,तब भाई दूज जैसे पर्व वैश्विक समाज को यह सिखाते हैं कि मानवता की सबसे बड़ी शक्ति रिश्ते हैं अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, सिंगापुर और खाड़ी देशों में बसे प्रवासी भारतीय आज इस पर्व को धूमधाम से मनाते हैं। वहां की भूमि पर यह केवल भारतीयता का प्रतीक नहीं बल्कि संस्कृति के अंतरराष्ट्रीय संवाद का माध्यम बन चुका है ।भाई दूज आज विश्व समुदाय को यह संदेश देता है कि सच्चे संबंध स्वार्थ से नहीं, बल्कि आत्मीयता से बनते हैं। यह पर्व वैश्वीकरण की दौड़ में पारिवारिक मूल्यों के संरक्षण का जीवंत उदाहरण है ।सभी परंपराओं में भाव एक ही है, भाई की सुरक्षा और बहन के स्नेह का सम्मान। यही विविधता भारतीय संस्कृति की एकता में अनेकता का सबसे चूँकि भाई दूज 2025-दीपावली रूपी माला का पांचवा और अंतिम चमकता मोती,स्नेह, सौहार्द और प्रीति का अंतिम दीप हैं,इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से व इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगेभाई दूज 2025-भारतीय संस्कृति में भाई-बहन के प्रेम और कर्तव्य का वैश्विक प्रतीक हैं।

साथियों बात अगर हम, भाई दूज के सामाजिक और पारिवारिक आयाम को समझने की करें तो,आधुनिक समाज में जहां परिवार छोटे होते जा रहे हैं और रिश्तों में दूरी बढ़ रही है, वहां भाई दूज जैसे पर्व सामाजिक एकता और पारिवारिक पुनर्सयोजन का अवसर प्रदान करते हैं। इस दिन बहनें अपने मायके जाती हैं, पुराने संबंधों को फिर से जीवित करती हैं और भावनात्मक संवाद का सेतु बनाती हैं ।भाई दूज का पर्व हमें यह सिखाता है कि परिवार केवल रक्त संबंध नहीं, बल्कि भावनाओं की बुनावट है। जिस घर में यह पर्व मनाया जाता है, वहां स्नेह, आस्था और संवाद का वातावरण स्वतः निर्मित हो जाता है ।यह पर्व विशेष रूप से महिलाओं के सम्मान और उनकी भूमिका की पहचान का भी अवसर है। बहन को 'सद्भावना की वाहक' और 'आशीर्वाद की प्रदात्री' के रूप में देखा जाता है, जो अपने भाई के लिए प्रेम का दीप जलाती है।

साथियों बात अगर हम भाई दूज 2025 आध्यात्मिकता, परंपरा और आधुनिकता का संगम को समझने की करें तो, भाई दूज 2025 के आगमन के साथ दीपावली की श्रृंखला पूर्ण होती है, लेकिन उसके साथ ही यह पर्व एक नवीन आरंभ का प्रतीक भी है। यह दिन केवल भाई और बहन के मिलन का नहीं, बल्कि परिवार, समाज और संस्कृति के पुनर्संयोजन का भी अवसर है ।आधुनिक समाज में जहां रिश्ते डिजिटल माध्यमों तक सीमित हो रहे हैं,वहां भाई दूज हमें सिखाता है कि स्पर्श, स्नेह और साथ का कोई विकल्प नहीं ।जब बहन तिलक लगाती है, तब वह केवल प्रतीकात्मक क्रिया नहीं कर रही होती, बल्कि वह भाई के जीवन में संरक्षण, आशीर्वाद और शुभता का संचार कर रही होती है। यही उस प्रेम की शक्ति है जो न समय, न दूरी और न मृत्यु से बंधी होती है।

साथियों बात अगर हम,भाई दूज का वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक पहलू को समझने की करें तो, भारतीय त्यौहार केवल धार्मिक न होकर वैज्ञानिक और मनो वैज्ञानिक दृष्टि से भी गहरे अर्थ रखते हैं। भाई दूज का पर्व दीपावली के बाद आता है,जब वातावरण में ठंड का आगमन होता है, खेतों में नई फसलें आने लगती हैं और परिवार एक साथ समय बिताते हैं। यह मौसम सामाजिक एकत्रीकरण और मानसिक नवजीवन के लिए उपयुक्त होता है ।भाई दूज पर तिलक लगाने की परंपरा का भी वैज्ञानिक आधार है। चंदन, कुमकुम और अक्षत का प्रयोग मस्तक के उस भाग (अज्ञा चक्र) पर किया जाता है जो मन की शांति और सकारात्मक ऊर्जा का केंद्र है। इस तिलक से शरीर में ऊर्जा संतुलित होती है और भावनात्मक जुड़ाव का अनुभव गहरा होता है ।इसके अतिरिक्त, भाई- बहन का मिलन और आत्मीय संवाद सामाजिक मानसिक स्वास्थ्य को भी सुदृढ़ करता है। यह पर्व परिवार में संवाद, संवेदना और समर्थन की भावना को प्रबल तथा सटीक बनाता है।

साथियों बात अगर हम भाई दूज का पौराणिक आध्यात्मिक आधार व नारी सशक्तिकरण के संदेश को समझने की करें तो भाई दूज का मूल आधार यमराज और उनकी भगिनी यमुना की पौराणिक कथा से जुड़ा हुआ है। कहा जाता है कि यमराज, जो मृत्यु के देवता हैं, एक बार लंबे समय बाद अपनी बहन यमुना के घर पहुंचे। यमुना ने अपने भाई का आदरपूर्वक स्वागत किया, तिलक लगाया,आरती उतारी और उन्हें स्वादिष्ट भोजन कराया। यमराज बहन की इस आत्मीयता से अत्यंत प्रसन्न हुए और वरदान दिया कि जो भी इस दिन अपनी बहन के घर जाकर तिलक ग्रहण करेगा और स्नेहपूर्वक भोजन करेगा, उसे यमलोक का भय नहीं रहेगा ।इस कथा में न केवल धार्मिक भावार्थ निहित है, बल्कि यह मानवीय संबंधों की अमरता, आत्मीयता और परस्पर श्रद्धा की झलक भी देता है। यमराज जो मृत्यु के प्रतीक माने जाते हैं, उनके द्वारा बहन के स्नेह से जीवन और दीर्घायु का वरदान मिलना यह सिखाता है कि प्रेम ही वह शक्ति है जो मृत्यु और भय पर भी विजय पा सकती है ।भाई दूज केवल भाइयों का नहीं, बल्कि बहनों की गरिमा और शक्ति का भी उत्सव है। यह पर्व इस बात का प्रतीक है कि नारी केवल रक्षा की पात्र नहीं, बल्कि रक्षा की प्रदात्री भी है ।यमराज की बहन यमुना ने अपने स्नेह से मृत्यु के देवता को भी जीवन का वरदान देने को प्रेरित किया। यह कथा इस विचार को पुष्ट करती है कि स्त्री का प्रेम और आशीर्वाद अमृत समान है, जो जीवन में ऊर्जा, उत्साह और उद्देश्य भर देता है ।आधुनिक युग में जब नारी समाज में आत्मनिर्भरता और नेतृत्व की दिशा में अग्रसर है, तब भाई दूज उस सांस्कृतिक विरासत का स्मरण कराता है जो बहन को परिवार के केंद्र में रखती है,एक ऐसी शक्ति के रूप में जो सृजन,संतुलन और प्रेम का स्रोत है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि भाई दूज का वैश्विक संदेश यह हैं कि,भाई दूज केवल भारतीय पर्व नहीं, बल्कि मानवता का उत्सव है। यह हमें याद दिलाता है कि इस संसार में सबसे अमूल्य धरोहर हमारे रिश्ते हैं,जो न किसी धर्म, जाति या भौगोलिक सीमा में बंधे हैं ।भाई दूज का संदेश है, "जहां स्नेह है, वहां जीवन है; जहां संबंध हैं, वहां स्थायित्व है।" दीपावली रूपी माला का यह अंतिम दीप न केवल घरों में उजाला करता है, बल्कि मनुष्य के हृदय में प्रेम, कृतज्ञता और बंधुत्व का आलोक फैलाता है ।2025 का भाई दूज इस युग की उस पुकार का उत्तर है, जो रिश्तों के पुनर्जागरण की ओर अग्रसर है, एक ऐसा समाज जहां प्रेम, संवाद, सहयोग और संवेदना सबसे बड़ा धर्म हो।

हर शहर की हवा अब खतरनाक—क्या हम जागेंगे?

सांस लीजिए, लेकिन डरिए—हर सांस में जहर है। दिल्ली की सड़कों पर, भोपाल की गलियों में, इंदौर के चौराहों पर—हवा अब दोस्त नहीं, कातिल बन चुकी है। दिवाली की रात, जब दीयों की लौ और पटाखों की चमक ने आसमान को रंगों से भर दिया, उसी रात हवा चीख उठी—यह उत्सव नहीं, मौत की दावत है। दिल्ली में एक्यूआई 400 को लांघ गया, भोपाल में पीएम-2.5 महज दो घंटों में 65 से 680 तक उछला—10 गुना जहर। स्वच्छता का तमगा पहनने वाला इंदौर भी नहीं बचा, एक्यूआई 323 तक पहुंचा। ये आंकड़े महज संख्याएं नहीं, हमारे फेफड़ों की चीख हैं। क्या हमारी खुशियां इतनी सस्ती हैं कि हम अपनी सांसों को दांव पर लगा दें?

दिल्ली, हमारी राजधानी, अब जहर की राजधानी है। 21 अक्टूबर को सीपीसीबी ने बताया—औसत एक्यूआई 346, लेकिन अशोका विहार में तो 714। यह 'गंभीर' नहीं, 'मौत का मंजर' है। डब्ल्यूएचओ कहता है, पीएम-2.5 का सुरक्षित स्तर 15 माइक्रोग्राम प्रति क्यूबिक मीटर है, मगर दिल्ली में यह 24 गुना ज्यादा था। पटाखों ने पीएम-2.5 और पीएम-10 को 1,500 माइक्रोग्राम तक पहुंचाया। सुप्रीम कोर्ट के 'ग्रीन पटाखे' के आदेश हवा में उड़ गए; सड़कों पर वही जहरीले पटाखे फटते दिखे। सुबह धुंध ने सूरज को निगल लिया, विजिबिलिटी 100 मीटर से कम। बच्चे अस्थमा से जूझ रहे हैं, बुजुर्ग फेफड़ों की तकलीफ में तड़प रहे हैं। पड़ोसी शहर भी डूबे—गुड़गांव 402, फरीदाबाद 412। पराली, वाहनों का धुआं, और कारखानों का जहर—सबने मिलकर हवा को कातिल बना दिया। आई-क्यू-एयर की चेतावनी साफ है—दिल्ली अब दुनिया का सबसे प्रदूषित शहर है। क्या हम अपनी सांसों को बचाने के लिए अब भी नहीं जागेंगे?

भोपाल अब सांसों का दम घोंट रहा है। कभी झीलों और हरियाली का गहना, यह शहर अब जहर की चपेट में है। 20-21 अक्टूबर की रात, पटाखों ने हवा को मौत का प्याला बना दिया। एमपीपीसीबी और सीपीसीबी के आंकड़े चीखते हैं—शाम 6 बजे पीएम-2.5 65 था, रात 8 बजे तक 680—महज दो घंटों में 10 गुना जहर। सल्फर डाइऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड, और सूक्ष्म कणों ने हवा को कातिल कर दिया। एक्यूआई 181 तक पहुंचा—'अस्वास्थ्यकर' का ठप्पा। गरीब बस्तियों में आंखें जल रही हैं, गले खराश से तड़प रहे हैं, बच्चे खांसी में डूबे हैं। विशेषज्ञ चेताते हैं—ठंडी हवाएं और स्थिर मौसम प्रदूषकों को कैद करते हैं, और पटाखे इस जहर को विस्फोटक बनाते हैं। यह एक रात की कहानी नहीं—हर साल भोपाल की सांसें और कमजोर हो रही हैं। क्या हम अपने शहर को इस तरह मरने देंगे?

इंदौर, स्वच्छता का गर्व, अब प्रदूषण की आग में झुलस रहा है। 21 अक्टूबर को एमपीपीसीबी ने खुलासा किया—एक्यूआई 261, लेकिन छोटी ग्वालटोली में 362, एयरपोर्ट पर 320—'गंभीर' की कगार पर। दिवाली से पहले एक्यूआई 153 था, मगर पटाखों ने इसे दोगुना कर दिया। पीएम-2.5 191 माइक्रोग्राम—डब्ल्यूएचओ के मानक से 12 गुना ज्यादा। वाहन, धूल, और निर्माण कार्य पहले से 70% जहर उगलते हैं; पटाखों ने इस आग में घी डाला। एक रात की चमक ने हवा को जहर का गोला बना दिया। स्वच्छता का तमगा क्या हमारी सांसें बचा पाएगा?

यह सिर्फ भोपाल या इंदौर की मार नहीं—2025 की दिवाली ने पूरे भारत को झकझोरा। गाजियाबाद 324, नोएडा 325, लखनऊ 250, उदयपुर 250। पीएम-2.5 फेफड़ों से खून में घुसता है, दिल के दौरे, कैंसर, स्ट्रोक को बुलावा देता है। डब्ल्यूएचओ की चेतावनी—भारत में हर साल 16 लाख मौतें प्रदूषण की भेंट चढ़ती हैं। एक घंटे के पटाखे महीनों के ट्रैफिक जितना जहर फैलाते हैं। ठंडी हवाएं स्मॉग का जाल बुनती हैं, मगर असली कसूरवार हमारी लापरवाही है। क्या हम अपनी सांसों को यूं ही जहर बनने देंगे?

यह संकट सिर्फ आज का नहीं, हमारी आने वाली पीढ़ियों का है। बच्चों में अस्थमा 30% बढ़ रहा है, बुजुर्ग हार्ट अटैक से जूझ रहे हैं, युवा कमजोर पड़ रहे हैं। आर्थिक नुकसान अरबों में। मगर रास्ता है—पटाखों को अलविदा कहें—लेजर शो, दीये, सामूहिक उत्सव अपनाएं। 'ग्रीन पटाखे' भी नहीं, पूर्ण प्रतिबंध चाहिए। सरकारें जागें—ड्रोन से निगरानी, एनसीएपी (नेशनल क्लीन एयर प्रोग्राम) को ताकत, इलेक्ट्रिक वाहन, हरियाली। हम भी बदलें—एन-95 मास्क, एयर प्यूरीफायर, कम बाहरी व्यायाम। स्कूलों में प्रदूषण की पढ़ाई हो, इंदौर की तरह हर शहर स्वच्छता से प्रदूषण को मात दे। हर कदम मायने रखता है—आज का कदम, कल की सांसें बचाएगा।

दिवाली रोशनी का उत्सव है, जहर का अड्डा नहीं। 2025 की धुंध में डूबी दिल्ली, भोपाल का बढ़ता धुआं, इंदौर का गहराता संकट—यह खतरे की घंटी है। अगर आज नहीं चेते, तो अगली दिवाली और स्याह होगी। संकल्प करें—अगली दिवाली हरे-भरे आसमान की होगी। दीये की लौ जलाएं, पटाखों की चिंगारी नहीं। हवा को शुद्ध रखें, ताकि हर सांस जिंदगी बने, मौत का सबब नहीं। यह महज त्योहार का मसला नहीं, हमारी हस्ती की जंग है। बदलाव का पहला कदम हमारा है—अभी, इसी क्षण।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

झूठ का कारोबार: ट्रंप ने फिर रचा बाहरी ड्रामा

[ट्रंप की कथनी-करनी एक: दावे बनाम कड़वी हकीकत]

दीपावली की पवित्र रात्रि में, जब घर-घर दीये जलते हैं और सत्य की ज्योति अंधकार पर विजय का संदेश देती है, तब कुछ लोग अपनी झूठी चमक से दुनिया को भ्रमित करने की कोशिश करते हैं। ये वे ही हैं जो अंधेरी रातों में मिथ्या सूरज बनकर चमकते हैं, लेकिन सच्ची ज्योति के सामने टूटे पतंग की तरह धराशायी हो जाते हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का ताजा दावा ठीक ऐसी ही मिथ्या चमक का प्रतीक है। 21 अक्टूबर की रात को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से फोन पर दीपावली शुभकामनाओं के बहाने, उन्होंने भारत पर रूस से तेल खरीदने का "वचन" थोपने का हास्यास्पद काल्पनिक कथानक रचा। यह दावा वैश्विक कूटनीति की भ्रामक दुनिया का आईना है और ट्रंप की पुरानी साजिश—सत्य को तोड़-मरोड़ने—का चरम। ट्रंप ने संक्षिप्त बातचीत को काल्पनिक संधि का हथियार बना लिया—"मोदी ने वादा किया कि रूस से ज्यादा तेल नहीं खरीदेंगे।" यह भारत की स्वतंत्र ऊर्जा नीति को उनके जाल में फंसाने की कोशिश है, जो पिछले हफ्ते के झूठों की कड़ी का नवीनतम मोती है। ट्रंप की धूर्त आदत जगजाहिर है—झूठ को बार-बार दोहराकर सत्य का भ्रम रचना। दीपावली की उज्ज्वल रौशनी में ही उनका अंधेरा उघाड़ फेंकना। दीपावली सिखाती है—झूठी चमक को पहचानने का तरीका यही है—सच्चाई की ज्योति जलाकर देखो, सब बेनकाब हो जाता है।

ट्रंप की यह बकवास सुनकर लगता है जैसे वे व्हाइट हाउस से दीये जला रहे हों, लेकिन कूटनीतिक ज्योतियां जलाने के नाम पर अपनी परछाईं को सूरज बना रहे हों। यह भ्रम दीपावली की रौशनी में पल भर में बेनकाब। पिछले हफ्ते का सिलसिला देखिए—चार झूठ, छह दिनों में। 15 अक्टूबर—मोदी ने आश्वासन दिया, रूस से तेल बंद। 16 अक्टूबर को विदेश मंत्रालय की ठुकाई—ऐसी बातचीत हुई ही नहीं। फिर 16 अक्टूबर—मोदी ने वादा किया। 20 अक्टूबर, एयर फोर्स वन पर—इनकार किया तो टैरिफ चुकाओगे। 21 अक्टूबर, दीपावली पर—वे ज्यादा तेल नहीं खरीदेंगे, कटौती शुरू। यह धूर्त चाल—काल्पनिक कथा को बार-बार रंग भरकर परोसना। अमेरिकी राजनीति में चमकती रही, लेकिन भारत जैसे संप्रभु शेर को बकरी समझना मूर्खता! सच्चाई? मोदी का एक्स पोस्ट—धन्यवाद ट्रंप, शुभकामनाओं के लिए। बस। न तेल, न वादा—सिर्फ शुभकामनाएं। ट्रंप की एकतरफा उद्घोषणा भारत की अटल विदेश नीति पर थूकने जैसी, जो राष्ट्रीय हितों की चट्टान पर खड़ी है।

ट्रंप की बकबक न केवल झूठी है, बल्कि ठोस आंकड़ों से भी चुभती है। भारत ने रूस से तेल आयात क्यों बढ़ाया? यूक्रेन युद्ध के बाद रूस ने सस्ता डिस्काउंटेड तेल दिया, जिससे भारत को अरबों डॉलर की बचत हुई। 2024 में कुल 52.73 अरब डॉलर का तेल आयात हुआ। 2025 के पहले छह महीनों में रूस सबसे बड़ा सप्लायर बना—1.75 मिलियन बैरल प्रतिदिन, जो कुल आयात का 35-36 प्रतिशत था। सितंबर 2025 में यह हिस्सा 34 प्रतिशत रहा। ट्रंप का "कटौती" का दावा? जनवरी से अगस्त तक महज 10 प्रतिशत की मामूली कमी आई, जो बाजार की गतिशीलता से हुई, न कि किसी फोन कॉल से। सितंबर में रिलायंस ने आयात बढ़ाया, जबकि सरकारी कंपनियों ने घटाया। अक्टूबर में तो 20 प्रतिशत की वृद्धि हुई—1.9 मिलियन बैरल प्रतिदिन—क्योंकि यूक्रेनी ड्रोन हमलों से क्रूड अधिक उपलब्ध हुआ। भारत की नीति स्पष्ट है— ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करना और कीमतें स्थिर रखना। सस्ता रूसी तेल वैश्विक महंगाई को रोकता है, जो अमेरिका के लिए भी फायदेमंद है। लेकिन ट्रंप यूक्रेन को "मोदी का युद्ध" कहकर भारत को निशाना बनाते हैं, जबकि अमेरिका खुद अप्रत्यक्ष रूप से इसमें जुड़ा हुआ है। उनकी दोहरी चाल—प्रतिबंध और व्यापार चेतावनी—सीधे भारतीय परिवारों की जेब पर चोट करती है। आंकड़े चीख-चीखकर बता रहे हैं: जनवरी-जून में 1.75 मिलियन बैरल प्रतिदिन, सितंबर में निजी क्षेत्र ने बढ़ोतरी की। रिलायंस का जामनगर रिफाइनरी 50 प्रतिशत रूसी क्रूड पर चल रही है, जिससे 8 अरब डॉलर का कारोबार हुआ। अगर भारत रुक गया, तो तेल कीमतें आसमान छू लेंगी।

ट्रंप की कूटनीतिक अकड़ दीपावली के पावन पर्व को भी व्यापारिक बाजार में तब्दील कर देती है। शुभकामनाएं देना ठीक है, लेकिन पाकिस्तान को घुसेड़ना कहां का न्याय? वे दावा करते हैं, "मैंने युद्ध रुकवाने की बात नहीं की, बल्कि व्यापार से ही बोल पाया।" यह भारत-पाकिस्तान तनाव में मध्यस्थता का सुनहरा मौका तलाशना है, जबकि भारत हमेशा द्विपक्षीय समाधान पर जोर देता रहा है। ट्रंप कहते हैं, "मोदी मेरा अच्छा दोस्त है।" लेकिन यह दोस्ती कहां? उनकी नीतियां तो भारत के हितों को तोड़-मरोड़कर पेश करती हैं। बालाकोट हमले के बाद उन्होंने पाकिस्तान को बचा लिया, और अब दीपावली पर रूस पर दबाव डाल रहे हैं। यह महज चुनावी रणनीति है—रूस को अलग-थलग करने का हीरो बनने की कोशिश। हकीकत यह है कि उनकी यूक्रेन नीति लड़खड़ा गई, तेल कीमतें बेकाबू हो गईं, और सारा दोष भारत पर डाल दिया। लेकिन भारत नहीं झुका—50 प्रतिशत टैरिफ के बावजूद रूसी तेल आयात जारी रखा।

ट्रंप का झूठ वैश्विक विश्वास के लिए घातक खतरा बन गया है। उनके शब्द महज गुब्बारे हैं—फूटते ही हंसी उड़ाते हैं। "भारत से बहुत प्यार"—लेकिन प्रतिबंधों की बौछार? मोदी ने साफ कहा, "दोनों लोकतंत्र आशा की ज्योति जलाएं और आतंक के खिलाफ एकजुट हों।" ट्रंप का दावा तो आर्थिक आतंक ही है। भारत संतुलित रुख अपनाता है—रूस से पुरानी दोस्ती, अमेरिका से मजबूत पार्टनरशिप। पाकिस्तान का जिक्र करते हुए "युद्ध नहीं होने दिया"—यह भारत को आक्रमक ठहराने की साजिश है। बालाकोट तो पुलवामा आतंक का करारा जवाब था। ट्रंप की मध्यस्थता पाकिस्तान को हमेशा बचा ले जाती है। दीपावली पर ट्रेड वॉर को चाशनी में लपेटकर परोसना—क्या यही दोस्ती? सच्ची दोस्ती एकतरफा नहीं होती—भारत ने हथियार, तकनीक साझा की, लेकिन ऊर्जा मामलों में कभी दखल नहीं दिया। "युद्ध खत्म करना चाहते हैं"—यह तो सही है, लेकिन तेल आयात को जोड़ना हास्यास्पद है। भारत शांति का वकालत करता है, रूस को सजा नहीं देता। ट्रंप की पाखंडपूर्ण चालें साफ दिखाती हैं—यूरोप को महंगी गैस थोपते हैं, खुद सस्ता एलएनजी बेचते हैं। भारत का रूसी तेल वैश्विक स्थिरता का मजबूत स्तंभ है—इसे तोड़ने की कोशिश बेकार!

ट्रंप की बकबक महज मनोवैज्ञानिक चाल है—झूठ को बार-बार दोहराकर सत्य में बदलने की कोशिश। लेकिन दीपावली का संदेश स्पष्ट है—सत्य की ज्योति हर झूठ को भस्म कर देती है। भारत को ट्रंप के झूठों का घेराव करना जरूरी है, क्योंकि वैश्विक व्यवस्था पहले ही कमजोर हो चुकी है। विश्वास ही सबसे बड़ा हथियार है, जबकि झूठ सबसे खतरनाक दुश्मन। भारत अपने वादों को कभी नहीं तोड़ेगा—रूस से तेल आयात ऊर्जा सुरक्षा के लिए अनिवार्य है। ट्रंप जितना चिल्लाएंगे, मोदी की चुप्पी उतना ही करारा जवाब देगी। दीपावली की पवित्र रात में एक छोटा-सा दीया पूरा अंधकार मिटा देता है—ट्रंप के झूठ की राख बनकर उड़ जाएंगे। भारत स्वतंत्र है, मजबूत है, और सत्यनिष्ठ है। ट्रंप तो महज अपनी काल्पनिक कथा का एक साधारण पात्र हैं। यह दीपावली सत्य की ऐतिहासिक विजय का प्रतीक बनेगी—झूठ को आईना दिखाकर बेनकाब करेगी, और सत्य को पूर्ण सम्मान देगी। भारत इन शोरगुलों को नजरअंदाज कर अपनी राह पर अडिग चलेगा। ज्योति की यह चमक हर झूठी चमक को बर्बाद कर देगी—सत्य ही अंतिम विजेता होगा।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

सकारात्मक सीख

जीवन में असफलता आना स्वाभाविक है, किंतु पुनः प्रयास करने से ही सफलता प्राप्त होती है। पुनः प्रयास वह शक्ति है जो व्यक्ति को हार मानने न दे। यह न केवल आत्मविश्वास बढ़ाता है, अपितु नई ऊँचाइयों तक पहुँचाता है। उदाहरणस्वरूप, थॉमस एडिसन ने बल्ब का आविष्कार करने के लिए दस हजार से अधिक असफलताओं का सामना किया। उन्होंने कहा, ॰मैं असफल नहीं हुआ, मैंने केवल दस हजार वे तरीके खोजे जो काम नहीं करते।॰ उनका पुनः प्रयास आज दुनिया को प्रकाश प्रदान कर रहा है।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महात्मा गांधी ने अनेक असफलताओं के बावजूद पुनः प्रयास किया। नमक सत्याग्रह, असहयोग आंदोलन आदि में हार मिली, किंतु उन्होंने हार न मानी। परिणामस्वरूप भारत को स्वतंत्रता मिली। इसी प्रकार, अब्दुल कलाम ने प्रारंभिक असफलताओं के बाद पुनः प्रयास कर मिसाइल मैन बने। पुनः प्रयास के लाभ अनेक हैं। यह धैर्य सिखाता है, अनुभव प्रदान करता है तथा लक्ष्य प्राप्ति में सहायक होता है। विद्यार्थी परीक्षा में असफल हो तो पुनः प्रयास से सफल होता है। खिलाड़ी हारने पर अभ्यास कर विजयी बनता है। व्यवसाय में हानि हो तो नई रणनीति से लाभ कमाया जाता है।

हालाँकि, पुनः प्रयास में सावधानी बरतनी चाहिए। गलतियों से सीखना आवश्यक है। अंधे प्रयास व्यर्थ होते हैं। योजना बनाकर प्रयास करें।निष्कर्षतः, पुनः प्रयास जीवन का मूलमंत्र है। ॰हार मत मानो, पुनः प्रयास करो॰ – यह वाक्य जीवन बदल देता है। सफल व्यक्ति वे हैं जो असफलताओं से घबराते नहीं। पुनः प्रयास से ही जीवन सार्थक होता है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

इंस्टाग्राम पर आपत्तिजनक कंटेंट न देख पाये किशोर...

इंस्टाग्राम ने 18 वर्ष से कम उम्र के किशोरों को आपत्तिजनक कंटेंट से दूर रखने के लिए PG-13 आधारित फ़िल्टर प्रणाली लागू की है। इससे नाबालिग यूज़र्स हिंसक, यौन या मानसिक रूप से हानिकारक सामग्री नहीं देख पाएंगे। माता-पिता अब "सीमित कंटेंट सेटिंग्स" से बच्चों की गतिविधियों पर नज़र रख सकेंगे। यह कदम सोशल मीडिया पर किशोरों की सुरक्षा और मानसिक संतुलन की दिशा में एक बड़ी पहल है। यदि इसे गंभीरता से लागू किया गया, तो यह स्वस्थ और जिम्मेदार डिजिटल समाज के निर्माण की दिशा में मील का पत्थर साबित होगा।

-डॉ. सत्यवान सौरभ

डिजिटल युग में सोशल मीडिया आज जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। बच्चा हो या बड़ा, सबकी दिनचर्या का एक अहम समय इंस्टाग्राम, फेसबुक, यूट्यूब और अन्य प्लेटफॉर्म्स पर बीतता है। लेकिन जैसे-जैसे इस आभासी दुनिया की चमक बढ़ी है, वैसे-वैसे इससे जुड़े खतरे भी गहराते गए हैं। सबसे अधिक प्रभावित हो रहे हैं किशोर, जिनकी सोच, मनोवृत्ति और व्यवहार अभी विकसित हो ही रहे हैं। सोशल मीडिया की चकाचौंध में खोए किशोरों के लिए यह प्लेटफॉर्म कभी-कभी सीख का माध्यम तो बनता है, परंतु कई बार यह मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक असंतुलन का कारण भी बन जाता है। इन्हीं चिंताओं को देखते हुए इंस्टाग्राम की मूल कंपनी मेटा ने एक बड़ा कदम उठाया है। कंपनी ने घोषणा की है कि अब 18 वर्ष से कम आयु के किशोर अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर आपत्तिजनक या अनुचित कंटेंट नहीं देख पाएंगे।

यह फैसला केवल तकनीकी नहीं बल्कि सामाजिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। किशोरावस्था वह समय है जब व्यक्ति का मन सबसे संवेदनशील होता है। इस उम्र में जो कुछ देखा, सुना और महसूस किया जाता है, वही आने वाले जीवन की दिशा तय करता है। सोशल मीडिया पर हिंसक, यौन संकेतक या अवसादपूर्ण सामग्री तक आसान पहुँच बच्चों को अनजाने में ऐसे रास्ते पर ले जाती है जहाँ से लौटना कठिन हो जाता है। आत्महत्या की प्रवृत्ति, अवसाद, असुरक्षा और आत्मसम्मान की कमी जैसी मानसिक समस्याएँ सोशल मीडिया की असंयमित दुनिया से गहराई तक जुड़ी हुई हैं। ऐसे में मेटा का यह निर्णय निश्चय ही एक जिम्मेदार पहल है।

मेटा ने यह नीति ऐसे समय में बनाई है जब दुनिया भर में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर बच्चों की सुरक्षा को लेकर गंभीर बहस चल रही है। कई देशों की संसदों और अदालतों में सोशल मीडिया कंपनियों से यह पूछा गया कि वे नाबालिगों की मानसिक सुरक्षा के लिए क्या कदम उठा रही हैं। इंस्टाग्राम पर किशोरों की ऑनलाइन सुरक्षा को लेकर कंपनी पर पहले भी सवाल उठते रहे हैं। अमेरिकी कांग्रेस से लेकर ब्रिटिश संसदीय समितियों तक में यह मुद्दा गूंज चुका है। मेटा के पूर्व कर्मचारियों ने भी यह खुलासा किया था कि इंस्टाग्राम का एल्गोरिद्म किशोरों को अधिक समय तक प्लेटफॉर्म से जोड़ने के लिए जानबूझकर ऐसे कंटेंट सुझाता है जो मानसिक रूप से अस्थिर कर सकता है। आलोचनाओं के बाद कंपनी ने 'पैरेंटल सुपरविजन टूल्स' शुरू किए थे, लेकिन वे सीमित थे। अब कंपनी ने इससे एक कदम आगे बढ़ते हुए "PG-13 आधारित कंटेंट फ़िल्टरिंग सिस्टम" लागू करने का निर्णय लिया है।

इस नई व्यवस्था के तहत माता-पिता को यह अधिकार होगा कि वे अपने बच्चों की गतिविधियों पर निगरानी रख सकें। 18 वर्ष से कम आयु के यूजर्स को इंस्टाग्राम पर वह सामग्री स्वतः ही नहीं दिखाई देगी जो हिंसक, यौन या आत्मघाती प्रवृत्ति वाली हो। यह प्रणाली फ़िल्टर के माध्यम से काम करेगी जो हॉलीवुड फिल्मों की PG-13 रेटिंग प्रणाली की तरह होगी। जैसे किसी फिल्म को यह रेटिंग तब दी जाती है जब वह 13 वर्ष से ऊपर के बच्चों के लिए उपयुक्त मानी जाती है, वैसे ही अब इंस्टाग्राम पर भी कंटेंट की उपयुक्तता उसी मानक से तय की जाएगी। कंपनी का दावा है कि यह फीचर पहले अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा और ऑस्ट्रेलिया में लागू होगा और वर्ष के अंत तक भारत सहित दुनिया भर में लागू कर दिया जाएगा।

यह कदम इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि भारत सोशल मीडिया यूजर्स के मामले में दुनिया के शीर्ष देशों में है। लाखों किशोर रोजाना इंस्टाग्राम पर सक्रिय हैं। स्कूल जाने वाले बच्चे सेल्फी पोस्ट करने, रील्स बनाने और लाइक्स पाने की दौड़ में इतने उलझ गए हैं कि वास्तविक जीवन की संवेदनाएं और प्राथमिकताएं पीछे छूटती जा रही हैं। किशोरों का आत्ममूल्य अब इस बात से तय होने लगा है कि उन्हें कितने फॉलोअर्स मिले, कितने लोगों ने उनकी पोस्ट को पसंद किया। यह सामाजिक स्वीकृति का नया और खतरनाक रूप है। जब किसी पोस्ट पर अपेक्षित प्रतिक्रिया नहीं मिलती, तो किशोर आत्मग्लानि और अवसाद में डूबने लगते हैं। कई बार इसी निराशा में वे आत्मघाती कदम तक उठा लेते हैं। ऐसे में अगर इंस्टाग्राम किशोरों को आपत्तिजनक सामग्री से दूर रख सके तो यह उनके मानसिक संतुलन और भावनात्मक विकास के लिए अत्यंत लाभकारी होगा।

माता-पिता भी इस कदम से राहत महसूस करेंगे। अब उन्हें यह डर नहीं रहेगा कि उनका बच्चा गलती से किसी गलत दिशा में जा रहा है या अश्लील सामग्री के प्रभाव में आ रहा है। "सीमित कंटेंट सेटिंग्स" के ज़रिए वे यह तय कर पाएंगे कि उनके बच्चे को क्या दिखना चाहिए और क्या नहीं। इससे पारिवारिक संवाद भी बेहतर होगा क्योंकि अभिभावक अब निगरानी के साथ-साथ मार्गदर्शन की भूमिका निभा सकेंगे। बच्चों को भी यह एहसास होगा कि सोशल मीडिया केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं बल्कि ज़िम्मेदारी से इस्तेमाल करने का प्लेटफॉर्म है।

फिर भी यह नीति तभी सफल होगी जब तकनीकी सुरक्षा के साथ-साथ सामाजिक जागरूकता भी बढ़े। केवल फिल्टर लगाने से समस्या पूरी तरह समाप्त नहीं होगी। बच्चे हमेशा तकनीक से एक कदम आगे रहते हैं। वे प्रतिबंधों को पार करने के तरीके खोज लेते हैं। इसलिए आवश्यक है कि स्कूलों, परिवारों और समाज में डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा दिया जाए। बच्चों को यह समझाया जाए कि क्या सही है, क्या गलत है और क्यों कुछ चीज़ें सीमित की जा रही हैं। जब तक उन्हें कारणों की समझ नहीं होगी, वे प्रतिबंधों को नियंत्रण नहीं बल्कि विरोध के रूप में देखेंगे।

यह भी विचारणीय है कि "आपत्तिजनक सामग्री" की परिभाषा हर समाज और संस्कृति में अलग-अलग हो सकती है। जो एक देश में अनुचित माना जाता है, वह दूसरे में सामान्य हो सकता है। इसलिए वैश्विक स्तर पर लागू होने वाले ऐसे नियमों के लिए सांस्कृतिक विविधता और स्थानीय भावनाओं का ध्यान रखना आवश्यक है। मेटा को यह सुनिश्चित करना होगा कि उसके एल्गोरिद्म स्थानीय भाषाओं और समाज की संवेदनशीलता को समझ सकें। भारत जैसे बहुभाषी देश में यह एक बड़ी चुनौती होगी।

दूसरा महत्वपूर्ण पहलू यह है कि सोशल मीडिया कंपनियों की प्राथमिकता प्रायः मुनाफा होती है, न कि नैतिकता। अधिक यूज़र्स का मतलब अधिक विज्ञापन और अधिक राजस्व। ऐसे में किशोरों को प्लेटफॉर्म से दूर रखना या उनके कंटेंट को सीमित करना कंपनी के आर्थिक हितों के विपरीत जा सकता है। इसलिए यह देखना दिलचस्प होगा कि मेटा इस नई नीति को कितनी गंभीरता से लागू करता है। यदि यह केवल दिखावटी कदम साबित हुआ तो इसका उद्देश्य ही विफल हो जाएगा।

सोशल मीडिया के नियमन की यह वैश्विक पहल सरकारों के लिए भी एक संकेत है। डिजिटल दुनिया इतनी प्रभावशाली हो चुकी है कि अब केवल नैतिक अपीलों से काम नहीं चलेगा। जैसे फिल्मों, विज्ञापनों और टीवी कार्यक्रमों पर सेंसरशिप की एक व्यवस्था होती है, वैसे ही सोशल मीडिया के लिए भी संतुलित और स्वतंत्र निगरानी संस्थान आवश्यक हैं। सरकारों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि कंपनियां केवल नीतियां घोषित न करें बल्कि उनके पालन के लिए पारदर्शी तंत्र भी बनाएं। अभिभावकों को भी सशक्त किया जाए कि वे अपने बच्चों की डिजिटल आदतों पर नज़र रख सकें।

किशोरों को यह समझाने की ज़रूरत है कि इंस्टाग्राम पर लाइक्स या फॉलोअर्स से उनकी असली पहचान तय नहीं होती। आत्मसम्मान, आत्मविश्वास और सामाजिक सहयोग ही जीवन के सच्चे मूल्य हैं। डिजिटल दुनिया असली दुनिया का विकल्प नहीं हो सकती। अगर बच्चे यह समझ जाएँ कि सोशल मीडिया एक साधन है, साध्य नहीं, तो उसकी सकारात्मक क्षमता अपार है।

मेटा का यह निर्णय केवल तकनीकी सुधार नहीं बल्कि एक मानव-केंद्रित दृष्टिकोण की ओर संकेत करता है। आज जब दुनिया के कई हिस्सों में किशोर आत्महत्या, साइबर बुलिंग और ऑनलाइन शोषण के शिकार हो रहे हैं, तब ऐसी पहलें उम्मीद की किरण बनती हैं। लेकिन इसके साथ यह भी ज़रूरी है कि सोशल मीडिया कंपनियाँ पारदर्शिता बरतें। माता-पिता को नियमित रिपोर्ट्स मिलें, बच्चे स्वयं अपने डिजिटल व्यवहार का मूल्यांकन करें और शिक्षण संस्थान इस विषय को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाएं।

कई अध्ययनों में यह साबित हुआ है कि सोशल मीडिया की अधिकता से किशोरों में चिंता, नींद की कमी और आत्मसंतुष्टि में गिरावट आती है। लगातार दूसरों से तुलना करने की प्रवृत्ति उन्हें हीनभावना की ओर धकेल देती है। "परफेक्ट बॉडी", "ग्लैमरस लाइफस्टाइल" और "फिल्टर की दुनिया" में वे असलियत से कटते चले जाते हैं। मेटा यदि अपने नए सिस्टम के ज़रिए इन खतरों को कम कर सके तो यह समाज के लिए बड़ी उपलब्धि होगी।

गुरु नानक देव जी की कार्तिक प्रभात फेरी महोत्सव -23 अक्टूबर से 5 नवंबर 2025- धन गुरु नानक सारा जग तारिया -आस्था, सेवा और उनकी अनंत ज्योति का विश्वव्यापी उत्सव

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर भारत की भूमि ऋषियों, संतों औरगुरुओं की तपस्थली रही है। यहाँ हर पर्व और परंपरा का एक गहन आध्यात्मिक अर्थ निहित है। इन्हीं अमूल्य परंपराओं में से एक है, सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानक देव जी की जयंती से पहले मनाया जाने वाला कार्तिक प्रभात फेरी महोत्सव जो केवल धार्मिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि एक जीवंत आध्यात्मिक यात्रा है, जो समाज को सत्य, प्रेम, समानता और सेवा के पथ पर अग्रसर करती है। यह प्रभात फेरी 23 अक्टूबर से आरंभ होकर 5 नवंबर 2025 तक चलेगी, यह अवधि न केवल भक्तिभाव और सेवा का प्रतीक है, बल्कि सामाजिक जागरण और मानवता के समरसता संदेश की पुनः पुष्टि का अवसर भी है। पूरे कार्तिक मास की पवित्रता, अनुशासन और भक्ति की प्रतीक होगी। प्रभात फेरी का आरंभ कार्तिक मास के आरंभ (8 अक्टूबर) के बाद विशेष रूप से गुरु नानक जयंती की तैयारियों के साथ किया जाता है, और यह गुरु पर्व की पूर्णिमा (5 नवंबर) पर सम्पन्न होती है। इस अवधि में देश ही नहीं बल्कि पूरी दुनियाँ में श्रद्धालु सुबह- सुबह कीर्तन, भजन, और सेवा के माध्यम से गुरु की शिक्षाओं को आत्मसात करते हैं। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र स्वयंम भी प्रभात फेरी में शामिल हुआ हूं और देखा हूंकि प्रातःकाल लगभग 3:30 या 4 बजे गुरुद्वारों से प्रारंभ होती है। श्रद्धालु संगत एकत्र होकर गुरु ग्रंथ साहिब के आगे मत्था टेकते हैं, और फिर "कीर्तन सोहिला" या "जपजी साहिब" का पाठ करते धन गुरु नानक, सारा जग तारिया, जो बोले सो निहाल सत श्री अकाल के जय घोष करते हुए गाँव या नगर की गलियों से होकर गुजरते हैं। मार्ग में लोग अपने घरों के बाहर दीये जलाकर, फूलों से स्वागत कर इस यात्रा को धन्य करते हैं। फेरी के अंत में गुरुद्वारे में प्रसाद सेवा होती है जिसमें सभी धर्मों के लोग साथ बैठकर प्रसाद ग्रहण करते हैं। इस दौरान बच्चों और युवाओं को भी सिखाया जाता है कि गुरु की सच्ची भक्ति केवल पूजा में नहीं, बल्कि सेवा और भक्ति भाव में भी है। यह विशेष रूप से गुरु नानक देव जी के जन्मोत्सव से जुड़ी हुई है। आज गुरु नानक देव जी का संदेश केवल पंजाब या भारत तक सीमित नहीं है, दुनियाँ के 150 से अधिक देशों में प्रभात फेरियां निकाली जाती हैं। लंदन में साउथहॉल गुरुद्वारा से हजारों श्रद्धालु प्रभात फेरी में भाग लेते हैं। कनाडा के वैंकूवर में भारतीय मूल के लोगों के साथ स्थानीय नागरिक भी इस भक्ति उत्सव में शामिल होते हैं। सिंगापुर, मलेशिया, दुबई, अमेरिका, केन्या, ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में सिख समुदाय और अन्य धर्मों के लोग भी गुरु नानक के उपदेशों से प्रेरित होकर प्रभात फेरियों का आयोजन करते हैं। इस प्रकार कार्तिक प्रभात फेरी आज एक वैश्विक सांस्कृतिक संवाद का माध्यम बन चुकी है। प्रभात फेरी में भाग लेने वालों के जीवन में यह अनुभव गहरा आध्यात्मिक परिवर्तन लाता है। भोर के समय जब पूरा वातावरण शांत होता है और वाहेगुरु का नाम गूंजता है, तब व्यक्ति के भीतर की अशांति मिटने लगती है। यह अनुभव बताता है कि आस्था केवल पूजा नहीं, बल्कि आत्मशुद्धि का मार्ग

साथियों बात अगर हम गुरुनानक देव जी की कार्तिक प्रभात फेरी 2025 को समझने की करें तो "सतगुरु की अरदास, प्रभात की प्रभा से विश्व आलोकित "वाहेगुरु जी का खालसा, वाहेगुरु जी की फतेह। आस्था, भक्ति और मानवता के इस पावन संगम में जब सूरज की पहली किरण धरा को स्पर्श करती है, तो गुरबाणी की मधुर वाणी के साथ "वाहेगुरु" का नाम गुंजायमान हो उठता है। यही वह क्षण होता है जब कार्तिक प्रभात फेरी की शुरुआत होती है, वह अनूठी परंपरा जिसे गुरु नानक देव जी ने आध्यात्मिक जागरण और मानवीय एकता का प्रतीक बनाया। पूरे 15 दिवसीय भक्तिमय कालखंड में सिख श्रद्धालु सहित सिंधी व अन्य समाज गुरु नानक जयंती की तैयारी और साधना में डूबे रहेंगे। "प्रभात फेरी" का शाब्दिक अर्थ है, प्रभात (सुबह) के समय की आस्था यात्रा। यह फेरी केवल चलना नहीं, बल्कि संगत (सामूहिकता) के रूप में भक्ति का प्रसार है। जब सूर्योदय से पहले की शांति में भक्तजन "वाहे गुरु, सतनाम" धन गुरु नानक सारा जग तारिया के नाम का उच्चारण करते हुए गलियों, चौपालों और रास्तों से गुजरते हैं, तब यह वातावरण आध्यात्मिक प्रकाश से भर जाता है। प्रभात फेरी आत्मशुद्धि का माध्यम है, यह सिख व अन्य धर्म की उस भावना का प्रतीक है जिसमें कहा गया है कि "नाम जपो, किरत करो, वंड छको" अर्थात ईश्वर का स्मरण करो, ईमानदारी से कार्य करो और सबमें बाँटो। यह लगभग 14 दिनों की धार्मिक यात्रा गुरु नानक जयंती की तैयारी का सबसे पवित्र चरण मानी जाती है। भारत में अमृतसर, पटियाला, लुधियाना, आनंदपुर साहिब, दिल्ली, नांदेड़, पटना साहिब जैसे गुरुद्वारों में प्रभात फेरियों की विशेष व्यवस्था की जाती है। परंतु अब यह परंपरा सीमित नहीं रही। कनाडा, अमेरिका ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया, मलेशिया, सिंगापुर और दुबई जैसे देशों में बसे सिख समुदाय भी इसे अत्यंत श्रद्धा से मनाते हैं। लंदन के साउथहॉल, वैंकूवर, मेलबर्न, टोरंटो, और कैलिफ़ोर्निया के गुरुद्वारों से प्रभात फेरियाँ निकलती हैं, जिनमें न केवल भारतीय मूल के लोग बल्कि विभिन्न धर्मों और संस्कृतियों के लोग भी भाग लेते हैं। इस तरह यह पर्व "ग्लोबल यूनिटी ऑफ़ स्पिरिचुअल एनर्जी" का प्रतीक बन गया है।

साथियों बात अगर हम इतिहास में प्रभात फेरी की परंपरा व आधुनिक रूप में पर्यावरण और समाज के प्रति संदेश को समझने की करें तो, गुरु नानक देव जी ने 15 वीं शताब्दी में जब आध्यात्मिक यात्रा आरंभ की थी, तब वे अक्सर अपने शिष्यों के साथ प्रभात बेला में भक्ति गीत गाया करते थे। यही परंपरा आगे चलकर प्रभात फेरी के रूप में स्थापित हुई। उनकी यह शिक्षाएँ उस युग में सामाजिक अंधकार में प्रकाश की किरण बनकर फैलीं गुरु नानक देव जी ने जात- पात, अंधविश्वास और धार्मिकभेदभाव के विरुद्ध आवाज़ उठाई और मनुष्य को उसके कर्म और सत्यनिष्ठा से परिभाषित करने की प्रेरणा दी। प्रभात फेरी इन्हीं सिद्धांतों को पुनर्जीवित करती है, यह केवल धार्मिक रिवाज नहीं, बल्कि सामाजिक एकता और मानवता के जागरण का पर्व है, इस वर्ष की प्रभात फेरी में कई गुरुद्वारों ने ग्रीन प्रभात फेरी की पहल की है। इसका उद्देश्य है कि भक्ति के साथ-साथ प्रकृति की रक्षा भी की जाए। पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता सिख धर्म की मूल भावना से जुड़ी है, क्योंकि गुरुनानक देवजी ने कहा था "पवण गुरु, पानी पिता, माता धरत महत।" इस संदेश के अनुरूप श्रद्धालु पौधरोपण, प्लास्टिक-मुक्त आयोजन और साइकिल प्रभात फेरी जैसी गतिविधियाँ करेंगे। अमृतसर, दिल्ली, पटना साहिब और नांदेड़ के गुरुद्वारों ने इस वर्ष "एक पौधा एक श्रद्धालु अभियान" भी प्रारंभ किया है।

साथियों बात अगर हम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कार्तिक प्रभात फेरी का विस्तार को समझने की करें तो, 21 वीं सदी में प्रभात फेरी का स्वरूप अत्यंत वैश्विक हो गया है। विदेशों में बसे भारतीय समुदाय ने इसे "फेस्टिवल ऑफ़ मॉर्निंग डिवोशन" के रूप में स्थापित किया है। कनाडा और ब्रिटेन में सिख समुदाय स्थानीय सरकारों के सहयोग से विशेष परमिट लेकर सड़कों पर प्रभात फेरी निकालता है। इसमें न केवल धार्मिक गीत बल्कि इंटरफेथ संवाद भी होते हैं, जिसमें हिंदू, मुस्लिम, क्रिश्चियन, ज्यू और बौद्ध धर्मों के प्रतिनिधि शामिल होते हैं। इससे गुरु नानक की सार्वभौमिक शिक्षा "एक ओंकार सतनाम" का विश्व संदेश फैलता है कि सत्य एक है, परंतु उसे पाने के मार्ग अनेक हैं। गुरु नानक देव जी का दर्शन अत्यंत व्यापक था। उन्होंने कहा "न को हिन्दू न मुसलमान," अर्थात इंसान को धर्म से नहीं, उसके कर्म से आँकना चाहिए। प्रभात फेरी इसी विचारधारा की व्यावहारिक अभिव्यक्ति है। जब समाज के लोग एक साथ चलकर नाम जपते हैं, तब जाति, धर्म, भाषा और वर्ग का भेद मिट जाता है। यह एक ऐसा आयोजन है जो आत्मा और समाज दोनों को जोड़ता है। इसमें हर व्यक्ति को यह अनुभव होता है कि "हम सब ईश्वर के एक ही प्रकाश के अंश हैं।"

साथियों बात अगर कर हम पवित्र प्रभात फेरी गुरु नानक जयंती 5 नवंबर 2025 के समापन का पवित्र क्षण को समझने की करें तो, 5 नवंबर 2025 को जब कार्तिक पूर्णिमा के दिन गुरु नानक जयंती मनाई जाएगी, तब प्रभात फेरी अपने चरम पर होगी। इस दिन सिख गुरुद्वारों में अखंड पाठ, दीवान सजावट, भव्य नगर कीर्तन, लंगर सेवा, और दीयों की रोशनी से वातावरण भक्ति-मय होगादेशभर के गुरुद्वारों में रात भर "शबद कीर्तन" गूंजता रहेगा। अमृतसर का स्वर्ण मंदिर, नांदेड़ का हजूर साहिब, पटना साहिब, दिल्ली का बंगला साहिब और पाकिस्तान के करतारपुर साहिब में लाखों श्रद्धालु एक साथ "वाहे गुरु" के नाम का स्मरण करेंगे। यह दृश्य केवल धार्मिक नहीं बल्कि मानवता की एकता का उत्सव होगा।

साथियों बात अगर हम पवित्र प्रभात फेरी को समाज और युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणादायक होने की करें तोआज के युग में जब दुनिया भौतिकता और प्रतिस्पर्धा के जाल में उलझी है, तब प्रभात फेरी युवाओं को एक नया दृष्टिकोण देती है। यह उन्हें सिखाती है कि सफलता का अर्थ केवल धन नहीं, बल्कि आत्म- संतोष और सेवा भावना है। कई स्कूलों और कॉलेजों में इस दौरान गुरु नानक अध्ययन सप्ताह आयोजित किए जाते हैं, जहाँ छात्र उनके जीवन, यात्राओं (उदासियों) और शिक्षाओं का अध्ययन करते हैं।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि, कार्तिक प्रभात फेरी 2025 केवल धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि मानवता एकता और आध्यात्मिकता की विश्व यात्रा है। 23 अक्टूबर से 5 नवंबर तक का यह कालखंड हर हृदय को गुरु नानक देव जी की वाणी से भर देगा "नाम जपो कीरत करो, वंड छको।" यह पंद्रह दिन का सफर केवल सड़कों पर नहीं, बल्कि आत्मा के भीतर तय होता है। जैसे सूरज अंधकार मिटाता है, वैसे ही गुरु नानक देव जी की प्रभात फेरी मानवता के हृदय में प्रकाश जगाती है, एक ऐसा प्रकाश जो सीमाओं से परे है, जो सभी को जोड़ता है, और जो कहता है, "वाहेगुरु जी का खालसा, वाहेगुरु जी की फतेह।"

गुरु नानक की वाणी हमें फिर याद दिलाती है, "सभ में जोत, जोत है सोई; तिस दै चाणण सब में चाणण होई।" (हर प्राणी में एक ही प्रकाश है, ईश्वर की ज्योति सबमें समान है।)

सिंधु घाटी से आधुनिक समय तक पंजाब की यात्रा

संपादकीय
चिंतन-मनन

विजय गर्ग

पंजाब की एपीयरोन विरासत सिंधु घाटी सभ्यता में अपनी जड़ों का पता लगाती है। कई युगों से गुजरते हुए, यह अंततः अपने वर्तमान रूप में विकसित हो गया है - पंजाब। यह अनगिनत युगों और पीढ़ियों को कवर करने वाले इस समृद्ध ऐतिहासिक विकास के माध्यम से यात्रा करना आकर्षक है। मूलतः ऋग्वेदिक काल (1500-1000 ईसा पूर्व) में ₹सप्त सिंधु₹ के नाम से जाना जाता था, जिसका अर्थ है ₹सात नदियों की भूमि ये नदियाँ सिंधु, विटास्ता (जेलम), असीकनी (चेनाब), पारसानी (रवी), वीपासा (बीज़), शातूदारी (सतलूज) और सरस्वती थीं। माना जाता है कि बाद में वैदिक काल (1000-500 ईसा पूर्व) के दौरान, यमुना और सतलूज के बीच बह रही सरस्वती नदी सूखने लगी तथा अंततः गायब हो गई। साथ ही, सिंधु नदी भौगोलिक रूप से अलग हो गई। इस प्रकार, सप्त सिंधू को अब पांच नदियों के साथ छोड़ दिया गया था और इसे पुराटन काल अवधि (500-300 ईसा पूर्व) में ₹पंचनाड₹ (पाँच नदियों की भूमि) कहा जाता था।

मध्य इंडो-आर्यन काल (600 ईसा पूर्व-1000 ईस्वी) के दौरान बोली जाने वाली भाषा का सबसे पहला प्रमाण सामने आया, जिसे प्रकृत कहा जाता है। समय के साथ, लगातार परिष्करणों के माध्यम से, अपाभ्राम (मिश्रित) नामक एक विकसित रूप विकसित हुआ। ऐतिहासिक रिकॉर्डों से पता चलता है कि 10वीं सदी के अंत तक, अपाभ्राम ने हिंदी, पंचनाद (पंजाबी) और विभिन्न दक्षिण एशियाई बोली का जन्म दिया। 8वीं और 9वीं शताब्दी के आसपास, शारदा लिपि - कई बाद की लिपियों की माँ - विकसित हुई। इसका नाम शारदा शक्ति पीठ स्थित प्राचीन विश्वविद्यालय और शिक्षण केंद्र से लिया गया है (जो पोके में लोसी के पास कश्मीर के केरन क्षेत्र में स्थित है), जिसने इसकी स्थापना और लोकप्रियता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इस आधार से विभिन्न व्युत्पन्न स्क्रिप्ट विकसित हुईं, जिनमें से एक लैंडा थी, जिसे मुख्य रूप से व्यापारी स्क्रिप्ट के नाम से जाना जाता था। इसका व्यापक रूप से साहित्यिक और प्रशासनिक उद्देश्यों के लिए उपयोग किया गया था तथा शीघ्र ही इसे पंचनाद भाषा ने अपनाया। इसी अवधि में संत मच्छिंद्रनाथ ने नाथ योगी संप्रदाय की स्थापना की। उनके शिष्य योगी गोरखनाथ ने अपनी शिक्षाओं और आध्यात्मिक अनुशासनों को पंचनाद भाषा में प्रचारित किया, जिससे इसकी सांस्कृतिक जड़ें और मजबूत हुईं।

14वीं सदी में दो ऐतिहासिक घटनाएं हुईं। सबसे पहले, सूफी कवि आमिर खुशरो ने संस्कृत-प्रभावित हिंदी और फारसी के बीच भाषाई अंतर को दूर करने का प्रयास करते हुए ₹ज़ुबान-ए-उर्दू₹ (उर्दू) नामक एक नया हाइब्रिड शब्दकोश बनाया, जो पर्सो-अरबी लिपि में लिखा गया था। इसे जल्द ही व्यापक रूप से स्वीकार किया गया और उत्तरी और उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में शाहमुखी लिपि के नाम से जाना जाता था, अंततः यह पंचनाद भाषा की प्राथमिक लिपि बन गई।

दूसरा मील का पत्थर मोग्रेबी अन्वेषक और बहुविज्ञानी इब्न बटुता द्वारा चिह्नित किया गया था। 1325 और 1354 के बीच, उन्होंने एशिया, अफ्रीका और इबेरियन प्रायद्वीप में 73,000 मील से अधिक यात्रा की। वह 1334 में भारत पहुंचे और 134 तक रहे। अपनी यात्राओं के दौरान, माना जाता है कि उन्होंने अपने ट्रैवल लॉग रिहला में पर्शियन शब्द ₹पंजाब₹ के साथ पंचनाद का नाम बदल दिया था। इस प्रकार, क्षेत्र की भाषा पंजाबी के रूप में जानी गई।

इसी समय, शेख फरीद के नेतृत्व में सूफी आंदोलन पंजाब में समृद्ध हुआ और बाद में बुलेह शाह, वारिस शाह, शाह मुहम्मद, शाह हुसैन और दामोदर दास अरोरा (हिरे-रंज का मूल लेखक) द्वारा आगे बढ़ाया गया। पंजाबी में व्यक्त उनकी कविता और दर्शन ने नए नाम वाले पंजाब के आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक ढांचे को गहराई से समृद्ध किया।

इसके बाद 15वीं और 18वीं शताब्दी के बीच सिख धर्म का उदय हुआ। इस युग ने पंजाबियों के बीच गहरी आध्यात्मिकता, समर्पण और सामाजिक एकता की शुरुआत की। इस समय में पंजाबी भाषा को दूसरा सिख गुरु श्रीगुरु अंगद देव जी द्वारा तैयार की गई अपनी विशिष्ट लिपि ₹गुरमुखी₹ प्राप्त हुई।

मुगल युग में महत्वपूर्ण प्रशासनिक सुधार किए गए। इनमें से, सम्राट अकबर के दरबार में वित्तीय दिग्गज राजा तोदर माल ने पंजाब को पांच दोब्स (दो नदियों के बीच की भूमि) में पुनर्गठित किया और उन्हें उन नदियों का नाम दिया। पूर्व से पश्चिम तकः सतलूज और बीस के बीच क्षेत्र को बिस्ट डोब (जलंधर-होशियारपुर) कहा जाता था।

बीस और रवि के बीच बैरी डोब (अमितसर और लाहौर सहित महा) था।

रवि और चेनाब के बीच रचना डोब (फैसालाबाद-सियालकोट) थी।

चेनाब और झेलम के बीच चज दुब (सर्गोधा-गुजरात) था।

झेलम और सिंधु के बीच सबसे पश्चिमी क्षेत्र सिंद सागर डोब (रावलपिंडी-चक्वाल) था।

महाराज रंजीत सिंह (1801-1839) के शासन को उनके सामाजिक, राजनीतिक और समतावादी सुधारों के लिए याद किया जाता है। सिख साम्राज्य की गिरावट द्वितीय एंग्लो-सिख युद्ध (1848-49) के बाद आई, जिसके परिणामस्वरूप अप्रैल 1849 में ब्रिटिशों ने पंजाब को शामिल कर लिया।

ब्रिटिश शासन के तहत सिंचाई और कृषि में सुधार करने का प्रयास किया गया। 1875 तक, महजा क्षेत्र में केवल एक ही प्रमुख नहर थी - बैरी दोब नहर। स्थानीय स्तर पर Baar क्षेत्रों के रूप में जाने वाली विशाल उर्वर भूमि सिंचाई की कमी के कारण असिद्ध रही। इनमें गंजी और नीली Baar (बरी दोब में) तथा सांडल और किराणा Baar (रचना और चाज दोब्स में) शामिल थे।

आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करने के लिए, अंग्रेजों ने 1880 और 1940 के बीच एक विशाल नहर उपनिवेश परियोजना शुरू की, जिसमें नौ प्रमुख नहरों का निर्माण किया गया तथा लगभग एक मिलियन लोग बस गए, मुख्य रूप से महा और बिस्ट डोब क्षेत्रों से। यह प्रणाली दुनिया के सबसे बड़े नहर नेटवर्क में से एक बन गई और पंजाब की बाद की ग्रीन क्रांति की नींव रखी।

पंजाब में तीन प्रमुख विभाजन हुएः पहले 1901 में, जब उत्तर-पश्चिम सीमा प्रांत (एनडब्ल्यूएफपी) का नक्काशी किया गया था; फिर 1911 में, जब दिल्ली एक अलग राजधानी क्षेत्र बन गई थी; और अंततः 1947 के दुखद विभाजन ने भूमि को पूर्वी और पश्चिमी पंजाब तक विभाजित कर दिया - एक जल क्षणी जिसने इसके इतिहास की निरंतरता बदल दी।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर

गणित के पिता के रूप में कौन जाना जाता है?

विजय गर्ग

आर्मिडेस को गणित का पिता क्यों कहा जाता है, जानें। उनके जीवन, प्रसिद्ध आविष्कारों, प्रमुख खोजों और ज्यामिति, भौतिकी और आधुनिक विज्ञान पर स्थायी प्रभाव के बारे में जानें।

कई शानदार दिमागों ने गणित की दुनिया को आकार दिया है, लेकिन एक नाम सबसे ऊपर खड़ा हैः सिरैकस का आर्किमेडिस। ज्यामिति, भौतिकी और आविष्कार में अपनी प्रतिभा के लिए जाना जाता है, आर्किमेड्स ने ऐसी खोजें कीं जो आज भी विज्ञान और गणित को प्रभावित करती रहती हैं।

आर्किमेडिसः गणित का पिता आर्किमेडिस का जन्म लगभग 287 ईसा पूर्व ग्रीस के सिरैक्यूज़ में हुआ था, जिसे गणित का पिता कहा जाता है। वह न केवल गणितज्ञ थे बल्कि भौतिक विज्ञानी, आविष्कारक और खगोलशास्त्री भी थे। ज्यामितीयता, लीवर, फ्लोएन्सी और आकारों के माप पर उनके सिद्धांतों ने उन्हें इतिहास में सबसे महान वैज्ञानिक दिमागों में से एक बना दिया।

आर्किमेड्स को गणित का पिता क्यों कहा जाता है? आर्किमेड्स को गणित का पिता कहा जाता है क्योंकि उन्होंने बुनियादी गणितीय सिद्धांत विकसित किए हैं जो आज भी उपयोग में आते हैं। उन्होंने गोलियों, सिलेंडरों और शंकुओं जैसे आकारों के क्षेत्रफल, मात्रा और सतह की गणना करने के लिए सूत्र खोजे।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के पिता के रूप में कौन जाना जाता है?

गूगल प्राथमिकताएं वह पी (पी) के सटीक अनुमानों का उपयोग करने वाले पहले व्यक्ति भी थे और उन्होंने आधुनिक गणना का आधार बनाने वाली विधियां शुरू कीं।

उनकी सबसे प्रसिद्ध खोजों में से एक तब हुई जब वह स्नान कर रहा था - जब उसे एहसास हुआ कि पानी का विस्थापन मात्रा को कैसे माप सकता है। अपनी खोज से उत्साहित होकर उन्होंने प्रसिद्ध रूप से चिल्लाया, ₹यूरेका जिसका अर्थ है ₹मुझे यह मिला

आर्किमेड्स का जीवन और कार्य आर्किमेडिस ने अपना अधिकांश जीवन साइराकुस में बिताया, जो सिसिली द्वीप पर एक ग्रीक शहर था। उन्होंने मिस्र के अलेक्जेंड्रिया में पढ़ाई की, जहां उन्होंने अन्य विद्वानों से मुलाकात की और अपने गणित ज्ञान का विस्तार किया।

व्यावहारिक समस्याओं को हल करने के लिए उनका जुनून कई आविष्कारों और वैज्ञानिक सिद्धांतों की ओर ले गया जो उनके समय से बहुत आगे थे। उन्होंने वास्तविक दुनिया की घटनाओं को समझाने के लिए गणित का उपयोग किया - फ्लोटिंग बॉडी से लेकर लीवरों की गति तक। लीवर का कानून - लिवर्स का उपयोग करके संतुलन और बल कैसे काम करता है।

फ्लोयेंसी का सिद्धांत - यह कहा गया है कि तरल पदार्थ में डूबे कोई भी वस्तु उस द्रव के वजन के बराबर ऊपर की शक्ति अनुभव करती है जिसे वह स्थानांतरित कर देती है।

गणितीय प्रमाण - सिद्धांतों को साबित करने के लिए तार्किक चरणों का उपयोग किया जाता है, जो गणित तर्क की आधारशिला बनाते हैं।

आर्किमेड्स की विरासत आर्किमेड्स की खोजों ने गणित और विज्ञान को समझने का तरीका बदल दिया। उनकी तार्किक और विश्लेषणात्मक विधियों ने इसहाक न्यूटन तथा गैलीलियो गल्ली जैसे बाद के गणितज्ञों को प्रभावित किया।

आज भी आर्किमेडियन सिद्धांतों का उपयोग इंजीनियरिंग, वास्तुकला और वैज्ञानिक अनुसंधान में किया जाता है। उनके आविष्कारों ने आधुनिक प्रौद्योगिकी की नींव बनाने वाली मशीनें, पॉलियों और भौतिक विज्ञान के शुरुआती विचारों को प्रेरित किया।

आर्किमेडिस केवल गणितज्ञ नहीं थे; वे एक विचारक थे जिन्होंने विज्ञान और गणित को वास्तविक दुनिया के अनुप्रयोगों से जोड़ा। उनके अभिनव दृष्टिकोण और अस्थायी खोजों ने उन्हें ₹गणित के पिता₹ का खिताब प्राप्त किया

सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार प्रतिष्ठित शिक्षाविद् गली कोर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

सोना इतना महंगा क्यों है?

सोना सदियों से एक मूल्यवान धातु रहा है, जिसे न केवल आभूषणों के लिए बल्कि निवेश और धन संचय के एक सुरक्षित साधन के रूप में भी देखा जाता है। हाल के वर्षों में, सोने की कीमतों में लगातार वृद्धि हुई है, जिससे यह सवाल उठता है कि सोना इतना महंगा क्यों है? इसके पीछे कई वैश्विक और घरेलू कारण जिम्मेदार हैं:

1. सोने की सीमित आपूर्ति और दुर्लभता

* प्राकृतिक दुर्लभता: सोना पृथ्वी की क्रस्ट (भूपर्पटी) में बहुत कम मात्रा में पाया जाता है। तांबे और चांदी जैसी धातुओं की तुलना में यह स्वाभाविक रूप से अधिक दुर्लभ है।

* उत्पादन की लागत: सोने को खानों से निकालना और फिर उसे शुद्ध करने की प्रक्रिया काफी जटिल और महंगी होती है। सीमित खनन स्थलों और महंगी प्रोसेसिंग के कारण भी इसकी कीमत बढ़ जाती है।

* अपरिवर्तनीय सीमा: सोने की आपूर्ति तेज़ी से नहीं बढ़ती है, भले ही कीमतें बढ़ जाएँ।

२. मांग में उच्च वृद्धि:

* आभूषणों और विलासिता की वस्तुओं में मांग: विशेष रूप से भारत जैसे देशों में, त्योहारों (जैसे धनतेरस, दिवाली) और शादियों के मौसम में सोने के आभूषणों और सिक्कों की मांग में भारी उछाल आता है।

* सुरक्षित निवेश के रूप में मांग: निवेशक सोने को एक 'सुरक्षित ठिकाना' (Safe Haven) मानते हैं। जब वित्तीय बाज़ारों में अस्थिरता होती है (जैसे शेयर बाज़ार में गिरावट, आर्थिक मंदी या भू-राजनीतिक तनाव), तो निवेशक अपने पैसे को सुरक्षित रखने के लिए सोने (गोल्ड ईटीएफ, डिजिटल गोल्ड या फिजिकल गोल्ड) में निवेश करते हैं, जिससे इसकी मांग और कीमत दोनों बढ़ जाती है।

३. वैश्विक आर्थिक और वित्तीय कारक

* मुद्रास्फीति के विरुद्ध बचाव: सोना अक्सर मुद्रास्फीति (महंगाई) के विरुद्ध एक अच्छा बचाव माना जाता है। जब मुद्रा का मूल्य गिरता है, तो लोग अपनी संपत्ति को सुरक्षित रखने के लिए सोने में निवेश करते हैं, जिससे इसकी मांग बढ़ जाती है।

* केंद्रीय बैंकों द्वारा खरीदारी: दुनिया भर के केंद्रीय बैंक, जिनमें भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) भी शामिल है, अस्थिर वैश्विक परिस्थितियों के बीच अपने गोल्ड रिजर्व को लगातार बढ़ा रहे हैं। केंद्रीय बैंकों की बड़ी खरीदारी वैश्विक स्तर पर सोने की कीमतों को प्रभावित करती है।

* अमेरिकी डॉलर का उतार-चढ़ाव और ब्याज दरें: सोने की कीमत और अमेरिकी डॉलर के बीच विपरीत संबंध होता है। जब डॉलर कमजोर होता है, तो सोना विदेशी खरीदारों के लिए सस्ता हो जाता है, जिससे इसकी मांग और कीमत बढ़ती है। साथ ही, जब अमेरिकी फेडरल रिजर्व द्वारा ब्याज दरें कम करने की उम्मीद होती है, तो भी सोने में तेजी आती है।

4. भू-राजनीतिक तनाव

जब भी दुनिया में कोई बड़ा भू-राजनीतिक तनाव (जैसे युद्ध या व्यापारिक विवाद) पैदा होता है, तो वैश्विक अनिश्चितता के कारण निवेशक सुरक्षित निवेश की तलाश में सोने की ओर रुख करते हैं, जिससे इसकी कीमतें तेज़ी से बढ़ जाती हैं।

5. आयात और विनिमय दर का प्रभाव

भारत अपनी अधिकांश सोने की मांग को पूरा करने के लिए आयात पर निर्भर करता है। ऐसे में, जब भारतीय रुपया अमेरिकी डॉलर के मुकाबले गिरता है, तो भारत में आयातित सोने की कीमत बढ़ जाती है, जिससे घरेलू बाजार में भी सोने के दाम बढ़ जाते हैं।

संक्षेप में, सोने की दुर्लभता, वैश्विक मांग, सुरक्षित निवेश के रूप में इसका ऐतिहासिक महत्व, भू-राजनीतिक तनाव और वैश्विक अर्थव्यवस्था की स्थिति जैसे कई कारक मिलकर इसे इतना महंगा बनाते हैं।

विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

जिंदगी का रंगमंच

जिंदगी एक ऐसा रंगमंच है, जहां हर दृश्य अनपेक्षित मोड़ लेता है। यह एक ऐसी किताब है, जिसके पन्ने पलटते ही कहानी बदल जाती है। हम कितनी भी योजना बना लें, जिंदगी अपनी पटकथा खुद लिखती है और आमतौर पर उसका हर मोड़ हमें हैरान कर देता है। जब हमें लगता है कि हम पूरी तरह तैयार हैं, तभी अचानक मंच गायब हो जाता है। अक्सर ऐसा होता है, जब हमारे भीतर आत्मविश्वास चरम पर होता है, तब मंच की रोशनी धीमी पड़ जाती है और हम खालीपन में खड़े रह जाते हैं। मगर शायद यही जिंदगी का मजा है और यह जिंदगी हमारे लिए हमेशा अचानक ही कोई तोहफा लेकर आती है और हमें चौंका देती है।

जब हार का डर मन में घर कर जाता है और हमें लगता है कि अब सब खत्म हो चुका है, तभी कुछ ऐसा होता कि अचानक ही जिंदगी हमें जीत का ताज पहना देती है। यह ऐसा है जैसे कोई अनजान खिलाड़ी आखिरी गेंद पर छक्का मार दे। हार की आशंका हमें मजबूत बनाती है, क्योंकि यह हमें सिखाती है कि असल में जीत उसी के हिस्से आती है जो हार से डरना छोड़ दे। जिंदगी का यह सबक है कि हर ठोकर आपको नया रास्ता दिखाती है। कभी-कभी, जब हमें अपनों की सबसे ज्यादा जरूरत होती है, तब वे साथ छोड़ देते हैं। यह दर्द भरा पल होता है, लेकिन यही वह समय है, जब हम अपने भीतर की ताकत को पहचानते हैं। अकेलापन हमें खुद से मिलवाता है। हम सीखते हैं कि दुनिया के बिना भी हमारा वजूद है। और जब हम अपने आंसुओं को सुखाना सीख लेते हैं, तभी कोई अनजाना कंधा हमें सहारा देने आ जाता है। यह जिंदगी का रहस्य है- जब आप तैयार नहीं होते, तब वह हमें सबसे सुंदर तोहफे देती है। जिंदगी का एक और मजेदार पहलू है उसका उल्टा गणित। जब हम नफरत करने की कला में माहिर हो जाते हैं, ठीक उसी वक्त कोई हमारे दिल में प्यार का दीप जला देता है। यह ऐसा है जैसे आपने अपने दिल को कवच में बंद कर लिया हो, लेकिन कोई चुपके से उसकी चाबी ले उड़े। प्यार, जो अनचाहा मेहमान बनकर आता है, हमें सिखाता है कि नफरत से ज्यादा बड़ा है प्यार। इससे बड़ा और ताकतवर कोई एहसास नहीं होता। यह जिंदगी का वह जादू है, जो हमें हर बार नया सबक देता है। और फिर आता है वह पल, जब हम घंटों अंधेरे में रोशनी का इंतजार करते-करते थक जाते हैं। हम हार मानकर सो जाते हैं और सोचते हैं कि अब कुछ नहीं बचा। लेकिन तभी, जैसे कोई चमत्कार हो, सूरज अपनी सुनहरी किरणों के साथ उग आता। यह जिंदगी का सबसे खूबसूरत सबक है कि जब हम उम्मीद छोड़ देते हैं, तब वह हमें सबसे बड़ा तोहफा देती है। यह हमें बताती है कि हर रात के बाद सुबह जरूर आती है, और हर तूफान के बाद सूरज की किरणें जरूर चमकती है।

जिंदगी की इस अनिश्चितता में ही उसका सुख है। हम कितनी भी योजना बना लें, जिंदगी हमेशा अपने नियमों से चलती है। आप सोचते हैं कि आपने सब कुछ तय कर लिया, लेकिन वह हंस कर आपकी सारी योजना उलट-पुलट कर देती है। यह एक ऐसा खेल है, जहां हम कभी पूरी तरह तैयार नहीं हो सकते। लेकिन यही इसकी खूबसूरती है। हर अनपेक्षित मोड़ यह हमें कुछ नया सिखाता है। हर असफलता हमको एक नई दुनिया से मिलवाती है, और हर सफलता हमें दुनिया का सितारा बनाती है। सफलता और असफलता जिंदगी के दो पहलू हैं, लेकिन असफलता की भूमिका कुछ ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। सफलता हमें तालियों और तारीफों से नवाजती है, लेकिन असफलता हमें असली दुनिया से रूबरू कराती है। यह हमें उन लोगों से ' मिलवाती है, जो हमारे साथ तब भी खड़े रहते हैं, जब हमारी जेबें खाली हों और मन उदास हो। असफलता हमें सिखाती है कि जिंदगी का असली मजा जीतने में नहीं, बल्कि कोशिश करने में है। यह हमें बताती है कि हर बार गिरने के बाद उठना ही असली जीत है।

जिंदगी का यह खेल हमें एक और बात सिखाता है- खुश रहना। चाहे कितने भी उतार-चढ़ाव आएं, खुशी को गले लगाना जरूरी है। जब सब कुछ खत्म लगता है, और हम सोचते हैं कि अब बस यही अंत है, तभी जिंदगी हमें
एक नया रास्ता दिखाती है। ऊपरवाला
या कुदरत मानो हंसकर कहता है,
'अरे, थोड़ा रुक, अंत नहीं, बस एक नया मोड़ है।' यह विश्वास हमें जिंदा रखता है। यह हमें सिखाता है कि हर मुश्किल के बाद आसानी है और हर अंधेरे के बाद उजाला। जिंदगी को एक मजेदार सैर की तरह लेना चाहिए। इसकी हर मोड़ का आनंद उठाना चाहिए। हारें, तो हंसें। जीतें, तो और मेहनत करें। प्यार करें, नफरत छोड़ें। और सबसे जरूरी, हमेशा उम्मीद रखा जाए कि जिंदगी चाहे जितनी बार भी चौंकाए, वह हमेशा हमें कुछ नया सिखाने के लिए तैयार रहती है। बस हम अपने दिल में एक छोटी-सी चिंगारी जलाए रखें, और देखें कैसे यह चिंगारी एक दिन बड़ा सूरज बनकर चमकती है। जिंदगी को खुलकर जीने की जरूरत है।

विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

दिल्ली एनसीआर और उत्तर भारत में साफ हवा खो गई: दिवाली और पराली का मिला-जुला असर!

दिल्ली-एनसीआर और उत्तर भारत में वायु प्रदूषण गंभीर समस्या बन गई है। एक प्रतिष्ठित हिंदी दैनिक में प्रकाशित एक खबर के अनुसार 'उत्तर भारत के अधिकांश राज्यों में वायु गुणवत्ता खतरनाक स्तर पर पहुंच गई। दिल्ली-एनसीआर के साथ लखनऊ, पटना, भोपाल, कानपुर, नोएडा, गाजियाबाद, जयपुर और चंडीगढ़ में धुंध की मोटी परत छाई रही। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अनुसार, कई शहरों में एक्यूआइ 400 से पार गया, जो 'गंभीर' श्रेणी में है। विशेषज्ञों ने कहा कि ठंडी हवाओं और आतिशबाजी के कारण प्रदूषक तत्व ऊपर नहीं उठ पाए, जिससे पूरे उत्तर भारत पर धुएं की चादर फैल गई।' दरअसल, सर्दियों में वायु प्रदूषण में वृद्धि कई कारणों से होती है। इस मौसम में धूप कम और तापमान ठंडा होने के कारण हवा स्थिर हो जाती है, जिससे धुआं और प्रदूषक कण हवा में फैल नहीं पाते और नीचे जमे रहते हैं। इसके अलावा,इस मौसम में लोग हीटर, कोयला और लकड़ी का अधिक उपयोग करते हैं, जिससे वातावरण में कणीय प्रदूषण बढ़ता है। उत्तर भारत में पराली जलाना भी सर्दियों में वायु प्रदूषण का बड़ा कारण बनता है। सड़क पर धूल और वाहनों से निकलने वाला धुआं भी हवा को और प्रदूषित करता है। धुंध और स्मॉग के कारण दृश्यता कम हो जाती है और श्वसन संबंधी बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। हर साल दीपावली के बाद धुआं, धूल और पराली जलाने से हवा जहरीली हो जाती है। लोगों को सांस लेने में तकलीफ, आंखों में जलन और बीमारियों का खतरा बढ़ता है। इसके लिए, सरकार और जनता दोनों को मिलकर समाधान के प्रयास करने चाहिए, जैसा कि स्वच्छ हवा ही स्वस्थ जीवन की सबसे बड़ी जरूरत है। त्योहार, पटाखे, स्थानीय उत्सर्जन और मौसम का मिश्रण, हमारे पर्यावरण पर कितना तीव्र प्रभाव डाल सकता है, हाल ही में इस बात का बखूबी पता चला। दरअसल, २० अक्टूबर २०२५ को दिवाली के बाद दिल्ली देश में सबसे प्रदूषित राजधानी हो गई। खबरों से पता चला है कि दिल्ली सहित उत्तर भारत के कई शहर 'गैस चैंबर' बन गए हैं। एक उपलब्ध जानकारी के अनुसार नई दिल्ली में २१ अक्टूबर को (मंगलवार) को प्रदूषण के कारण सिग्नेचर ब्रिज भी धुंध में डूब गया। दिवाली के तुरंत बाद, सेंट्रल पोल्यूशन कंट्रोल बोर्ड (सीपीसीबी) के आंकड़ों व विश्लेषणों के अनुसार, शहर में २४-घंटे के औसत पीएम २.५ (२.५ माइक्रोन या उससे छोटे कण) का मान लगभग 488 माइक्रोग्राम/घनमीटर रहा। दिवाली-रात के दौरान कुछ स्थानों पर पीएम २.५ ने 675 g/m तक पहुँचने का रिकॉर्ड दिखाया गया। एक्यूआइ(एयर क्वालिटी इंडेक्स) के मुताबिक दिल्ली-एनसीआर में अधिकांश इलाकों में 'बहुत खराब'(एक्यूआइ 300 से अधिक) श्रेणी में हवा थी। पाठकों को बताता चलूं कि दिवाली के दौरान पटाखों का इस्तेमाल प्रमुख कारण माना गया है। इस वर्ष स्टबल-बर्निंग (खेती की अवशेष जलाना) में लगभग 77 % कमी के बावजूद (पंजाब-हरियाणा में) हवा काफी बिगड़ी। इसके अलावा, रात में हवा धीमी थी, 'इन्वर्शन' की स्थिति बनी रही जिससे प्रदूषक नीचे ही फँसे रहे। वास्तव में, कहना ग़लत नहीं होगा कि दिवाली के उत्सव के बाद दिल्ली-एनसीआर सहित उत्तर भारत के कई राज्यों की हवा फिर खतरनाक स्तर पर पहुंच गई है। हवा के प्रदूषित (जहरीली होने) से लोगों को आंखों में जलन, गले में खराश और सांस लेने में परेशानी का सामना करना पड़ा। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के मुताबिक सोमवार को दिल्ली की वायु गुणवत्ता 'बहुत खराब' व 'गंभीर' श्रेणी में दर्ज की गई। राजधानी का एयर क्वालिटी इंडेक्स (एक्यूआइ) 531 तक पहुंच गया, जो स्वास्थ्य के लिए अत्यंत खतरनाक माना जाता है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार हरियाणा में सोमवार रात, दिवाली वाले दिन रात १२ बजे तक 15 जिलों में एक्यूआइ 500 तक पहुंच गया था। मुंबई के कई इलाकों में दिवाली के दिन एक्यूआइ 375 तक पहुंच गया। हालांकि, लोगों को मंगलवार को सुबह कुछ राहत मिली। राजस्थान में मंगलवार सुबह 8 बजे तक एक्यूआइ २४३ रहा। भिवाडी में राज्य में सबसे ज्यादा एक्यूआइ 318 रिकॉर्ड किया गया। भोपाल में मंगलवार को औसत एक्यूआइ 316 दर्ज किया गया,जो कि बहुत खराब श्रेणी में आता है। इतना ही नहीं, लखनऊ में २२२ और कानपुर में २०३ एक्यूआइ दर्ज किया गया। क्या यह बहुत ही गंभीर और संवेदनशील बात नहीं है कि नई दिल्ली में सीपीसीबी के ३८ निगरानी केंद्रों में से ३4 ने 'रेड जोन' यानी 'बहुत खराब' या 'गंभीर' स्तर दर्ज किया गया। नरेला में एक्यूआइ 551 दर्ज हुआ, जो सबसे अधिक रहा। अशोक विहार में एक्यूआइ 493 और आनंद विहार में 394 पर पहुंच गया। वहीं यूपी के नोएडा में ३69 और गाजियाबाद में 40२ का स्तर रेकॉर्ड किया गया, जो 'बहुत खराब' श्रेणी में आता है। गौरतलब है कि राजधानी में ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान ग्रैप-२ के नियम पहले से लागू है। इसके बावजूद हवा में जहरीले कणों की मात्रा बढ़ गई। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि हर वर्ष दीपावली के बाद दिल्ली-एनसीआर और उत्तर भारत में वायु प्रदूषण खतरनाक स्तर तक पहुंच जाता है। पटाखों से निकलने वाला धुआं और हानिकारक गैसें हवा में मिलकर सांस लेना मुश्किल बना देती हैं। दूसरी ओर, पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में जलने वाली पराली प्रदूषण को कई गुना बढ़ा देती है। इन दोनों कारणों से वातावरण में धूल, धुआं और सूक्ष्म कणों की मात्रा बढ़ जाती है। आसमान में धुंध की चादर छा जाती है, जिससे दृश्यता घट जाती है। बच्चों, बुजुर्गों और रोगियों को सांस से जुड़ी बीमारियां घेर लेती हैं। स्कूलों और दफ्तरों में उपस्थिति प्रभावित होती है। सरकार और न्यायालय हर साल अपील करते हैं कि लोग पटाखे न जलाएं और पराली न जलाएं। फिर भी जागरूकता की कमी के कारण यह समस्या दोहराई जाती है। अब समय आ गया है कि हम सब मिलकर स्वच्छ और हरित दीपावली का संकल्प लें।

दिल्ली सहित राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के अन्य इलाकों में वायु की गुणवत्ता 'बहुत खराब' श्रेणी में दर्ज किए जाने की स्थिति तब है, जब पिछले कई वर्षों से दिल्ली में प्रदूषण की समस्या को लेकर आम आदमी, विभिन्न एनजीओ, सरकारों व राजनीतिज्ञों द्वारा हर स्तर पर गंभीर चिंता जताई जाती रही है। गौरतलब है कि २०२५ के अक्टूबर महीने में, दिल्ली का एक्यूआइ (वायु गुणवत्ता सूचकांक) 'हैज़र्डस' श्रेणी में पहुँच गया था और एक नमूने में एक्यूआइ 44२ रिकॉर्ड हुआ था। रीयल-टाइम डेटा के अनुसार, कुछ इलाकों में पीएम २.5 २19 g/m और पीएम10 ३48.8 g/m तक दर्ज किया गया है। यहां उल्लेखनीय है कि वार्षिक औसत रूप से, दिल्ली में PM२.5 का स्तर राष्ट्रीय मानकों और विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू एच ओ) की गाइडलाइनों से कई गुना अधिक है। एक रिपोर्ट के अनुसार २०२५ के पहले आधे में दिल्ली में PM२.5 का औसत 87 g/m था। यह विश्व स्वास्थ्य संगठन की वार्षिक सीमा को बहुत पहले पार कर चुका था। आइक्यू एयर की २०२4 वर्ल्ड एयर क्वालिटी रिपोर्ट के अनुसार,दिल्ली फिर से दुनिया की सबसे प्रदूषित राजधानी घोषित की गई है। जानकारी के अनुसार दिल्ली का औसत PM२.5 स्तर ९२.7 g/m रहा। यह स्तर विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) की सुरक्षित सीमा (5 g/m) से लगभग 18 गुना अधिक है। यह बहुत ही गंभीर और संवेदनशील है कि भारत के 7 शहर दुनिया के टॉप-10 सबसे प्रदूषित शहरों में शामिल हैं, जिनमें दिल्ली सबसे ऊपर है। बहरहाल, विशेषकर दिल्ली में प्रदूषण रोकने के लिए दावे तो बहुत किए जाते हैं, लेकिन दिवाली के बाद हालात हर साल की तरह बिगड़ जाते हैं। सुप्रीम कोर्ट ने इस बार ग्रीन पटाखों की सीमित अनुमति दी थी, पर लोगों ने इसका भी दुरुपयोग किया। नतीजतन, दिल्ली सहित कई शहरों में वायु गुणवत्ता सूचकांक खतरनाक स्तर पर पहुंच गया। जानकारी के अनुसार दिल्ली में यह 991पर और लखनऊ में यह 1317 तक पहुंच गया। वास्तव में, यह स्थिति बताती है कि अदालतों के आदेश और सरकारी कदम केवल औपचारिक साबित हो रहे हैं। जनता का सहयोग न मिलना भी बड़ी वजह है। अधिकांश लोग मानते हैं कि यह सरकार की जिम्मेदारी है, जबकि प्रदूषण कम करने में नागरिक भागीदारी सबसे अहम है। पुलिस और प्रशासन के लिए यह व्यावहारिक रूप से संभव नहीं कि हर घर में निगरानी रख सके कि कौन से पटाखे चले। इसलिए आज ज़रूरत इस बात की है कि प्रदूषण रोकने के लिए समाज व आम आदमी खुद आगे आए। धार्मिक और सामाजिक नेताओं को भी लोगों को समझाना होगा कि पर्यावरण की रक्षा ही सच्ची पूजा है। कहना ग़लत नहीं होगा कि प्रदूषण अब केवल दिल्ली की नहीं, पूरे देश की समस्या बन चुका है। यह बात सही है कि आज के इस युग में प्रदूषण पर पूरी तरह से रोक लगा पाना तो संभव नहीं है, लेकिन इसे काफी हद तक कम जरूर किया जा सकता है। वास्तव में, दिल्ली-एनसीआर और उत्तर भारत में वायु प्रदूषण पर रोक लगाने के लिए कई प्रभावी उपाय किए जा सकते हैं। सबसे पहले, पराली जलाने पर सख्त प्रतिबंध लगाया जाए और किसानों को पराली प्रबंधन के लिए आधुनिक मशीनें व आर्थिक सहायता दी जाए। वास्तव में, पराली प्रदूषण से मुक्ति के लिए किसानों, सरकार और समाज को मिलकर प्रयास करना होगा। किसानों को पराली जलाने के बजाय उसका उपयोग खाद, जैव-ऊर्जा या चारे के रूप में करना चाहिए। सरकार को, जैसा कि ऊपर बता चुका हूं कि पराली प्रबंधन मशीनों पर सब्सिडी और जागरूकता अभियान बढ़ाने चाहिए। आज के इस दौर में पर्यावरण के प्रति संवेदनशील तकनीकों को बढ़ावा देना बहुत ही जरूरी और आवश्यक है। स्कूलों और पंचायत स्तर पर जागरूकता फैलाकर लोगों को इसके दुष्प्रभाव बताए जाने चाहिए। वैज्ञानिक तरीकों से पराली का पुनर्चक्रण किया जा सकता है। यदि हर किसान जिम्मेदारी से कदम उठाए तो हवा फिर से स्वच्छ हो सकती है। सामूहिक प्रयास से ही पराली प्रदूषण से मुक्ति संभव है। दूसरा, वाहनों से निकलने वाले धुएं को नियंत्रित करने के लिए पुराने वाहनों को हटाया जाए, इलेक्ट्रिक वाहनों और सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा दिया जाए। इतना ही नहीं, आज के समय में ऊर्जा के नवीकरणीय स्रोतों जैसे सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, जल ऊर्जा और बायो ऊर्जा के उपयोग से प्रदूषण में उल्लेखनीय कमी लाई जा सकती है। ये स्रोत प्राकृतिक हैं और इनसे कार्बन डाइऑक्साइड, धुआं या हानिकारक गैसें उत्सर्जित नहीं होतीं। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज के समय में विद्यालयों, कार्यालयों और आवासीय क्षेत्रों में स्वच्छ ऊर्जा स्रोतों जैसे सौर ऊर्जा के उपयोग को प्रोत्साहन देना भी आवश्यक है। दरअसल पारंपरिक ऊर्जा स्रोत जैसे कोयला, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस जलाने से वायु प्रदूषण और ग्लोबल वार्मिंग बढ़ती है, जबकि नवीकरणीय ऊर्जा से स्वच्छ और हरित वातावरण बनता है। इसके उपयोग से न केवल पर्यावरण की रक्षा होती है, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों को सुरक्षित और स्वस्थ जीवन भी मिलता है। इसलिए ऊर्जा के नवीकरणीय स्रोतों को अपनाना समय की आवश्यकता है। तीसरा, निर्माण कार्यों और धूल प्रदूषण पर नियंत्रण के लिए निर्माण स्थलों पर जालियां लगाना और पानी का छिड़काव जरूरी है। चौथा, औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाले धुएं और रासायनिक उत्सर्जन पर निगरानी रखी जाए और प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों पर जुर्माना लगाया जाए। पाँचवां, हरे-भरे पेड़-पौधों का अधिकाधिक रोपण किया जाए, ताकि हवा में ऑक्सीजन का स्तर बढ़ सके। साथ ही, दीवाली जैसे त्योहारों पर पटाखों की जगह ग्रीन पटाखों या वैकल्पिक उत्सवों को बढ़ावा देना चाहिए। यहां पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि ग्रीन पटाखे पारंपरिक पटाखों की तुलना में पर्यावरण के लिए कम हानिकारक होते हैं। इनमें सल्फर और नाइट्रेट जैसे हानिकारक रसायनों की मात्रा बहुत कम होती है। ये कम धुआं और शोर उत्पन्न करते हैं, जिससे वायु और ध्वनि प्रदूषण घटता है। ग्रीन पटाखों में इस्तेमाल किए गए रसायन जल्दी विघटित हो जाते हैं। इससे हवा में जहरीले कणों की मात्रा नहीं बढ़ती। इनसे बच्चों और बुजुर्गों को सांस संबंधी समस्याएं कम होती हैं। ग्रीन पटाखे पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक सकारात्मक पहल हैं। इसके साथ ही वायु प्रदूषण नियंत्रण के लिए सरकार को वायु गुणवत्ता निगरानी तंत्र को और मजबूत बनाना चाहिए तथा लोगों को जनजागरूकता अभियानों के माध्यम से प्रदूषण रोकने के उपायों के प्रति शिक्षित करना चाहिए। इसके अलावा, मेट्रो, साइकिल ट्रैक और कारपूलिंग को बढ़ावा देकर निजी वाहनों की संख्या घटाना, कचरा जलाने पर प्रतिबंध लगाना, और शहरों के आसपास हरित पट्टी विकसित करना भी जरूरी कदम हैं। हमें यह चाहिए कि हम प्रदूषण फैलाने वाली परंपराओं को भी हम त्यागें। यदि ये सभी उपाय ईमानदारी से लागू किए जाएं, तो दिल्ली-एनसीआर और उत्तर भारत की हवा फिर से स्वच्छ और जीवनदायी बन सकती है। आखिरकार, स्वच्छ हवा में सांस लेना हर नागरिक का अधिकार और कर्तव्य दोनों है।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

बिहार का चुनाव असमंजस का दौर

बिहार के प्रथम दौर का नामांकन समाप्ति पर है लेकिन फिर भी किसी भी गठबंधन की तस्वीर स्पष्ट नहीं है !

महागठबंधन में कुछ सीटों को लेकर पेच फस रहा है, वैसे कल जो राजद की लिस्ट आई है, उसमें कुटुंबा सीट पर उम्मीदवार नहीं दिया है जो कांग्रेस के अध्यक्ष राजेश राम की सीट है ! कुछ सीटों पर जो फ्रेंडली फाइट है प्रथम दृष्टया वह स्ट्रैटेजिक है क्योंकि इसमें महा गठबंधन के एक दल का उम्मीदवारमहा गठबंधन के दूसरे दल के उम्मीदवार को लाभ करता हुआ नजर आ रहा है !

लेकिन 5-6 सीटों में जहां फ्रेंडली फाइट है कुछ सीट महा गठबंधन को खोनी पड़ सकती है ! NDA मैं भी ऊपर से तो आल इज वेल नजर आ रहा है लेकिन अंदर खाने दलों में विश्वसनीयता का अभाव है ! चिराग वाली सीटों पर जनता दल यूनाइटेड की स्थिति विश्लेषण का विषय रहेंगी वही प्रशांत किशोर का जो 7_8% वोटो का परसेप्शन बन रहा है, वह जनता दल यूनाइटेड के उम्मीदवारों को नुकसान पहुंचाता नजर आ रहा है !

लड़ाई बहुत करीब की नजर आ रही है क्योंकि 33% MY समीकरण के अलावा कुछ अन्य दलित ओबीसी ईबीसी का वोट महा गठबंधन की ओर शिफ्ट होता नजर आ रहा है !

बिहार की राजनीतिक फिजाओं में नीतीश को लेकर असमंजस का वातावरण है, बिहार के राजनीतिक जानकारों का मानना है की क्योंकि एनडीए ने नीतीश का फेस मुख्यमंत्री पद के लिए प्रस्तावित नहीं किया है इसलिए यदि नीतीश 50 सीट भी लेकर आ गए तो बारगेनिंग कर सकते हैं !

पलटू राम जी के पलटने का खेल सारा देश जानता है और इसी आधार पर कुछ विश्लेषक यह मानते हैं की 95 सीटों पर तो जहां पर जनता दल यूनाइटेड और महागठबंधन के राजद ,कांग्रेस और कम्युनिस्ट के उम्मीदवार सामने है वह 95 सीट तो इस स्थिति में नीतीश के लिए कंफर्म है, बची हुई 160 सीटों में से इन चारों दलों को सिर्फ 27 सीट और चाहिए, जनता दल यूनाइटेड, राजद कांग्रेस और कम्युनिस्टको जो मुश्किल कार्य नहीं है !

एक बात और है यदि भारतीय जनता पार्टी परोक्ष रूप से कहीं नीतीश को डेंट करती नजर आई तो नीतीश का भी एक समर्थक वर्ग है जो महागठबंधन के साथ खड़ा हो सकता है ! बिहार का चुनाव जब तक अंतिम दौर में नहीं आ जाता तब तक कुछ भी भविष्यवाणी करना असंभव है और वैसे भी स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन को लेकर जो माहौल बनाया गया था जमीन पर लोगों में उसका असर नहीं नजर आ रहा है !

बदायूं शहर की खेड़ा नवादा पुलिस चौकी से मात्र 2 किलो मीटर की दूरी पर गौ कशी के बड़ी मात्रा में सबूत मिले गोरक्षको ने गौ शव रख कर किया हाईवे जाम

परिवहन विशेष न्यूज

बदायूं : यह हिंदूवादी संगठन के लोग हैं इन्होंने आज बदायूं में बरेली हाईवे पर गाय का कटा हुआ सर रखकर प्रदर्शन किया है... ! इनका कहना है कि गोकशी की घटना की पक्के सबूत हैं.... !

लेकिन सवाल सबसे बड़ा यही है कि आखिर किसके संरक्षण में गोकशी की घटना को अंजाम दिया जा रहा है.....

गोकशी करने वालों में आखिर इतनी हिम्मत कहां से आ रही है इस योगी सरकार में...

डीएम और एसएसपी कार्यालय से चंद किलोमीटर की दूरी पर गोकशी की घटना हो जाती है....

गोवंश के अवशेष मिलते हैं हिंदूवादी संगठन के लोग गाय का कटा हुआ सर हाईवे पर रखकर प्रदर्शन करते हैं...

घटना पुलिस चौकी के करीब की बताई जा रही है.... !

हम दिवाली मना रहे थे और वह गोकशी की घटना को अंजाम दे थे... ऐसा बताया जा रहा है... !

यह घटना बताती है कि शासन और प्रशासन कितना मुस्तैद है..... !

प्रशासन के लिए तो यह बड़ी शर्मनाक घटना है...

देखते हैं पुलिस प्रशासन के अधिकारियों का क्या जवाब आता है.... !

इससे पहले सहसवान में बड़ी गोकशी की घटना हुई थी कई गोवंश के अवशेष मिले थे और उसमें हाफ एनकाउंटर भी हुआ था...

लेकिन अब बदायूं में घटना हुई है आखिर डर क्यों नहीं है पुलिस का यह सोचने वाली बात है...

राजशाही नहीं, लोकतंत्र चाहिए

मयूख बिस्वास, अनुवाद : संजय पराते

रवींद्रनाथ टैगोर की कविता "इस राज्य में हम सब राजा हैं" (आमरा सबै राजा आमदेर ए राजार राजोत्वे) का मूल सिद्धांत यह है कि एक सच्चे लोकतंत्र में प्रत्येक व्यक्ति एक संप्रभु शासक होता है। यह सिद्धांत संयुक्त राज्य अमेरिका में समकालीन अभिव्यक्ति पा रहा है। जहाँ एक ओर, अमेरिकी सरकार गाजा से लेकर वेनेजुएला तक अपनी साम्राज्यवादी आक्रामकता थोप रही है, वहीं दूसरी ओर, उसके नागरिक ट्रम्प प्रशासन के खिलाफ विरोध की एक नई लहर के साथ सड़कों पर उतर आए हैं। यह आक्रोश 19 अक्टूबर को चरम पर पहुँच गया, जब "नो किंग्स" आंदोलन ने हाल के अमेरिकी इतिहास के सबसे बड़े प्रदर्शनों में से एक का आयोजन किया, जिसमें पूरे संयुक्त राज्य में 70 लाख से अधिक लोगों ने भाग लिया। वाशिंगटन डी.सी., न्यूयॉर्क, बोस्टन, शिकागो, अटलांटा आदि जैसे प्रमुख शहरों सहित सभी 50 राज्यों में २,700 स्थानों पर हुए इन विरोध प्रदर्शनों का आयोजन आम नागरिकों के एक गठबंधन द्वारा किया गया था। "नो किंग्स" आंदोलन सभी दमनकारी और तानाशाह शासकों के विरोध में खड़ा है, और प्रत्यक्ष लोकतंत्र और पारस्परिक सहायता के सिद्धांतों पर आधारित है। यहाँ तक कि द न्यू यॉर्क टाइम्स ने भी इन विरोध प्रदर्शनों पर रिपोर्ट करते हुए कहा, "ज़्यादातर जगहों पर माहौल (ट्रंप के प्रति) असम्मानजनक था, लेकिन शांतिपूर्ण और परिवार-अनुकूल था। बहरहाल, सभी उद्देश्य स्पष्ट था। हर जगह, हर भीड़ ने एक ही मंत्र साझा किया : कोई राजा नहीं।" संदेश स्पष्ट था, 'अमेरिका का कोई राजा नहीं होगा।'

यह पहली बार नहीं है, जब ट्रंप विरोधी इतने ज़ोरदार प्रदर्शन हुए हों। पहला "नो किंग्स डे" इस साल 14 जून को आयोजित किया गया था, जिसे रणनीतिक रूप से वाशिंगटन डी.सी. में एक सैन्य परेड के साथ मेल खाने के लिए समयबद्ध किया गया था, जिसमें अमेरिकी सेना की २५०वीं वर्षगांठ और राष्ट्रपति ट्रंप का जन्मदिन दोनों मनाया गया था। आयोजकों ने इस अवसर का उपयोग सैन्यवाद और सत्ता के एकीकरण के एक खतरनाक तमाशे के विरोध में किया। हाल ही में अक्टूबर में हुआ विरोध प्रदर्शन उसी पहले की कार्रवाई का एक सीधा विस्तार था, जिसमें "नो किंग्स", "तानाशाह मुर्दाबाद" और "संविधान बचाओ" जैसे नारे एक बार फिर पूरे देश में गूंज रहे थे।

18 अक्टूबर को हुए इस कार्यक्रम को "नो किंग्स II" नाम दिया गया था। यह कार्यक्रम दूसरी बार इसी बैनर के नीचे आयोजित किया जा रहा था और व्यापक पैमाने पर इसे विरोध प्रदर्शन के रूप में प्रचारित किया गया था। यह उन्हीं विषयों को जारी रखता है — लोकतांत्रिक जवाबदेही की माँग, नागरिक स्वतंत्रता की रक्षा, सत्ता के दुरुपयोग का विरोध, और समर्थकों द्वारा "धीरे-धीरे बढ़ती तानाशाही" के रूप का विरोध। यह बढ़ता हुआ आंदोलन निस्संदेह ट्रम्प प्रशासन के लिए काफी परेशानी का सबब है।

इस संघर्ष की गूंज सीनेटर बर्नी सैंडर्स द्वारा प्रभावशाली ढंग से व्यक्त की गई, जिन्होंने विरोध प्रदर्शन में बोलते हुए, इस आंदोलन की तुलना 1776 की अमेरिकी क्रांति से की। उन्होंने भीड़ को याद दिलाया कि एक समय लोगों को राजा के शासन से मुक्त होने के लिए पृथ्वी की सबसे शक्तिशाली सेना से लड़ना पड़ा था।

ट्रंप के खिलाफ बढ़ता गुस्सा फूट पड़ा

डोनाल्ड ट्रंप के खिलाफ जनता का गुस्सा पूरे अमेरिका में बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शनों में बदल गया है। इस साल की शुरुआत ट्रंप के पूर्व सहयोगी एलन मस्क द्वारा जन छंटनी के खिलाफ बड़े पैमाने पर हुए विरोध प्रदर्शनों से हुई थी, और उसके बाद जून में राष्ट्रपति द्वारा आयोजित एक सैन्य परेड के खिलाफ विरोध प्रदर्शन हुए थे, लेकिन हाल ही में शनिवार को हुई रैली ने इन सभी को पीछे छोड़ दिया है। आयोजकों का दावा है कि यह अब तक की सबसे बड़ी रैली है।

लाखों लोग ट्रम्प प्रशासन के अलोकतांत्रिक आचरण, कई शहरों में सैनिकों की तैनाती, आव्रजन-विरोधी छापे, संघीय अधिकारों के हनन, संवैधानिक उल्लंघन, लगभग २00,000 सरकारी कर्मचारियों की नियोजित छंटनी और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर लगातार हमलों जैसी कई शिकायतों के विरोध में सड़कों पर उतर आए हैं। इन विरोध प्रदर्शनों का नेतृत्व वामपंथी दलों, श्रमिक संगठनों और नागरिक मंचों के गठबंधन द्वारा किया जा रहा है।

दमन और आव्रजन छापों ने आग में घी डालने का काम किया

यह गहरी विडंबना है कि डोनाल्ड ट्रंप की कठोर आव्रजन नीतियां खुद उनके पारिवारिक इतिहास के खिलाफ जाती है। वे स्वयं एक अप्रवासी के बेटे और एक प्राकृतिक नागरिक के पति हैं। इस रूप में ट्रंप की विरासत विरोधाभासी रूप से उन्हीं अप्रवासी यात्राओं में निहित है, जिन्हें आज उनका प्रशासन बाधित करने की कोशिश कर रहा है। बहरहाल, उनकी नीतियों को एक सोची-समझी क्रूरता के रूप में परिभाषित किया गया है, जिसकी कई आलोचकों ने अमानवीय कहकर व्यापक रूप से निंदा की है। कईयों ने इसे सबसे ज्यादा कुख्यात "शून्य-सहिष्णुता" नीति बताया है, जिसने हज़ारों प्रवासी बच्चों को उनके माता-पिता से जबरन अलग कर दिया है और उन्हें पिंजरे जैसी स्थिति में बंद कर दिया है। मुस्लिमों की यात्राओं पर प्रतिबंध, शरणार्थियों के प्रवेश में भारी कमी और हिरासत शिविरों के विस्तार ने इसे और भी जटिल बना दिया। ट्रंप के इन कदमों ने सामूहिक रूप से अमेरिका की तस्वीर एक ऐसे राष्ट्र के रूप में पेश की है, जो शरण या बेहतर जीवन चाहने वालों के प्रति शत्रुतापूर्ण है। यह दृष्टिकोण उस अमेरिकी अप्रवासी आख्यान के साथ एक गहरा विश्वासघात है, जिसका सीधा लाभ उनके अपने परिवार को भी मिला था। ट्रंप की इन नीतियों ने एक ऐसा अलगाव पैदा किया है, जिसने उनकी नीतियों को एक व्यावहारिक शासन के रूप में नहीं, बल्कि सबसे कमजोर लोगों को लक्ष्य बनाकर हमला करने वाले शासन के रूप में प्रस्तुत किया है।

आम जनता के आक्रोश का एक प्रमुख कारण है -- हाल के महीनों में लॉस एंजिल्स और शिकागो जैसे शहरों में ट्रंप प्रशासन द्वारा संघीय बलों की विवादास्पद तैनाती। इसकी व्यापक रूप से आलोचना की गई है और इसे अवैध और लोकतांत्रिक असहमति को बलपूर्वक दबाने का प्रयास बताया गया है। इसके अलावा, आव्रजन और सीमा शुल्क प्रवर्तन (आईसीई) ने गैर-श्वेत इलाकों में आक्रामक छापेमारी की है, और इन्हीं शहरों से आए प्रदर्शनकारियों की उपस्थिति ने राष्ट्रीय रैली में एक शक्तिशाली व्यक्तिगत आयाम जोड़ दिया है।

मज़दूर और शिक्षक भी मैदान में उतरे

"नो किंग्स" विरोध प्रदर्शन में ट्रेड यूनियनों की भारी भागीदारी देखी गई। इसमें सबसे आगे और केंद्र में अमेरिकन फेडरेशन ऑफ टीचर्स था, जो एक शक्तिशाली शिक्षक संघ है। यह भागीदारी आश्चर्यजनक नहीं है, क्योंकि राष्ट्रपति ट्रम्प ने पदभार ग्रहण करने के तुरंत बाद शिक्षा विभाग को भंग करने के अपने मंसूबे की घोषणा की थी। उन्होंने "वामपंथियों" पर पाठ्यक्रम को नियंत्रित करके स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों पर अनुचित प्रभाव डालने के लिए इस विभाग का उपयोग करने का आरोप लगाया था। भारत में संघी नेताओं ने भी ऐसी ही बयानबाज़ी की। शैक्षणिक संस्थानों को मिलने वाले संघीय अनुदान में कटौती के फैसले का सीधा असर सभी शिक्षकों के वेतन में कमी के रूप में सामने आया है और इसके कारण व्यापक विरोध प्रदर्शन हुए हैं।

हम पुलिस दमन और ट्रम्प प्रशासन की धमकियों के बावजूद गाजा में जनसंहार के खिलाफ अमेरिकी विश्वविद्यालयों में हुए व्यापक विरोध प्रदर्शनों को भी याद कर सकते हैं।

असंतोष शहरों से आगे भी फैला

इस विरोध प्रदर्शन में संगठित सरकारी कर्मचारियों की भी भारी उपस्थिति देखी गई। इस विरोध प्रदर्शन में युवाओं, महिलाओं और एलजीबीटी समुदाय के सदस्यों ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया। यह आंदोलन केवल शहरी केंद्रों तक ही सीमित नहीं रहा, बल्कि ग्रामीण और कृषि क्षेत्रों में भी इसकी गहरी प्रतिक्रिया देखी गई। ट्रम्प प्रशासन की आर्थिक नीतियों के कारण अस्थिरता का सामना कर रहा अमेरिकी कृषि क्षेत्र असंतोष की आग में खौल रहा है। इसके बावजूद कि किसान और ग्रामीण मतदाता ट्रम्प के चुनाव अभियान के दौरान उनके सबसे वफादार समर्थकों में से थे, अब उनके प्रशासन ने सरकारी सब्सिडी में कटौती के संकेत दिए हैं, जिससे वे विरोध प्रदर्शनों में शामिल हो रहे हैं।

तानाशाही रणनीति का एक पैटर्न

सत्ता संभालने के बाद से, डोनाल्ड ट्रम्प और उनका प्रशासन विरोधी राजनीतिक दलों, राज्य सरकारों, नगरपालिका अधिकारियों और स्वायत्त संस्थाओं को कमज़ोर करने के लिए आक्रामक रूप से कदम उठा रहे है। "अवैध घुसपैठियों" पर कार्रवाई की आड़ में, सीमा शुल्क प्रवर्तन (आईसीई) अधिकारियों ने कई शहरों में गुंडों की तरह काम किया है। लंबे समय से रह रहे अप्रवासी मजदूरों को, जो दशकों से अमेरिका में है, अचानक निर्वासित किया जा रहा है। प्रशासन ने प्रमुख पदों पर अपने वफादारों की नियुक्ति करके, खुलेआम भाई-भतीजावाद किया है, और व्हाइट हाउस ने अपने राजनीतिक विरोधियों द्वारा शासित शहरों और राज्यों में संघीय सैनिकों को तैनात किया है।

गतिरोध में फंसी सरकार

अतिरिक्त खर्चों में कटौती के नाम पर, प्रशासन ने हज़ारों सरकारी कर्मचारियों की छंटनी शुरू कर दी है। यह विडंबनापूर्ण है कि ट्रम्प के निजी आवासों के नवीनीकरण और सौंदर्यीकरण के लिए लाखों डॉलर आबंटित किए गए हैं। इस बीच, प्रशासन का प्रस्तावित बजट अमेरिकी सीनेट में बहुमत हासिल करने में विफल रहा, जिसके परिणामस्वरूप राजनीतिक गतिरोध पैदा हो गया है और सरकारी कामकाज पूरी तरह से ठप्प हो गया है। इसके कारण लगभग २० लाख सरकारी कर्मचारियों का वेतन रुक गया है, विभिन्न सामाजिक कार्यक्रम रद्द कर दिए गए हैं, और शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और जलवायु परिवर्तन से संबंधित विभागों को बंद कर दिया गया है।

जनता के गुस्से पर प्रशासन का पलटवार

आम जनता गुस्से के जवाब में, शीर्ष प्रशासनिक अधिकारियों और रिपब्लिकन नेताओं ने प्रदर्शनकारियों पर तीखे हमले किए हैं और विपक्ष पर अराजकता फैलाने के लिए छंटनी को हथियार के तौर पर इस्तेमाल करने का आरोप लगाया है। बहरहाल, अमेरिकी जनता कुछ और ही कहानी बयां करती है। उनके नज़रिए से, लोग ट्रंप प्रशासन के मनमानीपूर्ण तौर तरीके, घोर अलोकतांत्रिक रवैये और खिझाने वाले व्यवहार से नाराज़ हैं। आर्थिक संकट को दूर करने के बड़े-बड़े वादों पर चुनाव प्रचार करने वाले ट्रंप अपने वादे पूरे करने में नाकाम रहे हैं। इसके बजाय, उनकी "क्रांतिकारी" टैरिफ नीतियों ने आपूर्ति श्रृंखला की समस्याओं को जन्म दिया है और ज़रूरी वस्तुओं की कीमतों में भारी उछाल ला दिया है।

अति-दक्षिणपंथी प्रतिक्रिया

शनिवार के विरोध प्रदर्शनों को लेकर दहशत फैलाने की कोशिश में, ट्रंप समर्थक एक पारंपरिक अति-दक्षिणपंथी रणनीति अपना रहे हैं : वे साम्यवाद के खिलाफ अमेरिका के मन में गहरे-पैठे डर का फायदा उठाने की कोशिश कर रहे हैं। इसके अलावा, वे प्रदर्शनकारियों को "हमास समर्थक" और "अमेरिका से नफ़रत करने वाले" करार दे रहे हैं, जबकि ट्रंप प्रशासन के एक पूर्व अधिकारी ने सभी प्रदर्शनकारियों पर "वामपंथी आतंकवादी" होने का आरोप लगाया है।

अति-दक्षिणपंथी सीनेटर टेड क्रूज़ ने सोशल मीडिया पर बेबुनियाद दावा किया है कि "नो किंग्स" विरोध प्रदर्शन अमेरिकी कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा आयोजित किए गए थे। उन्होंने आगे यह भी आरोप लगाया कि विपक्षी नेता इन रैलियों में उग्र वामपंथियों को खुश करने के लिए भाषण दे रहे हैं और अपने राजनीतिक लाभ के लिए, सरकार द्वारा की जाने वाली संभावित छंटनी का फायदा उठा रहे हैं। ऐसा लगता है कि वामपंथियों का पुराना डर अब भी उन्हें सता रहा है।

रिपब्लिकन नेताओं ने और कई भद्दे तरीकों से प्रतिक्रिया दी है और एआई से बनाई, विचलित करने वाली कई तस्वीरें भी साझा की हैं। सबसे भयावह तस्वीर खुद ट्रंप ने साझा की है : एक लड़ाकू विमान की तस्वीर, जिसमें ताज पहनकर ट्रंप बैठे हुए हैं और "नो किंग्स" प्रदर्शनकारियों पर भारी मात्रा में मल से बमबारी करते दिख रहे हैं।

मोदी और ट्रंप : एक ही थैली के चट्टे-बट्टे

नरेंद्र मोदी और डोनाल्ड ट्रंप की राजनैतिक परियोजनाओं में अनोखी समानता है, क्योंकि ऐसा लगता है कि भारतीय प्रधानमंत्री ने अमेरिकी राष्ट्रपति द्वारा अपनाई गई रणनीति से बिल्कुल मिलती-जुलती रणनीति अपनाई है। दोनों ही समकालीन अति-दक्षिणपंथ के तत्वों को समेटे ऐसे व्यक्तित्व हैं, जो जातीय-धार्मिक राष्ट्रवाद में नफरत को मिलाकर एक विस्फोटक बनाते हैं और इस मिश्रण का लाभ उठाते हैं। उनकी विचारधाराएँ मूलतः फासीवाद में निहित हैं -- ट्रंप के लिए, यह श्वेत-केंद्रित "अमेरिका फर्स्ट" राष्ट्रवाद है, जबकि मोदी के लिए, यह "हिंदुत्व" राष्ट्रवाद है -- जो व्यवस्थित रूप से धार्मिक अल्पसंख्यकों, विशेषकर मुस्लिमों को, आंतरिक खतरे और आक्रमणकारी के रूप में चित्रित करता है। उनकी साझा इस्लामोफोबिक और ज़ेनोफोबिक बयानबाजी, जो प्रवासियों और अल्पसंख्यकों को देश के सांस्कृतिक और सामाजिक ताने-बाने को नष्ट करने वाले अपराधियों के रूप में चित्रित करती है, उनके राजनीतिक एजेंडे के लिए एक केंद्रीय स्तंभ के रूप में कार्य करती है। इसके अलावा, उनके शासन भी एक ही तरीके से काम करते हैं : उन दोनों की नीतियाँ आक्रामक रूप से कॉर्पोरेट-समर्थक हैं, बड़े व्यवसायों का पक्ष लेती हैं और मजदूरों तथा ट्रेड यूनियनों के अधिकारों को खत्म करती हैं। प्रेस और न्यायपालिका सहित सभी लोकतांत्रिक संस्थाओं पर गहरा हमला और स्वास्थ्य एवं शिक्षा जैसी सार्वजनिक सेवाओं का जानबूझकर क्षरण इसे और भी जटिल बना देता है। अंततः, दोनों ही नेता एक ऐसे आधुनिक तानाशाही नीति के उदाहरण हैं, जहाँ लोकतंत्र को भीतर से खोखला कर दिया जाता है और उसकी जगह एक विभाजनकारी, व्यक्तित्व-चालित राजनीति ले लेती है, जो निरंतर सांस्कृतिक युद्ध पर फलती-फूलती है।

उभरता विकल्प

ट्रम्पवाद का एक जीवंत और आशाजनक विकल्प ज़ोर पकड़ रहा है। इस आंदोलन का नेतृत्व राजनेताओं की एक नई पीढ़ी कर रही है, जो विरोध को वास्तविक शक्ति में बदल रही है और इस बात को नए सिरे से परिभाषित कर रही है कि राजनीतिक रूप से क्या संभव है।

इस मामले में सबसे आगे न्यूयॉर्क राज्य विधानसभा के सदस्य ज़ोहरान ममदानी जैसे जुझारू व्यक्ति हैं, जो इस बदलाव को सिर्फ़ शब्दों से नहीं, बल्कि अपने कार्यों से साकार करते हैं। डेमोक्रेटिक सोशलिस्ट ममदानी और राज्य सीनेटर जबारी ब्रिसपोर्ट और संसद सदस्या समर ली जैसे उनके सहयोगी सिर्फ़ दक्षिणपंथ का विरोध करने तक सीमित नहीं है, बल्कि उससे कहीं आगे जाते हैं। उनका दृष्टिकोण परिवर्तनकारी है। ममदानी सिर्फ़ भाषण नहीं देते ; वे अपने पद का इस्तेमाल किरायेदारों को संगठित करके लापरवाह मकान मालिकों से मुकाबला करने और आवास संबंधी अन्याय को सीधे चुनौती देने के लिए करते हैं। उन्होंने धन के पुनर्वितरण और सार्वजनिक क्षेत्र के विस्तार पर केंद्रित कई साहसिक सुधारों का प्रस्ताव रखा है। इनमें किराया-मुक्त बसें, शहर के स्वामित्व वाली किराना दुकानें, बच्चों की मुफ़्त देखभाल और सार्वजनिक रूप से वित्तपोषित किफ़ायती आवास का व्यापक विस्तार आदि शामिल हैं -- ये सभी ऐसे मुद्दे हैं, जो न्यूयॉर्क के मज़दूर वर्ग की तात्कालिक ज़रूरतों को संबोधित करते हैं। उनके इस अभियान ने इन भौतिक मुद्दों और उनके प्रस्तावित समाधानों पर उत्साहपूर्ण और सुलभ तरीके से बात करने के लिए चतुर और आकर्षक सोशल मीडिया का इस्तेमाल किया है। यह नई राजनीतिक नस्ल समझती है कि क्वींस की सड़कों से लेकर गाज़ा तक, ये संघर्ष आपस में जुड़े हुए हैं। उन्होंने "आवास गारंटी" के लिए संघर्ष किया है और साथ ही, इज़राइली सेना से सार्वजनिक धन वापस लेने के लिए दबाव बनाने का भी प्रयास किए हैं। ऐसा करके, वे साबित करते हैं कि साहसिक और नैतिक स्पष्टता की राजनीति चुनाव जीत सकती है और मज़दूर वर्ग को वास्तविक विजय दिला सकती है।

निराशा का एक शक्तिशाली प्रतिकार है उनकी सफलता, जो यह दर्शाती है कि बहुजातीय और समाजवादी विचारधारा वाला आंदोलन कोई दूर का सपना नहीं है, बल्कि एक उभरती हुई शक्ति है।

(लेखक स्टूडेंट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया - एसएफआई के पूर्व महासचिव हैं। अनुवादक अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध छत्तीसगढ़ किसान सभा के उपाध्यक्ष हैं। संपर्क : 94242-31650)

वृक्षारोपण महाकुंभ

आज हम विकास की बात करते हैं और विनाश की ओर जल्दी-जल्दी चल रहे हैं विकास ऊंची ऊंची बिल्डिंग, कंक्रीट का रोड, मेट्रो ट्रेन, मोनो रेल, वंदे भारत ट्रेन, बुलेट ट्रेन यह है विकास. विकास का हम विरोध नहीं करते लेकिन इसके निर्माण के लिए काटे गए वृक्ष और जंगल को अनदेखा करना ही हमें विनाश की ओर ले जा रहा है अगर हमें इस विनाश से बचाना चाहते हैं तो विकास के साथ साथ ही एक बहुत बड़ा वृक्षारोपण महाकुंभ का आयोजन होना चाहिए. भारत देश के विकास पुरुष माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में इसका आयोजन किया जाना चाहिए जिसमें भारत देश के देशवासी भी बहुत बड़ी संख्या हिस्सा ले ताकि वृक्षारोपण का बहुत बड़ा संकल्प पूरा हो सके इसके साथ भारत देश के अंदर वृक्षारोपण महाकुंभ में सभी राज्यों के मुख्यमंत्री को मिलकर देश हित मैं वृक्षारोपण का हिस्सा होना चाहिए. जिससे हम आने वाले दिनों में हमें प्रदूषणमुक्त शुद्ध हवा और ऑक्सीजन मिल सके जिससे हम विनाश को रोक सकते हैं मेरे प्यारे भाइयों और देशवासियों इस मैसेज को इतना शेयर करो की एक वृक्षारोपण महाकुंभ का आयोजन हो जाए. देशवासियों में इतनी ताकत है की जो संकल्प देश की जनता ले ले उसे कोई नहीं रोक सकता मुझे मेरे देशवासियों पर पूरा भरोसा है यह संकल्प जरूर पूरा होगा.

आशीष सिंह

बैंकों पर विदेशी स्वामित्व के लिए खोले जा रहे दरवाज़े !

(आलेख : प्रभात पटनायक, अनुवादक : राजेंद्र शर्मा)

भारतीय रिजर्व बैंक ने गैर-भारतवासियों या नॉन-रजीडेंट्स के लिए, किसी भारतीय बैंक की हिस्सा पूंजी के स्वामित्व पर 15 फीसद की सीमा लगायी है। यह सीमा विशेष मामलों में बढ़ भी सकती है, लेकिन अब तक देश के कानून में यह सीमा बनी हुई है। इसके बावजूद, २018 में कनाडियाई कंपनी, फेयरफैक्स की मॉरीशस आधारित होल्डिंग कंपनी को, केरल की कैथोलिक सीरियन बैंक की 51 फीसद हिस्सेदारी (equity) खरीदने की इजाजत दे दी गयी।

बहरहाल, न तो केंद्र सरकार और ना ही रिजर्व बैंक ने इसका स्पष्टीकरण दिया है कि क्यों २018 में 15 फीसद की उक्त सीमा का उल्लंघन किया गया, जबकि 1994 में (जो नव-उदारवाद के दौर में ही आता था) थाईलैंड आधारित एसएस चाऊवाला ग्रुप द्वारा उसी बैंक की 34 फीसद हिस्सा पूंजी पर नियंत्रण हासिल करने की कोशिश को, बिल्कुल उचित ही ठुकरा दिया गया था।

गुपचुप तरीके से विदेशी स्वामित्व की इजाज़त

इतना ही नहीं, इसकी खबरें हैं कि आईडीबीआई बैंक को भी एक विदेशी-मिल्कियत वाली निजी कंपनी को बेचने के कदम उठाए जा रहे हैं। हालांकि यह बैंक एक सार्वजनिक क्षेत्र बैंक की श्रेणी में नहीं आता है, सरकारी स्वामित्व वाले भारतीय जीवन बीमा निगम के पास २019 से इस बैंक की हिस्सा पूंजी के बहुमत की मिल्कियत है। इस तरह, दावे चाहे जो भी किए जा रहे हों, ऐसा लगता है कि विदेशी खिलाड़ियों को भारतीय बैंकों का नियंत्रण अपने हाथ में लेने की इजाजत देने की दिशा में, चुपचाप एक बदलाव हो रहा है। ऐसा क्यों हो रहा है, यह कभी स्पष्ट नहीं किया जाता है। यहां तक कि इस तरह के बड़े नीतिगत बदलावों के पक्ष में आम तौर पर जो दलील दी जाती है कि यह विदेशी वित्त को आकर्षित करने का तरीका है, वह दलील भी इस मामले में नहीं दी गयी है। जाहिर है कि वर्तमान मामले में यह दलील छानबीन के सामने टिक नहीं सकती थी। विदेशी खिलाड़ी द्वारा खरीदी के चलते आने वाला वित्तीय प्रवाह बहुत ही थोड़ा है।

फेयरफैक्स ने कैथोलिक सीरियन बैंक की मिल्कियत कुल 1,२00 करोड़ रुपये की रकम में हासिल कर ली है, जिसमें से करीब 59२ करोड़ रुपये तो उसने हिस्सा पूंजी का सिर्फ 9.7२ फीसद बेचकर, २0२4 के जून तक ही निकाल भी लिए थे। और जहां तक इस दलील का सवाल है कि बैंकों के विदेशी स्वामित्व से ऐसा माहौल बनता है, जो वित्त के प्रवाह के लिए अनुकूल होता है, यह पूरी तरह से खोखली दलील है। आखिरकार, भारतीय रिजर्व बैंक की 15 फीसद की सीमा के कड़ाई से लागू किए जाने ने, पहले तो वित्तीय प्रवाहों को नहीं रोका था।

और अगर इस समय वित्तीय अंत:प्रवाहों की जगह, बहिर्प्रवाहों का सिलसिला चल रहा है, इसके कारण कहीं और ही हैं। मिसाल के तौर पर ट्रंप के टैरिफ में और इन कारणों को चंद बैंकों के स्वामित्व को बेचने के जरिए दूर नहीं जा सकता है। तब गुपचुप तरीके से बैंकों पर विदेशी स्वामित्व की इजाजत क्यों दी जा रही है, जबकि यह बात व्यापक रूप से स्वीकार की जाती है कि इसके निहितार्थ अर्थव्यवस्था के लिए बहुत की नुकसानदेह होंगे। वर्ना 15 फीसद की अधिकतम सीमा लगायी ही नहीं गयी होती।

सट्टाबाजारी को बढ़ावा देने का रास्ता

बेशक, कोई यह दलील दे सकता है कि बैंकों की हिस्सा पूंजी के विदेशी स्वामित्व मात्र के नुकसानदेह प्रभावों को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर देखा जाता है। भारतीय बैंकों द्वारा विदेशी परिसंपत्तियों के रखे जाने के संबंध में भारतीय रिजर्व बैंक के नियम हैं, जो आम तौर पर इस तरह की होल्डिंग को सीमित करते हैं और जब तक इन नियमों का पालन होता है, इससे खास फर्क नहीं पड़ता है कि बैंक का स्वामित्व किस के हाथों में है।

बहरहाल, अगर हम इस दलील को सच मान भी लें, तब भी इससे इस सवाल का जवाब नहीं मिलता है कि किसी भारतीय बैंक को विदेशी नियंत्रण में दिए जाने की जरूरत ही क्या है ?

और यह दलील तो पूरी तरह से झूठी ही है कि विदेशी स्वामित्व आने से, बैंक के प्रबंधन में सुधार आएगा। वास्तव में विदेशी नियंत्रण तो, जैसा कि कैथोलिक सीरियन बैंक का उदाहरण दिखाता है, छोटे ऋण-ग्राहकों के लिए, जिनके प्राथमिकता क्षेत्र ऋण योजना का लाभार्थी होने की अपेक्षा की जाती है, ऋणों का प्रवाह बंद कर देता है और शीर्ष प्रबंधन के भुगतान बहुत बढ़ा देता है।

इसके अलावा, बैंकों का विदेशी स्वामित्व खास इसका औजार बन जाता है कि भारतीय बैंकों के पास विदेशी परिसंपत्तियों की होल्डिंग पर, वर्तमान अंकुशों को हटाया जाना चाहिए। इस तरह के अंकुशों का हटाया जाना, विदेशी परिसंपत्तियों की होल्डिंग को बढ़ाने के जरिए, विदेशी स्वामित्व वाले बैंकों को इसमें भी समर्थ बनाएगा कि सट्टेबाजाराना गतिविधियों का वित्त पोषण करने में और ज्यादा संलिप्त हो जाएं।

इस तरह की गतिविधियां ज्यादा जोखिम भरी होती हैं और इसलिए एक प्रत्याशा के रूप में औसतन ज्यादा मुनाफादेह होती हैं। जब तक चीजें अनुकूल रहती हैं और सट्टाबाजारी से अच्छी कमाई होती है, इस तरह की गतिविधियों में संलिप्त रहने वाले बैंक तगड़ा मुनाफा कमाते हैं, लेकिन इसमें से एक पैसा भी बैंक के जमाकर्ताओं के हिस्से में नहीं आता है। लेकिन, जब सट्टाबाजार के मुनाफे बंदे हो जाते हैं और बैंकों को घाटे का और यहां तक कि दीवालियापन का भी सामना करना पड़ जाता है, उनके जमाकर्ताओं की जमाराशियां ही मारे जाने का खतरा पैदा हो जाता है। इसलिए, आम जमाकर्ताओं के नजरिए से तो सट्टेबाजाराना गतिविधियों का वित्त पोषण करने वाला बैंक, गैर-सट्टेबाजाराना ऋण देने में लगे बैंक के मुकाबले कहीं खराब होता है। इसलिए, बैंकों पर विदेशी स्वामित्व, भारतीय रिजर्व बैंक पर इसके लिए दबाव डालने के जरिए कि उनकी विदेशी परिसंपत्तियों की होल्डिंग पर लगे अंकुशों को उठा ले, भारतीय जमाकर्ताओं को भी सट्टेबाजार के खतरों के सामने खड़ा कर देता है, जबकि इस सट्टाबाजारी से इन जमाकर्ताओं को फायदा कुछ भी नहीं है, सिर्फ नुकसान ही नुकसान है।

साम्राज्यवादी रणनीति के तकाजे

यह सिर्फ कोरी अटकलबाजी का मामला नहीं है। २008 में जब अमेरिका में आवासन का "बुलबुला" फूटा था, सभी बड़े महानगरीय पूंजीवादी देशों के बैंक, प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से, उस बुलबुले का वित्त पोषण करने से जुड़े पाए गए थे और इसके चलते, उनके ऊपर बड़ी मात्रा में "जहरीली परिसंपत्तियों" यानी ऐसी परिसंपत्तियों का बोझ आ पड़ा था, जो रद्दी हो चुकी थीं। तब इन बैंकों को लंबे-चौड़े सरकारी बेल आउटों की मदद से इस गड्ढे से निकालना पड़ा था। लेकिन, इस तरह के बेल आउट के बावजूद, जमाकर्ताओं को तो भारी नुकसान की मार झेलनी ही पड़ी थी।

भारत ही ऐसा अकेला देश था, जिसकी वित्तीय व्यवस्था इस आवासन बुलबुले के फूटने की मार से अछूती बनी रही थी। इसकी वजह यह थी कि भारतीय बैंकों की बैलेंस शीटों में विदेशी परिसंपत्तियों की मात्रा बहुत ही थोड़ी थी और इन विदेशी परिसंपत्तियों में जहरीली परिसंपत्तियों की मात्रा तो और भी थोड़ी थी। सिर्फ आईसीसीआई बैंक के पास ही कुछ विदेशी परिसंपत्तियां और यहां तक कुछ जहरीली परिसंपत्तियां भी थीं, जबकि सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक इस मामले में पूरी तरह से स्वच्छ थे। अगर भारतीय बैंकों पर विदेशी स्वामित्व की इजाजत दी जाती है तो, शायद भविष्य में पहले जैसी स्थिति में नहीं रहे और भारतीय वित्तीय व्यवस्था अपनी पहले जैसी स्वस्थता का प्रदर्शन शायद नहीं कर पाए।

बहरहाल, बैंकों पर विदेशी स्वामित्व की इजाजत देना वह दिशा है, जिसमें नव-उदारवाद भारत को धकेलना चाहेगा। ऐसा सिर्फ इसलिए नहीं है कि नव-उदारवाद तो तमाम सरकारी पाबंदियों का विरोध करता है (खासतौर पर तीसरी दुनिया की सरकारों की ऐसी पाबंदियों का), जैसे विदेशी हिस्सा पूंजी स्वामित्व पर 15 फीसद की सीमा। इसकी वजह यह भी है कि भारतीय बैंकों का विदेशी स्वामित्व, साम्राज्यवाद को भारतीय अर्थव्यवस्था के बरक्स एक बढ़त मुहैया कराता और हमें याद रखना चाहिए कि नव-उदारवाद एक साम्राज्यवादी रणनीति है। बैंक के विदेशी मालिक की पीठ पर विदेशी राज्य का हाथ होगा, जबकि बैंक के भारतीय राज्य की पीठ पर ऐसा हाथ नहीं होगा।

बैंक राष्ट्रीयकरण के लक्ष्यों को कमज़ोर किया गया

नियंत्रणात्मक दौर में भारतीय वित्तीय क्षेत्र ने, इससे पहले के दौर की तुलना में जो प्रगतियां दर्ज करायी थीं, उन्हें नव-उदारवाद पहले ही उल्लेखनीय तरीके से पलट चुका है। मिसाल के तौर पर प्राथमिकता वाले क्षेत्र के लिए ऋण दिए जाने के नियम भले ही अब भी बने हुए हैं और उन्हें खत्म नहीं किया गया है, फिर भी प्राथमिकता वाले क्षेत्र की परिभाषा को अब इतना ज्यादा फैला दिया गया है कि किसान, छोटे उत्पादक, छोटे कारोबारी तथा हाशियावर्ती तबके, जिनके लिए ऋण सुनिश्चित करने के लिए ये नियम बनाए गए थे, उन्हें तो बहुत हद तक संस्थागत वित्त के दायरे से बाहर ही धकेला जा चुका है।

जैसा कि आल इंडिया डेमोक्रेटिक वीमेंस एसोसिएशन का एक अध्ययन दिखाता है, नॉन बैंकिंग फाइनेंशियल कंपनियों तथा माइक्रो फाइनेंस संस्थाओं को बैंकों से ज्यादा से ज्यादा 10 फीसद ब्याज पर ऋण मिलता है और ये संस्थाएं गरीब महिला ऋणग्राहकों को २6 फीसद की ब्याज दर इस तरह से कर्ज देती हैं, जिससे औपनिवेशिक दौर के पुराने ग्रामीण महाजनों के दौर की याद ताजा हो जाती है। ये महाजन अक्सर अपने सूदखोरी के कर्ज देने के लिए, बैंकों के वित्त का ही सहारा लेते थे। इतना ही नहीं, अब नॉन बैंकिंग फाइनेंस कंपनियों तथा माइक्रो फाइनेंस इंस्टीट्यूशनों के लिए बैंकों के ऋणों को, प्राथमिकता वाले क्षेत्र के लिए उनके ऋण प्रदान करने के हिस्से के तौर पर गिना जाता है। बैंकों के राष्ट्रीयकरण का बुनियादी लक्ष्य, अन्य चीजों के अलावा यह था कि बैंकों के ऋण सीधे कृषि, लघु उद्योग तथा छोटे कारोबार जैसे क्षेत्रों में, सीमंत ऋण-ग्राहकों को, सभी बिचौलियों को बरतरफ करते हुए, सीधे-सीधे उपलब्ध कराए जाएं। इस लक्ष्य को कमजोर कर दिया गया है।

दूसरी ओर समूची बैंकिंग व्यवस्था को, जिसमें सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक भी शामिल हैं, बड़े कारोबारों का मातहत बना दिया गया है, जबकि बैंक राष्ट्रीयकरण के पीछे तो यही विचार था कि इस गठबंधन को तोड़ा जाए और ऋण के वितरण पर एक सामाजिक नियंत्रण स्थापित किया जाए।

बड़े कारोबारी न सिर्फ ज्यादातर बैंक ऋण हथिया लेते हैं बल्कि ऋण चुकाने के मामले में बड़ी निश्चिंतता से डिफाल्ट भी करते हैं। दूसरे शब्दों में इस मामले में भी, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की मौजूदगी के बावजूद (हालांकि इन दिनों इन बैंकों की भी पहचान इनमें सरकारी हिस्सा पूंजी के गिरते हुए हिस्से से ही होती है), पुराने वक्त के जैसे हालात फिर से बनाए जा रहे हैं, जहां इजारेदार घरानों का बैंकों के साथ घनिष्ठ गठजोड़ था और वास्तव में हरेक इजारेदार घराने के पास उसका अपना ही बैंक था। पुन:, ऋण के वितरण पर सामाजिक नियंत्रण की संकल्पना से, दूर हटा जा रहा है।

भारतीय बैंकों पर विदेशी मिल्कियत से, बैंक राष्ट्रीयकरण के लक्ष्यों से दूर हटे जाने को और वेग मिलेगा। सीमावर्ती ऋण-ग्राहकों को, बैंक ऋण तक सीधे पहुंच से और दूर धकेल दिया जाएगा। बड़े कारोबारों को, बैंक ऋणों से और ज्यादा पोसा जाएगा। और इस सब के ऊपर से अब, बैंक ऋणों का प्रवाह, विदेशी परिसंपत्तियों और सट्टेबाजाराना गतिविधियों की ओर मुड़ जाएगा। इस समय सत्ता में बैठे फासीवादी तत्वों से हम इससे बेहतर की उम्मीद भी तो नहीं कर सकते हैं, पर इसका कड़ाई से प्रतिरोध किए जाने की जरूरत है।

(लेखक दिल्ली स्थित जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय के आर्थिक अध्ययन एवं योजना केंद्र में प्रोफ़ेसर एमेरिटस हैं।)

करोड़ों की स्मार्ट रोड पर ट्रैफिक सिग्नल ठप

नागरिकों में दुर्घटना की चिंता बढ़ी

परिवहन विशेष न्यूज

स्मार्ट सिटी योजना के तहत करोड़ों रुपये की लागत से तैयार की गई पद्मश्री पंडित श्यामलाल चतुर्वेदी स्मार्ट रोड (नेहरू नगर से नर्मदा नगर मार्ग) पर लगाया गया ट्रैफिक सिग्नल महीनों से बंद पड़ा है। शहर के व्यस्ततम मार्गों में शामिल इस सड़क पर लगातार वाहनों की आवाजाही रहती है, लेकिन ट्रैफिक सिग्नल व्यवस्था ठप होने के कारण वाहन चालकों और स्थानीय निवासियों की सुरक्षा पर गंभीर खतरा मंडरा रहा है। बिलासपुर स्मार्ट सिटी मिशन के तहत इस मार्ग को शहर की पहली मॉडल स्मार्ट रोड के रूप में विकसित किया गया था।

सड़क के दोनों ओर स्ट्रीट लाइट, पाथवे और ट्रैफिक सिग्नल जैसी आधुनिक सुविधाओं का निर्माण किया गया। उद्देश्य था कि इस रोड को स्मार्ट रोड के रूप में विकसित कर शहर में बेहतर यातायात व्यवस्था सुनिश्चित की जा सके और नागरिकों को सुविधा मिले। लेकिन स्थानीय नागरिकों के अनुसार, ट्रैफिक सिग्नल कई महीनों से काम नहीं कर रहे हैं। वहीं कुछ कदम की दूरी पर एक और सिग्नल पॉइंट के लिए खंभा तो लगाया गया है, लेकिन वहां अभी तक लाइटें नहीं लगाई गई हैं। इससे सड़क पर आने-जाने वाले वाहन चालकों के लिए भ्रम की स्थिति बनती है और दुर्घटना की संभावना बढ़ जाती है।

करोड़ों की लागत पर अव्यवस्था स्थानीय लोगों ने बताया कि इस चौराहे पर चारों दिशाओं से भारी वाहनों का दबाव रहता है। पीक ऑवर के समय स्कूल बसें, ऑटो, बाइक और कारें एक साथ गुजरती हैं। ट्रैफिक पुलिस के जवानों की स्थाई तैनाती नहीं होने के कारण कोई भी वाहनों की गति और मार्ग का नियंत्रण नहीं कर पा रहा है। कई बार छोटी-मोटी दुर्घटनाएं हो चुकी हैं, लेकिन अब तक किसी जिम्मेदार अधिकारी का ध्यान नहीं गया। क्षेत्रवासियों का कहना है कि स्मार्ट सिटी परियोजना का उद्देश्य शहर में बेहतर यातायात व्यवस्था और नागरिकों की सुविधा सुनिश्चित करना था। हालांकि, वास्तविकता इसके उलट दिखाई दे रही है। लोग चिंतित हैं कि जब तक ट्रैफिक सिग्नल और स्थाई चौक व्यवस्था नहीं बनेगी, तब तक किसी बड़े हादसे से इनकार नहीं किया जा सकता।

क्षेत्रवासियों ने उठाई आवाज नेहरू नगर, नर्मदा नगर और आसपास के इलाकों के निवासियों ने प्रशासन से मांग की है कि बंद पड़े ट्रैफिक सिग्नल को तत्काल चालू किया जाए। जहां सिग्नल लगाने के लिए खंभा लगाया गया है, वहां अस्थाई चौक बनाकर स्टॉपर लगाए जाएं। ट्रैफिक व्यवस्था सुचारू रखने के लिए ट्रैफिक पुलिस के जवानों की स्थाई तैनाती की जाए। स्थानीय नागरिकों का कहना है कि शहर में तेजी से बढ़ते वाहनों के दबाव को देखते हुए यह कदम जरूरी है। उन्होंने यह भी कहा कि स्मार्ट रोड की पहचान ही स्मार्ट ट्रैफिक सिस्टम से थी, लेकिन फिलहाल यह नाम के लिए ही "स्मार्ट" रह गई है।

दुर्घटना की आशंका बढ़ी स्थानीय लोगों का कहना है कि लगातार बढ़ते यातायात और सिग्नल बंद होने के कारण दुर्घटना की आशंका बनी रहती है। स्मार्ट रोड पर कई बार स्कूली बच्चे और बुजुर्ग वाहन चालकों के बीच फंस जाते हैं। रोजमर्रा के वाहन चालकों का कहना है कि जब तक यहां स्थाई चौक और सिग्नल दोनों सक्रिय नहीं होंगे, तब तक किसी बड़े हादसे की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता। स्थानीय जनप्रतिनिधियों ने भी इस मामले में गंभीर चिंता व्यक्त की है। उनका कहना है कि स्मार्ट सिटी की साख बनाए रखने के लिए इस तरह की लापरवाहियों पर तुरंत संज्ञान लिया जाना चाहिए। यदि समय रहते सुधार नहीं किया गया, तो सड़क पर बड़े हादसों की संभावना बढ़ सकती है।

प्रशासन का पक्ष हालांकि बिलासपुर यातायात पुलिस का दावा है कि यहां लगाया गया ट्रैफिक सिग्नल व्यवहारिक साबित नहीं हुआ। उनके अनुसार इस सिग्नल की वजह से ट्रैफिक बाधित हो रहा था, इसलिए इसे बंद रखने का निर्णय लिया गया। भविष्य में जरूरत पड़ने पर इसे पुनः चालू किया जाएगा। यातायात पुलिस के अनुसार, शहर में नए ट्रैफिक सिग्नल लगाने की प्रक्रिया और स्थाई चौक व्यवस्था पर कार्य प्रगति पर है। लेकिन स्थानीय नागरिकों का कहना है कि यह इंतजार बहुत लंबा हो गया है, और जब तक रोड पर अस्थाई या स्थाई व्यवस्था नहीं होती, तब तक सड़क सुरक्षित नहीं मानी जा सकती।

घाटशिला विधानसभा उप चुनाव में तीन नामांक रद्द, सत्रह बचे अब मैदान में

मुख्य लड़ाई जेएमएम – भाजपा के बीच ,निर्णायक भूमिका में जेऐलकेएम

कार्तिक कुमार परिच्छा,स्टेट हेड - झारखंड

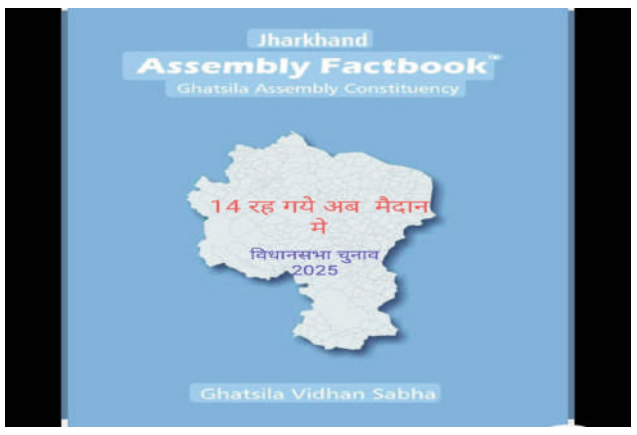

जमशेदपुर। घाटशिला विधानसभा के होने वाले विधानसभा उपचुनाव उपचुनाव में तीन नामांकन पत्रों को रद्द कर दिया गया है. बुधवार को नामांकन पत्रों की जांच की गयी, जिसके बाद गलत नामांकन भरने के लिए तीन लोगों का नामांकन को रद्द कर दिया गया. इस तरह सत्रह नामांकन में से तीन रद्द होने के बाद अब कुल चौदह लोगों का नामांकन ही बचा हुआ है.

जिनका नामांकन रद्द किया गया, उसमें राष्ट्रीय सनातन पार्टी के मंगल मुर्मू, आपकी विकास पार्टी के दुखीराम मांडी और निर्दलीय मालती टुडू शामिल है. इस तरह अब 14 लोग चुनावी मैदान में है. 24 अक्टूबर को नामांकन वापसी की अंतिम तारीख है. नामांकन वापसी अगर कोई लेता है तो फिर प्रत्याशी घटेंगे नहीं तो कुल 14 लोग ही नामांकन कर सकेंगे.

1. परमेश्वर टुडू, निर्दलीय ,2. श्रीलाल किस्कू, निर्दलीय3. बाबूलाल सोरेन, भाजपा4. सोमेश चंद्र सोरेन, झामुमो,5. पार्वती हांसदा, पीपुल्स पार्टी ऑफ इंडिया(डेमोक्रेटिक),6. मनसा राम हांसदा, निर्दलीय प्रत्याशी,7. नारायण सिंह, निर्दलीय प्रत्याशी8. विकास हेम्ब्रम, निर्दलीय,9. पंचानन सोरेन, भारत आदिवासी पार्टी एबीपी,10. बसंत कुमार तोपनो, निर्दलीय,11. रामदास मुर्मू, जेएलकेएम12. मनोज कुमार सिंह, निर्दलीय13. विक्रम किस्कु, निर्दलीय,14. रामकृष्ण कांति माहली, निर्दलीय।

24 से 26 अक्तूबर तक चौथी सेफ सीनियर ऐथलेटिक्स चैम्पियनशिप रांची में

झारखंड में इस प्रतियोगिता का मेजबानी गर्व की बात : हेमंत सोरेन

रांची, मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन से बुधवार को आवासीय कार्यालय में पर्यटन, कला, संस्कृति, खेल और युवा मामले विभाग के मंत्री सुदिव्य कुमार, सचिव मनोज कुमार, खेल निदेशक शेखर जमुआर एवं झारखंड ओलंपिक एसोसिएशन के महासचिव मधुकांत पाठक ने शिष्टाचार भेंट की। इस अवसर पर उन्होंने मुख्यमंत्री को 24 से 26 अक्टूबर तक राजधानी रांची के मोरहाबादी स्थित बिरसा मुंडा फुटबॉल स्टेडियम में आयोजित होने वाली चौथी साउथ एशियन एथलेटिक्स फेडरेशन (सैफ) सीनियर एथलेटिक्स चैंपियनशिप के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होने के लिए आमंत्रण पत्र सौंपा। उद्घाटन समारोह 24 अक्टूबर को संध्या 6 बजे से आयोजित होगा। खेल मंत्री ने रांची में आयोजित हो रहे सैफ सीनियर एथलेटिक्स प्रतियोगिता की तैयारियों से संबंधित जानकारी से मुख्यमंत्री को अवगत कराया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि झारखंड लगातार राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर की विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं की मेजबानी करता आ रहा है । इसी कड़ी में एक बार फिर अंतरराष्ट्रीय एथलेटिक्स प्रतियोगिता का रांची में आयोजित होना पूरे झारखंड के लिए गर्व की बात है। इसका भव्य, शानदार और सफल आयोजन हो ताकि खेलों के क्षेत्र में हमारे राज्य की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक अलग पहचान स्थापित हो।

सड़क वसूली में 11 पुलिसकर्मी सस्पेंड

परिवहन विशेष न्यूज

उत्तर प्रदेश में सड़क पर वाहनों से अवैध वसूली के मामलों में यूपी पुलिस ने बड़ा एक्शन लिया है। राज्य के पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) राजीव कृष्ण ने बांदा, चित्रकूट और कौशांबी जिलों के कुल 11 पुलिसकर्मियों को निलंबित कर दिया है। इसमें तीन थानेदार, एक महिला उपनिरीक्षक, चार उपनिरीक्षक और पांच आरक्षी शामिल हैं। डीजीपी ने स्पष्ट किया कि भ्रष्टाचार और अवैध वसूली के मामलों पर विभाग की जीरो टॉलरेंस नीति के तहत सख्त कार्रवाई जारी रहेगी। डीजीपी कार्यालय से जारी आदेश के अनुसार, सबसे बड़ी कार्रवाई चित्रकूट जिले में हुई है। यहां तीन थानेदारों को निलंबित किया गया है। इसमें भरतकूप के इंस्पेक्टर, पहाड़ी थानाध्यक्ष और राजापुर थानाध्यक्ष शामिल हैं। इनके साथ एक सब-इंस्पेक्टर और तीन सिपाही को भी निलंबित किया गया है। बांदा जिले में बदौसा थाना प्रभारी और एक आरक्षी, जबकि कौशांबी जिले के महेवाघाट थाने के एसओ और एक सिपाही पर भी कार्रवाई की गई। इस तरह कुल 11 पुलिसकर्मियों को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया गया है।

डीजीपी राजीव कृष्ण ने कहा कि सड़क पर वाहनों से अवैध वसूली करने वाले किसी भी पुलिसकर्मी को बख्शा नहीं जाएगा। उन्होंने यह भी कहा कि इस प्रकार की घटनाएं पुलिस विभाग की छवि को प्रभावित करती हैं और आम जनता का विश्वास कमजोर करती हैं। इसके खिलाफ सख्त कार्रवाई के रूप में निलंबन की कार्रवाई की गई है। जानकारी के अनुसार, इन पुलिसकर्मियों द्वारा विभिन्न इलाकों में वाहन चालकों से अवैध वसूली की जाती थी। ऐसे मामलों की जानकारी मिलते ही डीजीपी ने व्यक्तिगत जांच और टीम स्तर पर समीक्षा कर कार्रवाई की। उन्होंने निर्देश दिए कि सभी जिलों के पुलिस अधिकारी अपने अधीनस्थों की गतिविधियों पर कड़ी नजर रखें और ऐसी घटनाओं की रोकथाम के लिए सख्त निगरानी सुनिश्चित करें।

भ्रष्टाचार और वसूली की रोकथाम के लिए डीजीपी ने विभागीय स्तर पर भी कई पहल की हैं। उन्होंने सभी पुलिस अधिकारियों को आदेश दिया कि किसी भी प्रकार की शिकायत मिलने पर तुरंत जांच की जाए और दोषियों को विभागीय कार्रवाई के तहत सजा दी जाए। डीजीपी ने कहा कि अवैध वसूली करने वाले पुलिसकर्मियों की पहचान कर उन्हें कठोर दंड देना आवश्यक है, ताकि जनता में पुलिस के प्रति विश्वास कायम रहे। विशेष रूप से, चित्रकूट जिले में निलंबन की गई टीम में शामिल थानेदार और उपनिरीक्षक पर आरोप हैं कि वे नियमित रूप से सड़क पर वाहनों से वसूली करते थे। बांदा और कौशांबी जिलों में भी इसी प्रकार की शिकायतें सामने आई थीं। इस कार्रवाई से स्पष्ट संदेश गया है कि यूपी पुलिस में भ्रष्टाचार और अवैध वसूली बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

डीजीपी राजीव कृष्ण ने कहा कि भ्रष्टाचार के मामलों पर न केवल तत्काल कार्रवाई की जाएगी बल्कि विभाग में ऐसे मामलों की रोकथाम के लिए निरंतर निगरानी भी की जाएगी। उन्होंने जिलों के सभी पुलिस अधिकारियों को अपने अधीनस्थों की गतिविधियों पर नजर रखने और किसी भी प्रकार की अवैध गतिविधियों की सूचना तुरंत रिपोर्ट करने के निर्देश दिए हैं। इस प्रकार, बांदा, चित्रकूट और कौशांबी जिलों के 11 पुलिसकर्मियों का निलंबन उत्तर प्रदेश पुलिस की भ्रष्टाचार और अवैध वसूली के खिलाफ जीरो टॉलरेंस नीति का प्रमाण है। डीजीपी राजीव कृष्ण ने स्पष्ट किया है कि भविष्य में भी इस तरह की घटनाओं में शामिल किसी भी पुलिसकर्मी को बख्शा नहीं जाएगा और विभाग की छवि को बनाए रखने के लिए कठोर कार्रवाई की जाएगी।

40 वनग्रामों को अभ्यारण से बचाने में झारखंड सरकार नाकाम: भारत आदिवासी पार्टी

डीएमएफटी फंड में भ्रष्टाचार पर जांच की मांग , 11 नवंबर को होगा धरना प्रदर्शन

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

सरायकेला। भारत आदिवासी पार्टी ने हेमंत सरकार पर सारंडा क्षेत्र के वनग्रामों में बसे आदिवासियों की घोर उपेक्षा का आरोप लगाते हुए प चाईबासा में आयोजित संवाददाता सम्मेलन में कहा कि राज्य सरकार सारंडा के 40 से अधिक वनग्रामों को अभयारण्य क्षेत्र से बचाने में पूरी तरह विफल रही है, जिससे वहाँ के निवासियों में विस्थापन की आशंका गहराने लगी है. पार्टी की मांग है कि जिस प्रकार खनन क्षेत्र को अभयारण्य से मुक्त रखा गया है, उसी प्रकार सारंडा के 40 वनग्रामों को भी अभयारण्य क्षेत्र से बाहर रखा जाए.

पार्टी के जिला उपाध्यक्ष तुरी सुंडी ने जिला खनिज फाउंडेशन ट्रस्ट मद में भारी भ्रष्टाचार व्याप्त होने का गंभीर आरोप लगाया. सुंडी ने डीएमएफटी कोष की उच्च स्तरीय जांच की मांग की . बताया गया कि भारत आदिवासी पार्टी आगामी 11 नवंबर को जिला मुख्यालय में एक एकदिवसीय धरना-प्रदर्शन करेगी. प्रेस कॉन्फ्रेंस में जिला सचिव शांतिएल कांद्याबुरू, चंद्रशेखर मुंडा, मोरन सिंह देवगम, सनातन सवैया और हरिश बालमुचु उपस्थित थे।

सेक्स रैकेट में शामिल ग्राहक एचआईवी संक्रमित!

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : भुवनेश्वर में झारखंड की एक नाबालिग लड़की से बलात्कार के मामले में एक और नया मोड़ आया है। क्राइम ब्रांच ने सेक्स रैकेट पर कार्रवाई के दौरान एक बड़ी घटना का खुलासा किया है। लक्ष्मीसागर स्थित जिस घर में सेक्स रैकेट चल रहा था, वहाँ आने वाले लगभग सभी ग्राहकों के एचआईवी संक्रमित होने का संदेह है।वहाँ के लगभग 27 नियमित ग्राहकों के एचआईवी संक्रमित होने का संदेह है। कैपिटल पुलिस स्टेशन द्वारा पकड़े गए एक आरोपी के पॉजिटिव पाए जाने के बाद तनाव शुरू हो गया है। और वहाँ नियमित रूप से आने वाले ग्राहकों में भी डर का माहौल है।

जिस घर में सेक्स रैकेट चल रहा था, वहाँ से एड्स की दवा बरामद की गई है। जिसकी तलाश भी शुरू कर दी गई है। यह भी पता चला है कि यह दवा कोलकाता से खरीदी गई थी। लक्ष्मी सागर सेक्स रैकेट में एक एचआईवी मरीज के होने का संदेह था। लेकिन अब तक पुलिस सेक्स रैकेट के मैनेजर बारीक बाबू को नहीं पकड़ पाई है।

दूसरी ओर, घटना की गंभीरता को देखते हुए पुलिस ने इसे खतरे की घंटी मान लिया है। यानी पुलिस तीन महीने के भीतर बलात्कार मामले की चार्जशीट अदालत में पेश करेगी। महिला अपराध शाखा (सीएडब्ल्यू) के तीन अधिकारी जाँच में शामिल हो गए हैं।

पितावास हत्याकांड: 12 गिरफ्तार

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

बरमहपुर /भूबनेश्वर: विधायक पितावास पांडा हत्याकांड में बरमहपुर एसपी ने बड़ा खुलासा किया है। पितावास की हत्या का सौदा हुआ था। पहले हत्यारे को 10 लाख रुपये दिए गए। हत्या के बाद 40 लाख रुपये और देने का सौदा हुआ। इसी आधार पर सांपों को मारने वाला शूटर बिहार से ओडिशा आया। सांपों को मारने वाले शूटर ने 10 लाख रुपये एडवांस लिए। चिंटू प्रधान गाड़ी चला रहा था। कुरुपती भुइयां ने गोली मारी। हत्यारे ने नया शॉर्ट्स पहनकर हत्या की। इससे पहले भी उसकी हत्या की 3 कोशिशें हो चुकी थीं। सभी लोग विक्रम पांडा के सहयोगी बताए जा रहे हैं। दोनों बार काउंसिल चुनाव के दौरान दोस्त थे। मलय बिसोय, मदन दलाई, विक्रम पांडा और पिंटू दास ने पूरी साजिश रची। विक्रम पांडा ने मलय बिसोय और मदन दलाई के ज़रिए साजिश रची। विक्रम पांडा और पिंटू दास से 50 लाख लाने की व्यवस्था थी। बरहामपुर एसपी ने कहा कि उमा बिसोयी के पास सौदे का सारा पैसा है। पिंटू दास के नाम पर 38 मामले हैं। विक्रम पांडा के नाम पर आपराधिक साजिश के सबूत मिले हैं। पुलिस ने विक्रम पांडा सहित 12 लोगों को गिरफ्तार किया है। इस घटना में पूर्व विधायक विक्रम पांडा, पूर्व मेयर शिव शंकर दास उर्फ पिंटू को गिरफ्तार किया गया है। पार्षद मलय बिसोयी को भी गिरफ्तार किया गया है। विक्रम के करीबी मदन दलाई को गिरफ्तार किया गया है। कुरुपती भुइयां, सुदर्शन जेना, चिंटू प्रधान, शिशु कुमार पासवान, कुंदन कुमार, बिपिन स्वैन, योगी दत्त, उमा बिसोयी, शिमचल नाहक, जोगेंद्र राउत, राजेंद्र कुमार साहू को गिरफ्तार किया गया है। 15 लोग शामिल हैं। 12 लोगों को गिरफ्तार किया गया है और 3 राज्य छोड़कर भाग गए हैं। पुलिस आरोपियों की गिरफ्तारी का प्रयास कर रही है। आज सुबह पुलिस विक्रम पांडा को एक वैन में बरहामपुर कोर्ट ले आई इस पर नजर रखी जा रही है कि अदालत क्या फैसला सुनाती है।

घटकेसर में अन्नोजीगुडा स्थित में गोवर्धन के पावन अवसर पर पूजा-अर्चनाकर के अवसर पर उपस्थित महिलाओं ने कंचन देवी काग, पुष्पा देवी, अनीता देवी, गीता देवी, सीमा देवी, ममता देवी, रेखा ,सुनकी देवी, ज्ञानी देवी, गेरी देवी, लक्ष्मी देवी व प्रवासी महिलाएं।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023